मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्ष:3 । अंक:12 । पृष्ठ:57 । मूल्य:नि:शुल्क । इंदौर–उज्जैन । शनिवार 1 जुलाई 2023 । आषाढ़/श्रावण/अधिमास, विक्रम संवत् 2080 । इ.संस्करण

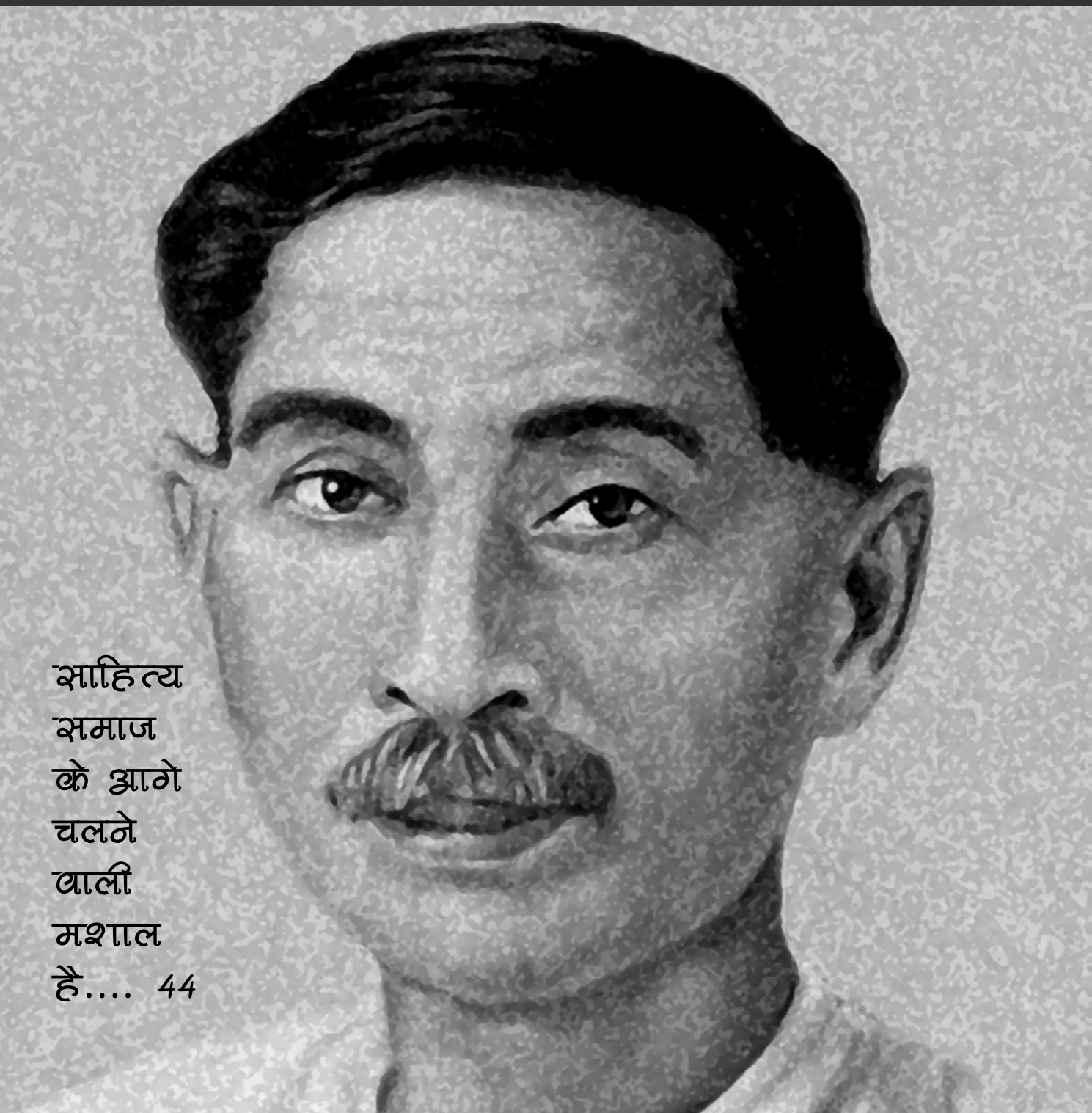

साहित्य समाज के आगे चलने वाली मशाल है.... 44

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र

editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
(हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन
मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)

उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

- गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
- समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	योग का व्याकरण और योग में...	डॉ. सन्तोष खन्ना	05
3	योग दिवस	डॉ. विद्यावती पराशर	08
4	योग विज्ञान एक अद्‌भुत कला	सुजाता प्रसाद	15
5	स्वास्तिक चिह्न की महिमा	डॉ. निशा नंदिनी भारतीय	17
6	प्रभु दर्शन दें सेवक जानी	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	19
7	गुरूअर्चन वंदन का महापर्व	डॉ. अलका शर्मा	20
8	जागरुकता	डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)	22
9	प्रभु मंदिर में आजाओ	शीलेन्द्र कुमार वशिष्ठ	23
10	राष्ट्र के विकास को पंख देती...	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	21
11	स्वतंत्रता संग्राम की ग्रैंड ओल्ड..	आकांक्षा यादव	26
12	वैदिक विमान विज्ञान ऋषि...	डॉ. विदुषी शर्मा	28
13	सुंदरकाण्ड में निहित प्रतीकार्थ...	डॉ. शकुतंला कालरा	30
14	पर्यावरण चिन्तन 6	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	31
15	रहस्यमयी जगन्नाथ मंदिर ...	मधुबाला शांडिल्य	32
16	शोभत राम अँगन बिच कैसे?	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	34
17	1875 की क्रान्ति का प्रथम...	राम शिव मूर्ति यादव	35
18	धर्म	रमेश चन्द्र	37
19	क्रान्तिवीर शिरोमणि चन्द्र शेखर...	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	40
20	लोक व्यवहार के श्रेष्ठ कवि...	भावना दामले	42
21	आज भी समाज को आइना....	कृष्ण कुमार यादव	44
22	बचपन की यादें	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	47
23	रामचरित मानस एवं...	प्रो. विनीत मोहन औदिच्य	48
24	प्रेमचंद	मेघना रॉय	50
25	योग माया पराशक्ति सीता	डॉ. अर्चना प्रकाश	51
26	साहित्य के दर्पण में	डॉ. अजय शुक्ला	53
27	महत चिंतन श्रृंखला	विजय कुमार तिवारी	56
28	कृष्ण मुख से	व्यग्र पाण्डे	57

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश पत्रिका

स्वस्ति पंथामनु चरेम सूर्यचन्दरसविव। पुनर्ददताघृता जानता सं गमेमहि ।। *(ऋग्वेद 5/51/15)*

(हम उस अविनाशी कल्याण मार्ग पर चले जिसपर सूर्य व चंद्र बिना किसी का आश्रय लिए, दुष्टो से रहित पंथ का अनुसरण करते हुए निरंतर अभिमत मार्ग पर चल रहे है। उसी प्रकार हम भी शास्त्रोपदिष्ट अभिमत मार्ग पर चले)

'आध्यात्म संदेश' परिवार के समस्त नीर- क्षीर विवेकी सुधी पाठकों का अभिनंदन, नंदन व वंदन।

सृष्टि के आरम्भ से ही प्रत्यक्ष देव सूर्य व चंद्रमा निर्विवादित रूप से निरंतर प्रतिदिन समस्त संसार को आलोकित करने का कार्य करते आ रहे है । कभी उनके क्रम में कोई त्रुटि दृष्टिपथ में नही आती। अनादि काल से अनवरत चलते आये इस क्रम में समय पर होते दिन-रात, आसमान की गोद मे दमकती मुक्तामणियो जैसे अनगिनत दमकते तारे, समयानुसार ऋतुपरिवर्तन, भिन्न -भिन्न आकार, प्रकार स्वाद अद्भुत मिठास से परिपूर्ण फलो से लदे वृक्ष, विभिन्न रंग रूप, कद काठी के अरबो खरबो मनुष्यो, भूचर, खेचर, जलचर, नभचर, अंडज, उद्भिज आदि सृष्टि के समस्त जीवों का पालनहार, कहीं नदियां तो कहीं हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखला, कहीं गहरे समुंद्र, महासागर तो कहीं अपार वनसम्पदा, तो कहीं तपते रेगिस्तान, कुल मिलाकर प्रकृति के वैविध्य के कारण मन उस असीम सत्ता के ईश्वर के प्रति नतमस्तक हो जाता है -

येन धौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा, ये स्व स्तभितम येन नाकः।
योन्तारिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

उसी ईश्वर से मेरी भी प्रार्थना है - कि मुझमे भी इतनी शक्ति दे कि जो दायित्व मुझे सौंपा गया है उस कर्तव्य का निर्वहण मैं कुशलता पूर्वक अनवरत रूप से कर सकूं।

परिवर्त्तन सृष्टि का नियम है। इसी कारण तपती ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु की दस्तक स्पष्ट सुनाई पड़ रही है। वर्षा की कल्पना मात्र से सभी का मन मयूर नाच उठता है। कुछ महत्व पूर्ण दिनों के आने के कारण जुलाई मास का महत्व द्विगुणित हो उठा है।

1 जुलाई चिकित्सक दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व भर के चिकित्सकों द्वारा की गई प्राणिमात्र की सेवा भावना के प्रति, कृतज्ञता ज्ञापन करने का दिन है।

3 जुलाई गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व है। आषाढ़ मास की गुरु पूर्णिमा को महर्षि वेदव्यास जयंती भी होने के कारण इस पूर्णिमा का महत्व ओर भी बढ़ जाता है भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य की समृद्ध परम्परा में गुरुपूर्णिमा का पर्व अपने समस्त गुरुओं के प्रति सम्मान, श्रद्धा व समपर्ण का भाव व्यक्त करने का है। क्योंकि गुरु ही अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश से

हमारे जीवन को आलोकित करता है। ऐसे हमारे मार्गदर्शक व जीवन पथ प्रदर्शक समस्त गुरुओं को कोटि कोटि नमन-

गुरु गोबिंद दोउ खड़े काके लागू पाय। बलिहारी गुरु आपनो गोबिंद दियो बताय।।

गुरुपूर्णिमा के बाद कालातीत कल्याण कल्पान्त कारी। सदा सचिदानंद दाता पुरारि भोलेनाथ के प्रिय श्रावण मास का आगमन सबको श्रद्धा व भक्ति से इतना सरोबार कर देता है कि सारा वातावरण शिवमय हो जाता है।

6 जुलाई 'विश्व प्लाटिक मुक्त दिवस' सम्पूर्ण विश्व को प्लास्टिक प्रदूषण से उत्पन्न संभावित खतरों से अवगत कराने का दिन है। आकाश वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी इन पंच तत्वों से मिलकर बनी सृष्टि में सुंदर प्रकृति ने हमारे चारों ओर एक सुरक्षा कवच निर्माण किया है

28 जुलाई को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस है इस पावन अवसर पर हमारा भी यह सामूहिक दायित्व है कि हम प्रकृति से छेड़छाड़, या प्रकृति का अनावश्यक दोहन न करके उसके संरक्षण, व संवर्धन के लिए मिलकर प्रयास करे।

'गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन' समाज सेवा, गौ सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, संगठन शक्ति जैसे चिरकाल से अपेक्षित क्षेत्रो में समाज की पथप्रदर्शक बनकर अपना अभूतपूर्व योगदान देने वाली केवल समाजसेवी संस्था न होकर समस्त समाज को अध्यात्म के प्रकाश से आलोकित कर के समाज कल्याण के विभिन्न क्षेत्रों में एकजुट होकर कार्य करके वेदों के मूलमंत्र-

सं गच्छत्वम सं वदध्वम। *(ऋग्वेद)*

(हम सब साथ मिलकर चले साथ मिलकर बोलें)

को परिकल्पना को मानो साकार करती हुई असंख्य लोगो को समाज कल्याण कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाला शंखनाद भी है। इस संस्था से जुड़ना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

भारतीय संस्कृति की इन्द्र धनुषी छटाओ का दिग्दर्शन कराने हेतू सभी सुधी विद्वानों के सुंदर, ज्ञानवर्द्धक, रोचक आलेखों, कहानी कविताओं और वैविध्यपूर्ण प्रस्तुति से आप्लावित आध्यात्म संदेश पत्रिका का जुलाई मास का नवीन अंक मुझे आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। मैं इस अवसर पर सभी गुणी जनों का हृदयतल से धन्यवाद ज्ञापन करना चाहती हूँ, जिनके सुंदर लेखों, अथक प्रयास व मार्गदर्शन के प्रति यह पत्रिका मूर्त रूप ले सकी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के प्रति आप सभी सुधी विद्वत जनों का स्नेह उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगा।

धन्यवाद व आभार सहित

- संपादक

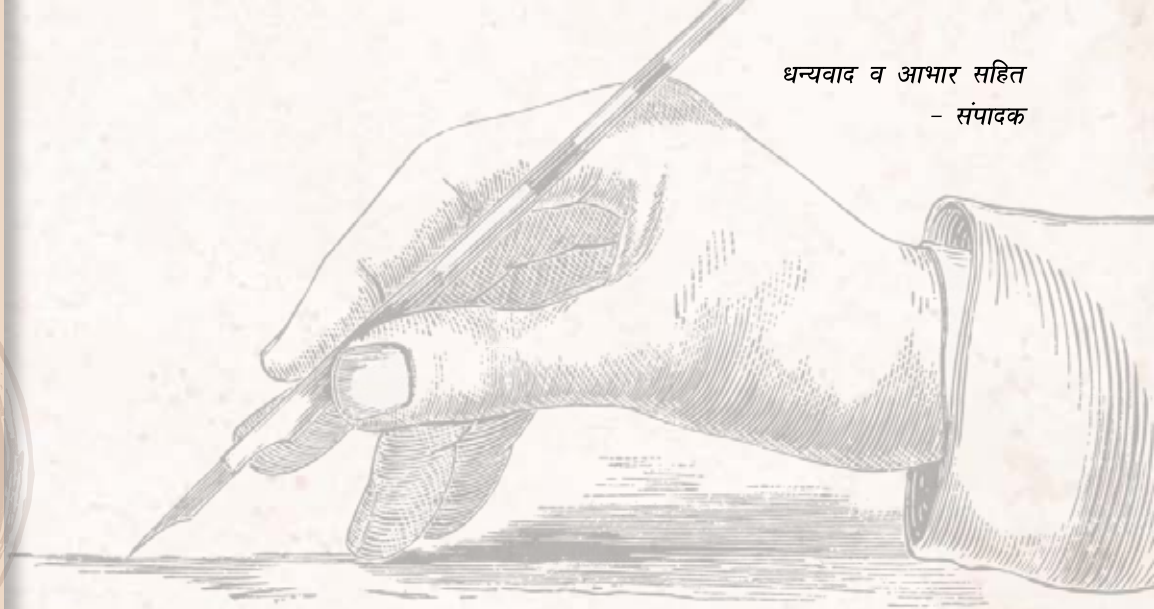

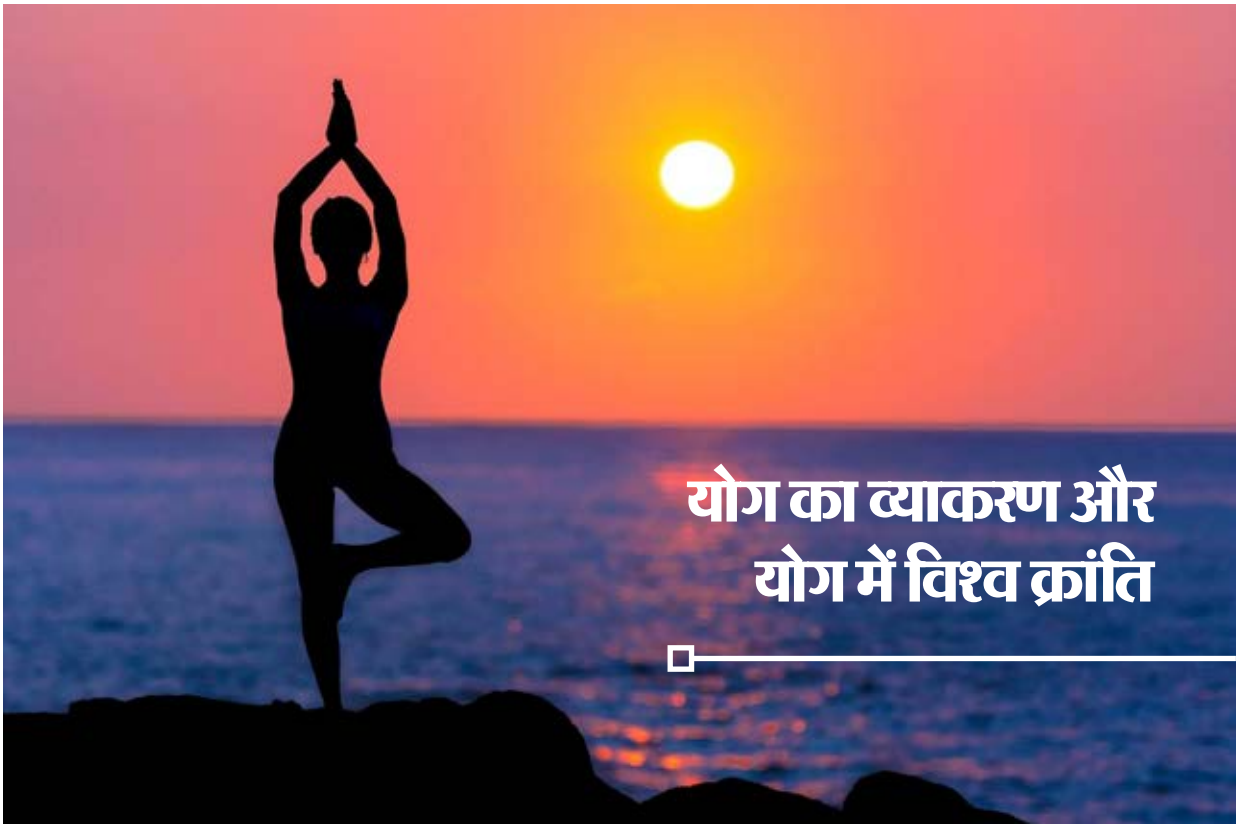

योग का व्याकरण और योग में विश्व क्रांति

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ सम्पादक (अध्यात्म संदेश)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जून, 2023 में अमेरिका की अपनी सरकारी यात्रा के दौरान अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय के परिसर में एक विशाल योग कार्यक्रम में शामिल हो सब के साथ योग किया। भारत के आह्वान पर इस योग कार्यक्रम में विश्व के 183 से अधिक देशों ने एक साथ योग में भागीदारी की। विश्व के इतने महत्वपूर्ण मंच पर इस ऐतिहासिक और अभूतपूर्व योग कार्यक्रम में भिन्न–भिन्न देशों के लगभग आठ हजार से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया, इसलिए इस कार्यक्रम ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया । प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा,

'मुझे बताया गया है कि लगभग हर देश के प्रतिनिधि यहां उपस्थित थे और हम सभी को यहां लाने का एक अद्‌भुत कारण है योग। योग का अर्थ है जोड़ना। योग भारत की विश्व को अद्‌भुत देन है। योग जीवन की एक शैली है। यह स्वयं के साथ, दूसरों के साथ और प्रकृति के साथ सद्‌भाव से जीने का तरीका है।'

वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को आरंभ करवाने का श्रेय भी भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी को ही जाता है। जब मोदी जी वर्ष 2014 में भारत के प्रधानमंत्री बने थे तो उसी वर्ष उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ की अपनी प्रथम यात्रा में संयुक्त राष्ट्र संघ के 69वें सत्र में अपने उद्‌बोधन में यह अनुपम सुझाव दे डाला कि आज के संतप्त विश्व को योग अपनाना चाहिए और उसके लिए योग को समर्पित एक दिन निश्चित किया जाना चाहिए। मोदी जी के इस विश्व कल्याणकारी प्रस्ताव को 11 दिसंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी 193 देशों ने सर्वसम्मति से पारित कर दिया और हर वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की सहमति जताई। तब से वर्ष 2015 से भारत समेत विश्व के सभी देश 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मना रहे हैं।

योग भारत की विश्व को अद्‌भुत देन है। भारत की यह धरोहर कई सदियां पुरानी है। वर्तमान कई संकटों से घिरा विश्व योग के महत्व को बखूबी समझ रहा है। यह स्वस्थ जीवन जीने की कला है। योग एक शास्त्र है। योग विज्ञान है और एक कला भी है। इससे केवल शारीरिक स्वास्थ्य ही प्राप्त नहीं होता अपितु यह मनुष्य के व्यक्तित्व के समग्र विकास का साधन है। योग को अलग–अलग नामों से जाना जाता है। इसे प्राणायाम भी कहते हैं। जहां जिम जाना और अन्य शारीरिक क्रियाओं से शरीर अवश्य स्वस्थ होता है वही योग शरीर के साथ–साथ मन, दिमाग और आत्मा के लिए भी है। कहा जाता है कि योग करने से मांसपेशियां में खिंचाव आता है उससे शरीर की थकान दूर होती है। योग से शरीर में सही रक्त का प्रवाह सुनिश्चित होता है उससे तनाव दूर होता है और मानसिक शांति मिलती है।

योग है क्या? : वर्तमान में आमजन योग को केवल आसन ही मानते हैं क्योंकि मंच पर अथवा धरा पर बैठकर लोग योगासन करते ही नजर आते हैं परंतु योग को केवल योगासन मान लेना योग के एकांगी रूप को मानना होगा। वास्तव में योग में जीवन के कार्य, व्यवहार और आचार व्यवहार सभी आ जाते हैं। योग की संपूर्णता को समझ कर उसको पालन करने पर ही मनुष्य जीवन को लाभ प्राप्त होता है ।आत्मा का परमात्मा से मिलन भी योग है। योग से मनुष्य को मुक्ति भी मिलती है। योग को उसके संपूर्ण रुप में समझने के लिए हमें योग दर्शन के प्रणेता अथवा जनक पतंजलि द्वारा रचित 'योगसूत्र' के बारे में संक्षेप में जान लेना चाहिए। कहा जाता है कि भारत में योग करीब 26 हजार साल पहले से चला आ रहा है। वास्तव में भारतीय संस्कृति या सनातन धर्म में योग का जनक शिव को माना जाता है। शिव ही आदि योगी हैं। महर्षि पतंजलि को आधुनिक योग का जनक माना जाता है। महर्षि पतंजलि ने आज से लगभग 5000 वर्ष पहले जब योग सूत्र के मूल ग्रंथ 'योगसूत्र' की रचना की थी तो उन्होंने इस ग्रंथ में उससे पहले की प्रचलित योग विधियों और विचारों को उसमें संहिताबद्ध कर दिया था। योगसूत्र योग पर लिखित पहला व्यवस्थित लिखित ग्रंथ माना जाता है। ओशो कहते हैं कि योग ध र्म, आस्था और अंधविश्वास से परे है। तभी तो इसे विज्ञान की संज्ञा दी जाती है। ओशो ने 'दि अल्फा एंड ओमेगा' में अंग्रेजी में दिए अपने प्रवचनों में कहा है कि 'जैसे बाहरी विज्ञान में आइंस्टीन का नाम है वैसे भीतरी विज्ञान में पतंजलि का नाम है।'

पतंजलि का 'योगसूत्र' : भारतीय दर्शन साहित्य में पतंजलि द्वारा रचित तीन प्रमुख ग्रंथों का उल्लेख मिलता है। 'योगसूत्र', 'अष्टाध्यायी' पर महाभाष्य और आयुर्वेद पर ग्रंथ। पतंजलि के योगसूत्र पर अनेक भाष्य लिखे गये हैं और इस ग्रंथ का भारतीय भाषाओं और कुछ विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। इस योगसूत्र में 195 सूत्र शामिल हैं जिन्हें 'समाधि', 'साधना', 'विभूति' और श्कैवल्यश शीर्षक से चार अध्याय में विभाजित किया गया है।

योग केवल आसन नहीं हैं। पतंजलि के अनुसार 'चित्तवृत्ति. निरोधः योग है अर्थात् चित्र की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना ही योग है। चित्त की वृत्तियों को अनुशासित करने के लिए पतंजलि ने केवल योगासनों का ही प्रतिपादन नहीं किया बल्कि उसके लिए आठ सिद्धांत भी बताए हैं। वे हैं यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इन आठों को योग के अंग कहा गया है और योग सिद्धि के लिए आठों सिद्धांतों का अनुपालन करना अनिवार्य है। केवल योगासन करने से भी लाभ अवश्य होता है परंतु वहीं संपूर्ण योग नहीं है। उनसे ही पूरे जीवन को नहीं साधा जा सकता है। अगर हम यम और नियम के अंतर्गत दिये गये नैतिक सिद्धांतों का अध्ययन करते हैं तो हम समझ सकते हैं कि इन्सान को अच्छा बनने के लिए इनके अनुपालन का कितना महत्व है। प्रश्न उठता है कि यम से पतंजलि महाऋषि का अभिप्राय क्या है? उन्होंने अपने योगसूत्र ग्रंथ में यम के अंतर्गत पांच नैतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है जो निम्नवत् हैं–

1. अहिंसा : शब्दों से, विचारों से और कर्म से हिंसा न करना अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा से दूर रहना। किसी का भी किसी प्रकार से अहित न करना।

2. सत्य : सत्य वचन, सत्य विचार और सत्य कर्म करना।

3. अस्तेय : चोरी न करना। चोर वृति न रखना। दूसरे के धन या पदार्थो पर नजर न रखना। लोभ लालच से दूर रहना।

4. ब्रह्मचर्य : चेतना को ब्रह्म में स्थिर करना और सभी इन्द्रियों – सुखों में संयम बरतना।

5. अपरिग्रह : जरुरत से ज्यादा धन और वस्तुओं का संचय न करना।

इन सिद्धांतों के अनुपालन के लिए मनुष्य काम, क्रोध, मोह, लोभ, अंहकार आदि से चित की वृत्तियों को विरत करता है। यह सिद्धांत तो अच्छे जीवन जीने के लिए बहुत जरूरी हैं बल्कि सनातन हैं और सनातन धर्म के चिर स्थाई सिद्धांत हैं। इनके अनुपालन से सिद्धि प्राप्त होती है।

आइये, अब देखते हैं कि पतंजलि ऋषि राज द्वारा वर्णित पांच नियम क्या हैं :–

यह भी पांच व्यक्तिगत नैतिक नियम हैं :–

1. शौच : मन और शरीर की शुद्धि। बाहरी पवित्रता और आंतरिक पवित्रता।

2. संतोष : संतुष्ट और प्रसन्न रहना। कर्तव्य करना।

3. तप : अनुशासन को जीवन में उतारना।

4. स्वाध्याय : आत्मचिंतन करना, ओंकार आदि मंत्रों का जाप करना

5. ईश्वर प्रणिधान, : ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण।

3. आसन. योग के भिन्न–भिन्न प्रकार के आसन अर्थात् योगासन करना है। आसन अनेक प्रकार के हैं। यह भी सत्य है कि भारत में दसवीं शताब्दी में गुरु गोरखनाथ ने भी की आसनों का आविष्कार कर योगविद्या को समृद्ध किया है।

4. प्राणायाम : श्वास लेने की तकनीक। अनुलोम–विलोम

आदि करना।

5. प्रत्याहार : इंद्रियों को अंतर्मुखी करना।

6. धारणा : एकाग्रचित्त होना।

7. ध्यान और 8.समाधि

महाऋषि पतंजलि द्वारा योग के दिये गये आठ सिद्धांतो का अनुपालन किया जाये तो मनुष्य का जीवन सफल हो जाये और वह मुक्ति भी पा सकता है। ब्रह्मलीन हो सकता है। पतंजलि के योग को अपनाना है तो उसके योग के पूरे कोड को अपनाना होगा। आज के अति भौतिकतावादी युग में मनुष्य का न आचरण ठीक है न जीवन–शैली जिसके दुष्परिणाम आज विश्व को भोगने पड़ रहे हैं। हर व्यक्ति आज अपनी जरूरत से ज्यादा संचय करने की चाह में न सत्य का पालन करता है और न ही दूसरे के हक को मारने में पीछे रहता है। जैसे–जैसे विज्ञान की प्रगति से सुख सुविधाओं में वृद्धि हो रही है, जीवन में परिश्रम का महत्व कम हो गया। पृथ्वी के अति दोहन ने तथा सुख सुविधाओं की लालसा ने पृथ्वी का संतुलन भी बिगाड़ दिया है। ग्लोबल वार्मिंग से जलवायु और मौसमों का मिजाज भी गड़बड़ा गया है। कहीं अतिवृष्टि और कहीं सूखा, कहीं बाढ़, भयंकर समुंद्री तूफान, जगह जगह ज्वालामुखी फटना मानव के प्रकृति के साथ सामंजस्य के अभाव का परिणाम है।

जीवन में उपरोक्त दिये गये यम और नियमों का पालन न करना, जीवन में संयम और अनुशासन के अभाव में आज का मनुष्य मानसिक रुप से अस्थिर हो गया है। पूरे विश्व में और भारत में भी प्राणी मात्र आज तनाव और अवसाद के घेरे में ऐसा फंस रहा है कि उसका जीवन नारकीय रुप ले चुका है और मानसिक रुप से इतना विक्षप्त कि वे छोटी छोटी बातों और घटनाओं पर आत्महत्या कर रहा है। आजकल युवा पीढ़ी में आत्महत्याओं के चलन का आंकड़ा आसमान छू रहा है। ऐसा नहीं है कि लोग गरीबी या भुखमरी के कारण आत्महत्याएं कर रहे हैं। भारत में तो वैसे भी कोरोना काल के बाद सरकारी मदद के कारण गरीबी बेशक खत्म न हुई हो,कम अवश्य हो गई है और देश की अस्सी करोड़ जनता को मुफ्त में राशन उपलब्ध किया जा रहा है, अतः कोई भूख से तो आत्माहत्या करने से रहा। अभी कुछ दिन पहले समाचार था कि एक मां ने अपने बेटे को मोबाइल का प्रयोग कम करने और अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने को कहा और इसी कारण से उसने आत्महत्या कर ली और एक अन्य मामले में मोबाइल का प्रयोग कम करने के लिये कहने पर मां के जिगर के टुकड़े ने ही अपनी मां के टुकड़े कर उसकी हत्या कर दी।

आप लोगों से अपील करते रहिये कि अपने को बदलिये किंतु कोई बदलना नहीं चाहता। कोई सादे जीवन और स्वच्छ और स्वस्थ सोच को अपनाना नहीं चाहता।हर कोई भोग विलास की अति में फंसा है। लेकिन अगर कोई योग अपनायेगा तो योग उसको बदल कर रख देगा। आज की बहुत दुखदायी समस्याएं स्वतरूसुलझ जायेंगी।

योग अपनाने से तनाव, अवसाद और स्नायु तंत्र के विकार दूर होंगें। आज भारत में स्वस्थ संस्कारों के अभाव में युवा पीढ़ी पथभ्रष्ट और दिग्भ्रमित हो उच्छश्रृंखल हो हिंसा और अपराधों के चंगुल में फंसती जा रही है। वैसे भी देश से भ्रष्टाचार और व्यभिचार के नाग हर किसी को डसने के लिये तैयार रहते हैं। उतल पुथल भरे संसार में सदाचार, सद्व्यवहार और दया, करुणा के स्थान पर अत्याचार और क्रूरता का साम्राज्य मजबूत होता जा रहा है। हमने पृथ्वी ग्रह को रहने के काबिल नहीं रहने दिया क्योंकि हमने संयम, अनुशासन और सद्गुणों को तिलांजलि दे दी है। हमें वर्तमान में जटिल जीवन शैली को त्याग कर सीधी, सरल और संयम वाली जीवनशैली अपनानी होगी। इस संबंध में किसी तरह के उपदेश काम नहीं आएंगे और ऐसे में इस विषय में एक ही रास्ता एक ही उपाय नजर आ रहा है वह है योग। आप योग के संपूर्ण कोड को अपनाएंगे तो इस पर स्वतः इस धरा को हरा भरा बनाएंगगे और साथ ही इसे भावी पीढ़ियों के लिए रहने के काबिल बनाएंगे। इसलिए योग अपनाएं निरोग रहे और आत्मिक आनन्द की अनुभूति पाये। योग की महत्ता भगवान कृष्ण ने भी श्रीमद्भागवत में बताई है :–

'योग : कर्मसु कौशलम्' अर्थात् योग से कर्मों में कुश्लाता आती है। व्यावाहरिक स्तर पर योग शरीर, मन और भावनाओं में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने का एक साधन है। गीता की यह उक्ति इस बात को चरितार्थ करती है भगवान् योगेश्वर कृष्ण कहते हैं कि कर्म ही योग है। भगवान कृष्ण ने योग को अनेक तरह से महिमा मंडित किया है। उन्होंने यह भी कहा है कि

योग सदैव चंचल रहने वाली इन्द्रियों को वश में रखते हुए परमतत्त्व में मन को एकाग्र करता है। भगवान् ही परमतत्त्व हैं। भगवान कृष्ण जब कहते हैं कि कर्म ही योग है तो वहीं कर्म का वड़ा व्यापक अर्थ है। उसमें सृष्टि के सभी कार्य व्यापार आ जाते हैं। योग का विषय अथाह है उसपर विस्तार से चर्चा अभी संभव नहीं, परंतु पतंजलि द्वारा वर्णित योग के सम्पूर्ण कोड को अपनाने से मनुष्य सम्पूर्ण सिद्धि की ओर बढ़ जाता है।

दोस्तों आप सिर्फ उन्ही के लिए सबसे खास हैं जिन्हें आपसे कुछ आस है।

योग दिवस

डॉ. विद्यावती पाराशर
स्वतंत्र लेखन
इंदौर, म.प्र.

जिस प्रकार शरीर को जिंदा रखने के लिए भोजन, हवा, पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मन, आचरण, बुद्धि को विवेकशील बनाने के लिए, आत्म को प्रसन्न रखने के लिए योग की भी आवश्यकता होती है।

अतः योग केवल एक दिन न करके रोज भोजन की तरह ही ग्रहण करना चाहिए।

हमारा जीवन सुविधाओं से परिपूर्ण हो गया है, इस समृद्धि के बीच मनुष्य ने अपनी मानसिक शांति और संतोष भी गवा दिया, बढ़ते मानसिक तनाव के कारण उसने अपना संतुलन और स्वास्थ्य भी करीब करीब खो दिया है । मनुष्य के चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की समुचित प्राप्ति के लिए उचित मार्ग कई वर्षो से योग मार्ग ही है।

व्यक्ति के सर्वांगीण उन्नति योग की साधना से ही की जा सकती है।

योग शब्द की व्याख्या बहुत व्यापक है इसमें ज्ञान योग भक्ति योग कर्मयोग योग तंत्र योग हठयोग और अष्टांग योग जैसी पद्धतियां शामिल हैं

यह सभी पद्धतियां बिल्कुल अलग अलग नहीं है बल्कि यह आपस में जुड़ी हुई है मूलतः यह सभी आध्यात्मिक उन्नति के मार्गों के रूप से अस्तित्व में आई, विभिन्न योग साधनों द्वारा अपने अपने स्वभाव और प्राथमिकताओं के अनुसार जिन विभिन्न मार्गों का अनुसरण किया गया और उपदेश दिया गया उनमें से हठ योग और अष्टांग योग आज हमारे देश में और विदेश में भी सर्वाधिक लोकप्रिय बन गया है हठयोग और अष्टांग योग हठयोग पूर्वक शरीर को जबरदस्ती मोड़ कर मरोड़ कर किया जाने वाला योग नहीं है सच तो यह है कि हठ प्रतीक हैं जिनमें 'ह' का अर्थ है सूर्य, और 'ठ' का अर्थ है चंद्र। इनका संबंध हमारी दाई और बाई नासिका छिद्रों से है। इनमे चलने वाली स्वांस या प्राण में संतुलन लाना, अर्थात् दिन और रात, गर्म और ठंडा को समत्व में लाना योग है। योग अर्थात् दो चीजों को मिलना। आत्मा को परमात्मा में विलीन करना। शरीर और मन को एकाकार करना। इस एकाकार करने या संतुलन में लाने के लिए जिस साधना मार्ग का उपयोग किया जाता है उसे 'हठयोग' साधना कहते हैं ।

हठ दीपिका, घेरण्ड संहिता, गोरक्ष संहिता में आसन मुद्रा प्राणायाम, नादानुसंधान का वर्णन मिलता है। महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में अष्टांग योग का मार्ग निर्दिष्ट किया है। यम,

नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इसमें बहिरंग और अंतरंग योग के बीच के सेतु को प्रत्याहार के रूप में बताया गया है। अर्थात यम नियम आसन प्राणायाम यह बहिरंग योग हैं जबकि धारणा ध्यान समाधि यह अंतरंग योग है। प्रत्याहार इसके बीच में एक सेतु या पुल का काम करता है, इन सब का अभ्यास मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए साथ–साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी किया जाता रहा है। अंतरंग योग को राजयोग भी कहते हैं,'प्रत्याहार',,, ज्ञानेंद्रियों को उनके विषयों से हटाना और उन्हें अपने अंदर की ओर ले जाना है। महर्षि पतंजलि के अनुसार ''यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, साधारण मनुष्य को यह अष्टांग योग का उपदेश दिया है' यम,, यह समाज में मनुष्य को रहने के लिए निर्देशित है। नियम का पालन से सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तित्व विकास होता है। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है, और समूह में रहने के जो नियम है उनका पालन करना पतंजलि के अनुसार बताया गया है इसमें मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य बना रहता है 'अहिंसा ,सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ,' समाज में प्रतिष्ठित और सम्माननीय बनाता है जो कि मनुष्य के मन को प्रसन्न और आत्मा को तृप्त रखता है

'' प्रसन्ना आत्म इंद्रिय मन स्वस्थ इति अभिधियते।''

आत्मा, इंद्रियों और मन जब प्रसन्न रहते हैं तो व्यक्ति का स्वास्थ्य चतुरंग स्वास्थ्य पुष्ट रहता है मनुष्य के स्वयं के चतुरंग स्वास्थ्य के लिए आत्मानुशासन का मार्ग है उनका पालन करना नियम कहलाताहै जैसे दिनचर्या रितु चर्या आहार–विहार विश्राम निद्रा आदि। 'शौच, संतोष ,तप, स्वाध्याय ईश्वर प्राणिधान ये पांच नियम' है। इसमें 'तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रधान यह क्रिया योग भी' कहलाते हैं। इनके पालन से मन, इंद्रियों पर आत्मानुशासन आने लगता है और फिर आने वाले विघ्नों को भी हटाकर योग साधना का मार्ग प्रशस्त होता है। आसन,,आसन की तीन अवस्थाएं बताई गई है गई है

'' स्थिरम सुखम आसनाम।''

शांति से बिना हिले डूले स्थिर भाव से सुख पूर्वक लंबे समय तक बैठ सके वही आसन कहलाता है।

शरीर के सुख पूर्वक बैठ जाने के बाद चेष्टाओ को त्याग कर देना है। और परमात्मा में मन लगाने से आसन की सिद्धि होती है।

'' 'तत्तो द्वंदा न अभिधात''

तब द्वंद साधक पर कोई आघात नही करते।

शत्रु या विघ्न, अर्थात शीत, गर्म शोर–शराबा भीड़भाड़ आदि साधक पर कोई असर नहीं डालते।

'प्राणायाम'– प्राणों का शरीर में आवागमन में विस्तार करना, या शरीर में प्राणों को आयाम देना ही प्राणायाम के कहलाता है।

प्राणवायु का शरीर में प्रविष्ट होना श्वास है और बाहर निकलना प्रश्वास है।

इन दोनों की गति का, प्राणवायु के आवागमन की क्रिया का रुक जाना प्राणायाम का सामान्य लक्षण है।

'प्राणायाम के भेद'– शीतली प्राणायाम, भस्त्रिका प्राणायाम, अनुलोम विलोम प्राणायाम, सूर्यभेदी प्राणायाम, उज्जैय्यि प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम

पतंजलि के अनुसार चार प्रकार का प्राणायाम बताया गया है 'बाह्य वृत्ति आभ्यंतर वृत्ति', 'स्तंभन वृत्ति, कुंभक'

प्राण वायु को बाहर निकालना और रोक देना बाह्य वृत्ति या रेचक कहते है। प्राण को अंदर खींचना और अधिक से अधिक समय तक रोकना अंदर की ओर रोकना या भरना उसे पूरक कहते हैं। इसे ही आभ्यंतर वृत्ति भी कहते है। स्तंभ वृत्ति,, शरीर के भीतर जाने और बाहर निकलने वाली जो प्राणों की स्वाभाविक गति है उसे प्रयत्न पूर्वक बाहर या भीतर निकालने का अभ्यास न करके जहां है वही रोक देना यह स्तंभित कर देना कुंभक या स्तंभित प्राणायाम कहलाता है।

विक्षेप वृत्ति, चतुर्थ प्राणायाम है।

बाहर भीतर के विषयों के चिंतन का त्याग कर देने से अर्थात प्राण बाहर या भीतर चल रहे हैं उन्हें ठहरा हुआ है इन सब को छोड़कर इष्टदेव में मन को लगा देना इस समय प्राणों की गति जिस जगह है वही रुकी रहे, इसे चौथा प्राणायाम बताया गया है। इस तरह से प्राणायाम करने से उत्तरोत्तर साधक का अभ्यास परिपक्व हो जाता है तथा ज्ञान के ऊपर चढ़े, अहंकार, इर्ष्या राग, द्वेष रूपी मल हट जाता है। ज्ञान का प्रकाश फैलने लगता है प्रत्याहार,, जिस प्रकार कछुआ अपने अंगों को किसी भी आहट से अंदर समेट लेता है उसी प्रकार साधक अपने विषयों से अपनी इंद्रियों को हटाकर भीतर की ओर मोड़ लेता है अर्थात इंद्रियों का अंतर्मुखी होना प्रतिहार कहलाता है।

प्रतिहार, के सिद्ध होने पर इंद्रिया अपने वश में हो जाती है अर्थात इंद्रिय विजय सिद्धि होती है अब आगे की साधना सरल होती जाती है

धारणा,, किसी एक जगह पर चित्त को लाना धारणा कहलाता है। वह जगह कुछ भी कहीं भी हो सकती है शरीर के भीतर नाभि भूकुटी या बाहर सूर्य, चंद्र आदि।

ध्यान,, चित्त जिस जगह है वहीं पर लगा रहे बिना टूटे, वह ध्यान कहलाते है। घ्येय में चित्त का एकाग्र हो जाना। केवल एक ही वृत्ति हो जाना, दूसरी वृत्ति का ना उठना ध्यान कहलाता है। जब ध्यान मैं केवल घ्येया मात्र ही रह जाए यह अवस्था साधक की समाधि कहलाती है। अर्थात ध्यान की चरमोत्कर्ष अवस्था ही समाधि है समाधि के उत्कर्ष अवस्था धीरे–धीरे मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह सब कुछ सामान्य व्यक्ति के लिए संभव नहीं हो पाता लेकिन हम सामान्य जन के लिए केवल यम नियम का पालन करना।और यम और नियम को उनके अंग सहित अपना लेना ही व्यवस्थाओं को पाना संभव हो जाता है केवल सत्य और अहिंसा यह दोनो व्यवहार में आने पर व्यक्तित्व विकास उत्कर्ष हो सफलता की ओर उन्मुक्तता से बढ़ने लगता है।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

द्वारा

21 जून 2023 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

पर मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सेंट्रल जेल में और बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के शासकीय बालिका गृह में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस।

21 जून 2023 को फाउण्डेशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम रीवा (मध्य प्रदेश), लखनऊ, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश),एवं बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ संपन्न। फाउण्डेशन के प्रशिक्षित योगाचार्यों द्वारा सेंट्रल जेल रीवा (मध्य प्रदेश) जिला कारागार मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के योग शिविरों में बंदी जनों को योगाभ्यास कराया गया एवं शासकीय बालिका गृह सरकंडा, जिला बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में बालिकाओं को योग प्रशिक्षण प्रदान कर योगाचार्यों नें योग द्वारा शारीरिक, मानसिक, नैतिक विकास के महत्व पर प्रकाश डाला।

केन्द्रीय जेल, रीवा, मध्य प्रदेश

जिला सेंट्रल जेल रीवा (मध्य प्रदेश) में गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन द्वारा 21 जून को कारागार के समस्त बंदी जनों को योगाचार्य श्री विनय शुक्ला जी के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। फाउण्डेशन के रीवा मंडल के अध्यक्ष श्री हीरेंद्र गौतम एवं फाउण्डेशन के रीवा जिले के अध्यक्ष श्री दीगांचल बघेल द्वारा जेल अधीक्षक श्री एस के उपाध्यक्ष जी एवं योगाचार्य जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

द्वारा

21 जून 2023 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

पर मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सेंट्रल जेल में और बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के शासकीय बालिका गृह में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस।

जिला कारागार, मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश मुजफ्फरनगर की जिला कारागार में फाउण्डेशन द्वारा आयोजित योग कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अनिल कुमार सचिव विधिक सेवा प्राधिकरण जेल प्रशासन अधिकारियों को फाउण्डेशन के जिला अध्यक्ष श्री पंकज त्यागी जी एवं उनकी टीम द्वारा बुके देकर एवं योगाचार्य श्री अनुज कुमार शुक्ल जी को, जेल अधीक्षक श्री सीताराम शर्मा जी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री अमित राय जैन जी, अपूर्व अग्रवाल जी, श्री जयवीर सिंह जी, श्री बाबूराम जी, रजत जैन, सार्थक त्यागी आदि उपस्थित रहे।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

द्वारा

21 जून 2023 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

पर मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सेंट्रल जेल में और बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के शासकीय बालिका गृह में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस।

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शासकीय बालिका गृह सरकंडा बिलासपुर में योग कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष डॉ अलका यतींद्र यादव ने कहा योगा निरंतर रूप से करते रहने से शरीर स्वस्थ रहता है एवं अध्यात्मिक लाभ मिलता है। योग प्रशिक्षक शशी किरण साहू के द्वारा कुशल योग तथा तन–मन स्वास्थ्य का प्रशिक्षण दिया। बिलासपुर (छत्तीसगढ़) शासकीय बालिका सुधार गृह की अधीक्षका एवं योग प्रशिक्षिका को जिला बिलासपुर की समस्त टीम की उपस्थिति में फाउण्डेशन की बिलासपुर मंडल की अध्यक्ष डॉ अलका यादव द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

फाउण्डेशन की जिला अध्यक्ष मोना केवट एवं जिला सचिव प्रियंका सिंह, जिला उपाध्यक्ष मांडवी नामदेव, आशिता यादव, आरती यादव, ममता तिवारी (संस्था प्रभारी) नियति अग्रवाल, नारायणी मिश्रा, दुर्गा साहू, सरस्वती खांडे, राजकुमारी पटेल, समीक्षा नायडू, अनामिका, वस्त्रकार, अदिति सैनी आदि ने योग कर कार्यक्रम में अपनी सहभागिता प्रदान की।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

द्वारा

21 जून 2023 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

पर मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सेंट्रल जेल में और बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के शासकीय बालिका गृह में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस।

राजकीय इण्टर कॉलेज, मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश

मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) में फाउण्डेशन के जिला अध्यक्ष श्री पंकज कुमार त्यागी जी एवं उनकी प्रशिक्षित टीम ने राजकीय इंटर कॉलेज में योग का कार्यक्रम 21 जून को आयोजित किया। योग प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत उत्साहित छात्रों को योग के विभिन्न लाभ से अवगत कराया, और जीवन में योग को निरंतर अपनाने पर बल दिया। फाउण्डेशन द्वारा इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल श्री शैलेंद्र त्यागी जी को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

द्वारा

21 जून 2023 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

पर मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की सेंट्रल जेल में और बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के शासकीय बालिका गृह में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस।

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में विश्व योग दिवस पर जनेश्वर मिश्र पार्क में फाउण्डेशन की जिला अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रकाश व योग शिक्षक प्रीति वर्मा के संयुक्त प्रशिक्षण में गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउण्डेशन द्वारा प्रात: 7 बजे से 8:30 बजे तक सात दिवसीय योगाभ्यास कराया गया।

21 जून योगा कार्यक्रम के समापन दिवस पर पिछले एक सप्ताह के सीखे हुये प्रतिभागियों के मध्य योग की प्रतियोगिता भी हुई । जिसमें प्रथम दो विजेताओं को योग मैट व अन्य को सांत्वना पुरस्कार में कोल्ड ड्रिंक कप पांच लोगों को दिए गए । योग के बाद सभी को बिस्कुट, पानी व फ्रूटी भी वितरित की गई। 'योग है तो जीवन है ' का गुरुमंत्र भी डॉ अर्चना प्रकाश द्वारा दिया गया।

योग विज्ञान एक अद्भुत कला

सुजाता प्रसाद

लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

प्रबल एवं स्वस्थ संभावनाओं का सुंदर और सरल सत्य है 'योग'। योग प्राचीन भारतीय परंपरा एवं संस्कृति की अनमोल देन है। योग भारतीय ज्ञान की पांच हजार वर्ष पुरानी शैली है। अध्ययन से ज्ञात है कि भगवान शंकर के बाद वैदिक ऋषि मुनियों से ही योग का प्रारम्भ माना जाता है। आगे चलकर भगवान श्री कृष्ण, भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध ने इसे अपनी तरह से विस्तारित किया। इसके बाद महर्षि पतञ्जलि ने इसे सुव्यवस्थित रूप दिया। वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 21 जून 2015 को पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। 21 जून, अब दुनिया के लिये जाना–पहचाना दिन बन गया है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में पूरा विश्व मनाता है।

योग शब्द का मतलब एक हो जाना भी है। योग शब्द संस्कृत के युज शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है जुड़ना। यह जुड़ाव हमें आसन, प्राणायाम, मुद्रा, ध्यान आदि के निरंतर अभ्यास से प्राप्त होता है। योग सर्व धर्म सम् भाव है अर्थात योग हम सब के लिए है। योग हमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से समृद्ध बनाता है जो हमें अनुशासित रखता है और हम निरंतर जागरूक बने रहते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है 'योगस्थ कुरू कर्माणि।' योग की शुरुआत स्तुति या प्रार्थना से की जाती है, जिससे हमारा मन, भाव शांत चित्त होकर अपनी एकाग्रता में केंद्रित हो पाता है।

ॐ संगच्छध्वं संवद्धवम् संवो मनांसी जानताम् देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।

अर्थात हम सभी प्रेम से मिलकर चलें, मिलकर बोलें और सभी ज्ञानी बनें। अपने पूर्वजों की भांति हम सभी कर्तव्यों का पालन करें।

योग विज्ञान एक ऐसी अद्भुत कला है जो स्वस्थ जीवन शैली प्रदान करती है। यह एक ऐसा सूक्ष्म विज्ञान है जो हमारे मन, मस्तिष्क और शरीर के बीच बेहतर सामंजस्य स्थापित

करता है और हमारे शरीर की उर्जा का संरक्षण भी करता है। इस प्रकार योग हमारे जीवन को संतुलित रखता है। इसलिए योग एक बुनियादी प्रक्रिया है, जो निरोग रहने की भूमि तैयार करता है। योग हमारे तन मन, हमारी भावनाओं हमारे विचार सबको सम्यक रूप से संतुलित करता है। इतना ही नहीं योग अपने हितकारी अभ्यास से उत्तरोत्तर हमसे हमारा आत्म साक्षात्कार भी करवा पाने में सक्षम हो पाता है। इस प्रकार हमारे शरीर के बाद योग मानसिक और भावनात्मक स्तरों पर काम करता है।

श्रीमद्भगवत गीता में भी कहा गया है 'योगः कर्मस कौशलम्' अर्थात् कर्म करने की एक प्रकार की विशेष युक्ति को योग कहते हैं।

हालांकि योग में तुरंत इलाज, संभव नहीं है लेकिन रोगों से लड़ने के लिए एक सिद्ध विधि है। इसलिए शारीरिक और मानसिक लाभ के लिए योग सबसे अधिक ज्ञात लाभों में से एक है। यहां तक कि जब आधुनिक विज्ञान किसी रोग के उपचार में असफल हो जाता है, तब योग अपने शक्तिशाली प्रभाव के कारण उस रोग के विरुद्ध अपना शत प्रतिशत देता है। यह सच है कि जब हम योग शुरू करते हैं तो शरीर के अनेक अंग जो सुषुप्त अवस्था में पड़े हैं, उनकी जागृति को हम स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

स्वामी विवेकानन्द ने योग के संबंध में कहा है कि 'योग शरीर को पूर्ण स्वास्थ्य और जीवनी शक्ति प्रदान करने में सहायक होता है, यह रोगों को दूर रखता है।'

इसलिए योग हमेशा कुशल योग गुरु के परामर्श या निर्देशानुसार करना चाहिए। योगाभ्यास प्राणायाम को अपने दिनचर्या में स्थान जरुर देना चाहिए। हमारी अपनी बॉडी बायोलॉजी होती है, इसलिए किसी भी योगाभ्यास की प्रैक्टिस करने के बाद असहज महसूस होने पर उस अभ्यास को हमें छोड़ देना चाहिए। अगर हम योग शुरू करने वाले हों तो सरल आसन–प्राणायाम से शुरुआत करें, अगर शुरुआत हो चुकी है तो अभ्यास जारी रखें और अगर योग में प्रवीण हो गए हों तो कभी इसका साथ छोड़ें नहीं। एक और महत्वपूर्ण बात कि योग अपनी उम्र एवं शारीरिक क्षमतानुसार ही अपनाएं।

मुख्य रूप से बीमारियां दो प्रकार की होती हैं, आधि, व्याधि अर्थात मानसिक एवं शारीरिक। योगासन करने से व्यक्ति शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है। शारीरिक रूप से योग करने से मांसपेशियां सुदृढ़ होती हैं जिससे आंतरिक अंगों में दृढ़ता आती है। शरीर में प्राणाशक्ति का भी विकास होता है। यह शरीर में नाड़ी तंत्र को भी संतुलित करता है। इतना ही नहीं योग मानसिक तनाव से मुक्ति और मानसिक एकाग्रता भी प्रदान करता है। चित्त की वृत्तियों को अनुशासित करना ही योग है। योग हमें मन को नियंत्रित कर उसे दिशांतरित करने की तकनीक देता है। 'योग भगाए रोग' आज हम सभी के बीच एक प्रचलित वाक्य है।

इसलिए योग हमेशा योग गुरु के परामर्श या निर्देशानुसार करना चाहिए। अगर हम योग शुरू करने वाले हों तो सरल आसन–प्राणायाम से शुरुआत करें, अगर शुरुआत हो चुकी है तो

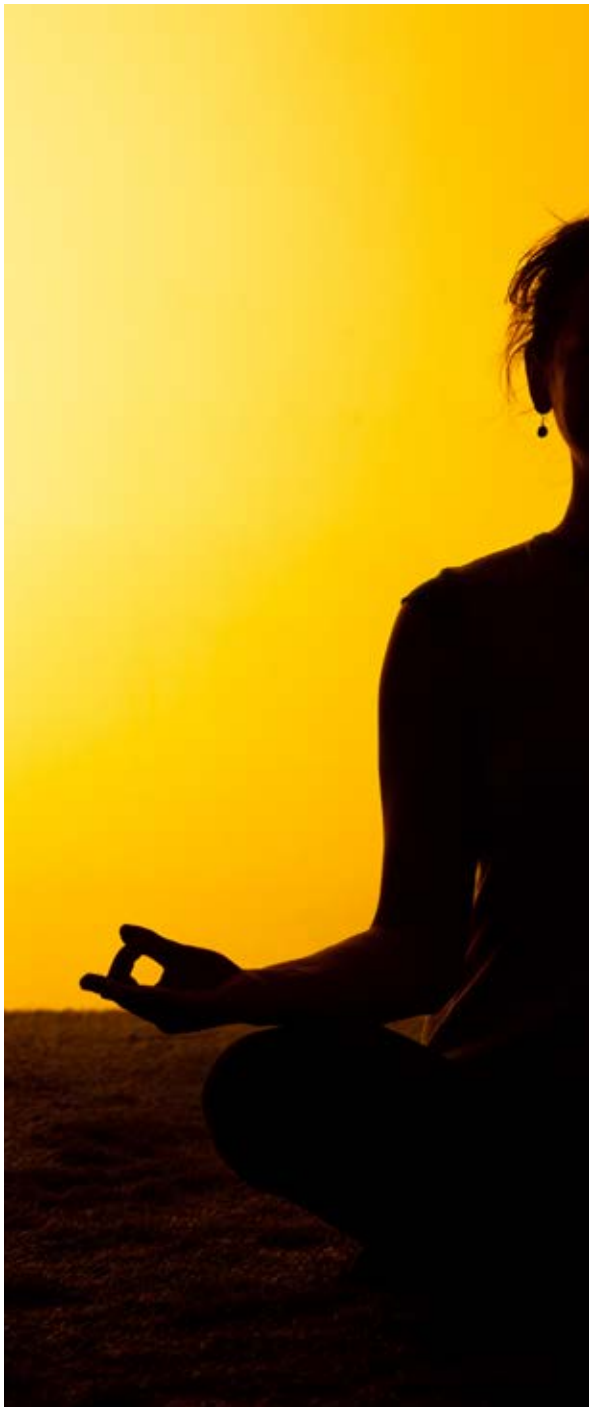

अभ्यास जारी रखें और योग में प्रवीण हो गए हों तो कभी इसका साथ छोड़ें नहीं। दरअसल योग एक विज्ञान है, जिसे अपने दैनिक जीवन में अपनाने से हमें लाभ पहुंचता है। योग की महिमा अपरंपार है।

स्वास्तिक चिह्न की महिमा

डॉ. निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया, असम

स्वस्तिक चिन्ह भारतीय : संस्कृति में हिन्दू धर्म का मंगल प्रतीक है। इसे सातिया भी बोला जाता है। यह हमारे महान ऋषि–मुनियों की देन है, जो ईश्वर की शक्ति अपने अन्दर समाये हुए थे। किसी भी शुभ कार्य से पहले रोली चन्दन से स्वस्तिक चिन्ह बना कर ही पूजा अर्चना शुरू की जाती है।

स्वस्तिक शब्द सुअस्क से बना है। 'सु' का अर्थ अच्छा, 'अस' का अर्थ 'सत्ता' या 'अस्तित्व' और 'क' का अर्थ 'कर्ता' या करने वाले से है। इस प्रकार 'स्वस्तिक' शब्द का अर्थ हुआ 'अच्छा' या 'मंगल' करने वाला। इसका एक अर्थ यह भी है की सभी दिशाओं में कल्याण करने वाला।

ऋग्वेद की ऋचा में स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक माना गया है और उसकी चारों भुजाओं को चार दिशाओं की उपमा दी गई है। माता लक्ष्मी,गणेश और मंगल कार्य का प्रतीक चिह्न होता है स्वास्तिक।

किसी भी शुभ कार्य का आरंभ करने से पहले हिन्दू धर्म में स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर उसकी पूजा करने का महत्व है। मान्यता है कि ऐसा करने से कार्य सफल होता है। स्वास्ति. तक के चिन्ह को शुभ का प्रतीक माना जाता है इसके साथ ही स्वास्तिक शब्द को 'सु' और 'अस्ति' का मिश्रण योग भी माना जाता है। यहां 'सु' का अर्थ है शुभ और 'अस्ति' से तात्पर्य है होना। अर्थात स्वास्तिक का मौलिक अर्थ शुभ होने या कल्याण होने से है। यही कारण है कि किसी भी शुभ कार्य के दौरान स्वास्तिक का पूजन अति आवश्यक माना गया है। वास्तव में वैज्ञानिकता के आधार पर स्वस्तिक का यह चिह्न क्या दर्शाता है, इसके पीछे ढेरों तथ्य हैं। स्वास्तिक में चार प्रकार की रेखाएं होती हैं, जिनका आकार एक समान होता है। मान्यता है कि यह रेखाएं चार दिशाओं पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की ओर इशारा करती हैं, लेकिन

हिन्दू मान्यताओं के अनुसार यह रेखाएं चार वेदों– ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद का प्रतीक हैं। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि यह चार रेखाएं सृष्टि के रचनाकार भगवान ब्रह्मा के चार सिरों को दर्शाती हैं।

इसके अतिरिक्त इन चार रेखाओं को चार पुरुषार्थ, चार आश्रम,चार लोक और चार देवों यानी कि भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश और गणेश से तुलना की गई है।

स्वास्तिक की चार रेखाओं : को जोड़ने के बाद मध्य में बने बिंदु को भी विभिन्न मान्यताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है। मान्यता है कि स्वास्तिक की चार रेखाओं को भगवान ब्रह्मा के चार सिर के समान माना गया है और मध्य में मौजूद बिंदु भगवान विष्णु की नाभि है। जिसमें से भगवान ब्रह्मा प्रकट होते हैं। इसके अलावा यह मध्य भाग संसार को एक धुरी से शुरू होने की ओर भी इशारा करता है।

स्वास्तिक की चार रेखाएं एक घड़ी की दिशा में चलती हैं जो संसार के सही दिशा में चलने का प्रतीक है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार यदि स्वास्तिक के आसपास एक गोलाकार रेखा खींच दी जाए तो यह सूर्य भगवान का चिन्ह माना जाता है। वह सूर्य देव जो समस्त संसार को अपनी ऊर्जा से रोशनी प्रदान करते हैं।

हिन्दू धर्म के अलावा स्वास्तिक का और भी कई धर्मों में महत्व है। बौद्ध धर्म में स्वास्तिक को अच्छे भाग्य का प्रतीक माना गया है। यह भगवान बुद्ध के पग चिन्हों को दिखाता है इसलिए इसे पवित्र माना जाता है। यही नहीं स्वास्तिक भगवान बुद्ध के हृदय, हथेली और पैरों में भी अंकित है।

वैसे तो हिन्दू धर्म में ही स्वास्तिक के प्रयोग को सबसे उच्च माना गया है लेकिन हिन्दू धर्म से भी ऊपर यदि स्वास्तिक ने कहीं मान्यता हासिल की है तो वह है जैन धर्म। हिन्दू धर्म से कहीं ज्यादा महत्व स्वास्तिक का जैन धर्म में है। जैन धर्म में यह सातवें जैन का प्रतीक है जिसे सब तीर्थकर सुपार्श्वनाथ के नाम से भी जानते हैं। श्वेताम्बर जैनी स्वास्तिक को अष्ट मंगल का मुख्य प्रतीक मानते हैं।

सिंधु घाटी की खुदाई के दौरान स्वास्तिक प्रतीक चिन्ह भी मिला था। ऐसा माना जाता है हड़प्पा सभ्यता के लोग भी सूर्य पूजा को महत्व देते थे। हड़प्पा सभ्यता

के लोगों का व्यापारिक संबंध ईरान से भी था। जेंद अवेस्ता में भी सूर्य उपासना का महत्व दर्शाया गया है। प्राचीन फारस में स्वास्तिक की पूजा का चलन सूर्योपासना से जोड़ा गया था। विभिन्न मान्यताओं एवं धर्मों में स्वास्तिक को महत्वपूर्ण माना गया है। भारत में और भी कई धर्म हैं जो शुभ कार्य से पहले स्वास्तिक के चिन्ह को इस्तेमाल करना जरूरी समझते हैं।

केवल भारत ही क्यों बल्कि विश्व भर में स्वास्तिक को एक अहम स्थान हासिल है।

यहां हम विश्व भर में मौजूद हिन्दू मूल के उन लोगों की बात नहीं कर रहे जो भारत से दूर रह कर भी शुभ कार्यों में स्वास्तिक को इस्तेमाल कर अपने संस्कारों की छवि विश्व भर में फैला रहे हैं, बल्कि असल में स्वास्तिक का इस्तेमाल भारत से बाहर भी होता है। एक अध्ययन के मुताबिक जर्मनी में स्वास्तिक का इस्तेमाल किया जाता है।

वर्ष 1935 के दौरान जर्मनी के नाजियों द्वारा स्वास्तिक के निशान का इस्तेमाल किया गया था लेकिन यह हिन्दू मान्यताओं के बिलकुल विपरीत था। यह निशान एक सफेद गोले में काले 'क्रास' के रूप में उपयोग में लाया गया,जिसका अर्थ उग्रवाद या फिर स्वतंत्रता से सम्बन्धित था। लेकिन नाजियों से भी बहुत पहले स्वास्तिक का इस्तेमाल किया गया था।

अमरीकी सेना ने पहले विश्व युद्ध में इस प्रतीक चिह्न का

इस्तेमाल किया था। ब्रितानी वायु सेना के लड़ाकू विमानों पर इस चिह्न का इस्तेमाल 1939 तक होता रहा था।

लेकिन करीब 1930 के आसपास इसकी लोकप्रियता में कुछ ठहराव आ गया था। यह वह समय था जब जर्मनी की सत्ता में नाजियों का उदय हुआ था। उस समय किए गए एक शोध में बेहद दिलचस्प बात निकल कर सामने आई। शोधकर्ताओं ने माना कि जर्मन भाषा और संस्कृत में कई समानताएं हैं। इतना ही नहीं, भारतीय और जर्मन दोनों के पूर्वज भी एक ही रहे होंगे और उन्होंने देवताओं जैसे वीर आर्य नस्ल की परिकल्पना की।

इसके बाद से ही स्वास्तिक चिन्ह का आर्य प्रतीक के तौर पर चलन शुरू हो गया। आर्य प्रजाति इसे अपना गौरवमय चिन्ह मानती थी लेकिन 19वीं सदी के बाद 20वीं सदी के अंत तक इसे नफरत की नजर से देखा जाने लगा। नाजियों द्वारा कराए गए यहूदियों के नरसंहार के बाद इस चिन्ह को भय और दमन का प्रतीक माना गया था।

युद्ध खत्म होने के बाद जर्मनी में इस प्रतीक चिह्न पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और 2007 में जर्मनी ने यूरोप भर में इस पर प्रतिबंध लगवाने की नाकाम पहल की थी।

माना जाता है कि स्वास्तिक के चिह्न की जड़ें यूरोप में काफी गहरी थीं। प्राचीन ग्रीस के लोग इसका इस्तेमाल करते थे। पश्चिमी यूरोप में बाल्टिक से बाल्कन तक इसका इस्तेमाल देखा गया है। यूरोप के पूर्वी भाग में बसे यूक्रेन में एक नेशनल म्यूजियम स्थित है। इस म्यूजियम में कई तरह के स्वास्तिक चिह्न देखे जा सकते हैं जो 15 हजार साल तक पुराने हैं।

यह सभी तथ्य हमें बताते हैं कि केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कोने–कोने में स्वास्तिक चिन्ह ने अपनी जगह बनाई है। फिर चाहे वह सकारात्मक दृष्टि से हो या नकारात्मक रूप से। परन्तु भारत में स्वास्तिक चिन्ह को सम्मान दिया जाता है और इसका विभिन्न रूप से इस्तेमाल किया जाता है। यह जानना बेहद रोचक होगा कि केवल लाल रंग से ही स्वास्तिक क्यों बनाया जाता है।

भारतीय संस्कृति में लाल रंग का सर्वाधिक महत्व है और मांगलिक कार्यों में इसका प्रयोग सिन्दूर, रोली या कुमकुम के रूप में किया जाता है। लाल रंग शौर्य एवं विजय का प्रतीक है। लाल रंग

प्रेम, रोमांच व साहस को भी दर्शाता है। धार्मिक महत्व के अलावा वैज्ञानिक दृष्टि से भी लाल रंग को सही माना जाता है।

लाल रंग व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्तर को शीघ्र प्रभावित करता है। यह रंग शक्तिशाली व मौलिक है। हमारे सौर मण्डल में मौजूद ग्रहों में से एक मंगल ग्रह का रंग भी लाल है। यह एक ऐसा ग्रह है जिसे साहस, पराक्रम, बल व शक्ति के लिए जाना जाता है इसलिए स्वास्तिक बनाते समय केवल लाल रंग का ही प्रयोग किया जाता हैं।

गणेश पुराण में कहा गया है कि स्वस्तिक चिह्न भगवान गणेश का स्वरूप है, जिसमें सभी विघ्न-बाधाएं और अमंगल दूर करने की शक्ति है।

स्वस्तिक में सकारात्मक ऊर्जा अधिक होने से वास्तुदोष समाप्त होते है। हर मांगलिक कार्य पर जिस स्वस्तिक की रचना हल्दी कुमकुम और सिंदूर से की जाती है, जिसे सतिया भी कहा जाता है जिसे भगवान गणेश का प्रतीक माना जाता है और जिसमें समस्त देवी-देवताओं के वास की मान्यता है। हिंदू धर्म के लोगों की आस्था के इस प्रतीक को धन-वैभव और सुख-समृद्धि प्रदान करने वाला माना जाता है।

किसी भी धार्मिक काम में या किसी भी पूजा में घर के मुख्यद्वार पर या बाहर की दीवार पर स्वास्तिक का निशान बनाकर स्वस्ति वाचन करते हैं। स्वास्तिक श्रीगणेश का ही प्रतीक स्वरूप है। किसी भी पूजन कार्य को शुरू करने से पहले स्वस्तिक का चिह्न जरूरी होता है।

स्वास्तिक का वैज्ञानिक महत्व भी है। सही तरीके से बने हुए स्वस्तिक से ढेर सारी सकारात्मक उर्जा निकलती है। यह उर्जा वस्तु या व्यक्ति की रक्षा, सुरक्षा करने में मददगार होती है। स्वस्तिक की उर्जा का अगर घर, अस्पताल या दैनिक जीवन में प्रयोग किया जाय तो व्यक्ति रोगमुक्त और चिंता मुक्त रह सकता है। गलत तरीके से प्रयोग किया गया स्वस्तिक भयंकर समस्याएँ भी दे सकता है स्वास्तिक की रेखाएं और कोण बिलकुल सही होने चाहिए।भूलकर भी उलटे स्वस्तिक का निर्माण और प्रयोग नहीं करना चाहिए। लाल और पीले रंग के स्वस्तिक ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं। जहाँ जहाँ वास्तु दोष हो या घर के मुख्य द्वार पर लाल रंग का स्वस्तिक बनाना चाहिए।

पूजा के स्थान, पढ़ाई के स्थान और वाहन में स्वस्तिक बनाने से सकारात्मक ऊर्जा आती है।

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर छोटे-छोटे स्वस्तिक लगाने से वे जल्दी खराब नहीं होते हैं।

इस प्रकार स्वास्तिक केवल एक चिह्न मात्र ही नहीं है बल्कि इसका जीवन के हर कार्य में सकारात्मक सहयोग होता है।

प्रभु दर्शन दें सेवक जानी

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

करुणाकर मैं दास आपका शरणागत जन प्राणी,
जगतवंद्य हे दया के सागर सुरनर मुनि श्रुति मानी।
दीनानाथ भक्त उर चंदन वेद व्यास बखानी,
ब्रह्मा विष्णु महेश एक तुम सचराचर के स्वामी।
प्रभु दर्शन दें सेवक जानी।। 1।।

ब्रह्म स्वरूप ज्ञान गोतीतम तुम अविगत अविनाशी,
उमा रमा ब्रह्माणी निशिदिन सेवत नित मुनि ध्यानी।
परमानंद प्रभू नय नागर भक्तों के सुखराशी,
वेद भी महिमानेति कहि गाई चरणामृतअभिलाषी।
प्रभु दर्शन दें सेवक जानी।। 2।।

भवदुःख हरता मंगल कर्ता भय भंजन असुरारी,
प्रनतपाल दीनो के दाता घट घट अंतर्यामी।
नरदमुनि गावे यश जिनके शिवजी ध्यान लगाएं
गो द्विज धेनु संत सुर रक्षक ब्रह्म रूप गुनखानी।
प्रभु दर्शन दें सेवक जानी।। 3।।

अजअनवद्य अनामयभगवन ध्यावँ जिन्हें ब्रह्मज्ञानी,
अगुणसगुणमय श्रीरामहरि व्यापक कहें तत्व ज्ञानी।
गीधराज गणिका गज तारे भक्तिभाव पहिचानी ,
ध्रुव प्रह्लाद वाल्मीकि सब नाम जपत भए ज्ञानी।
प्रभु दर्शन दें सेवक जानी।। 4।।

03 जुलाई पर विशेष

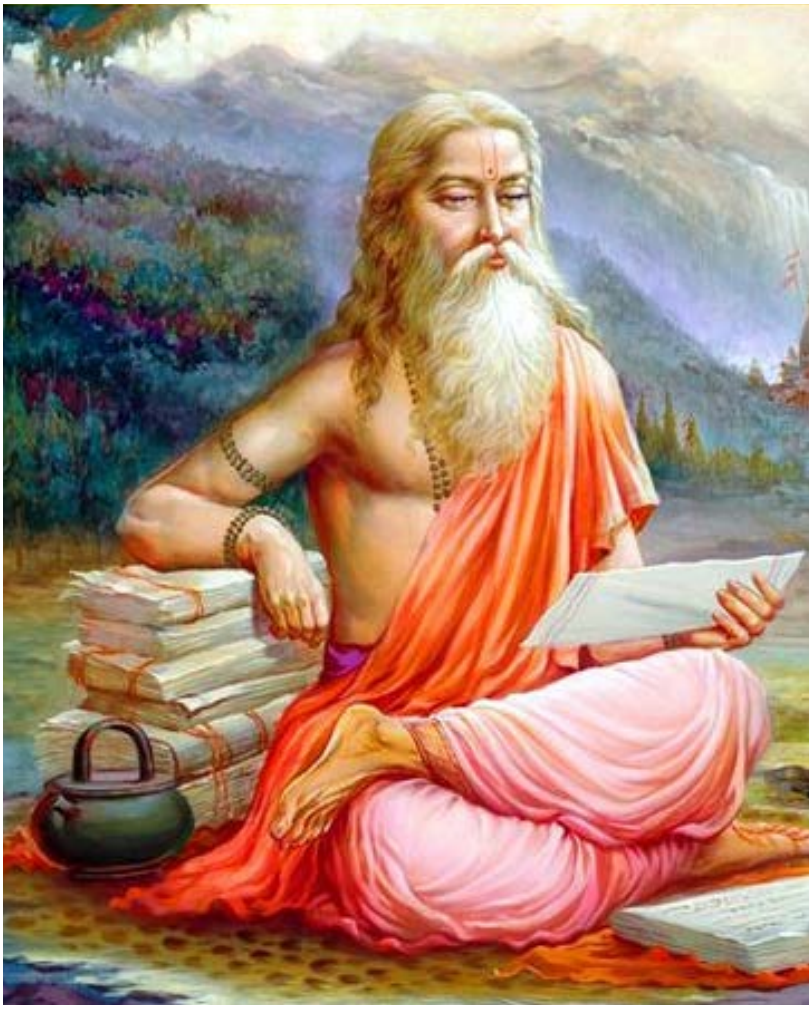

गुरू पूर्णिमा

गुरु अर्चन वंदन का महापर्व

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक : अध्यात्म संदेश पत्रिका
सह संपादक : योग संस्कृति
उत्थान पीठ पत्रिका

भारतीय संस्कृति में आषाढ़ मास की पूर्णिमा का विशेष महत्व है इस पूर्णिमा के दिन महर्षि पराशर व सत्यवती के पुत्र दिव्य तेज सम्पन्न, तत्वज्ञ, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, महान ग्रंथो के रचयिता **भारतीय ज्ञान गंगा के भगीरथ महर्षि वेदव्यास जी** का जन्म हुआ था इस लिए इस पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। महर्षि वेद व्यास जी ने समस्त मनुष्य जाति को अल्पायु, अल्पबुद्धि, कर्मक्रिया में लिप्त देखकर उनके सर्वकालिक कल्याण के लिए वेद रूपी वृक्ष का चार शाखाओं में विभाजन किया।

वेदों का विस्तार करने के कारण ही उन्हें 'वेद व्यास' कहा जाता है। वेदव्यास जी ने ही अष्टादश पुराणों, ब्रह्मसूत्र और **पंचम वेद कहे जाने वाले विश्व प्रसिद्ध 'महाभारत'** ग्रंथ की रचना की। इसी कारण भारतीय जनमानस के हृदय में व्यास जी अजरामर रूप में प्रतिष्ठित है। वेदव्यास के जन्मदिन पर अपने समस्त गुरुओं के प्रति सम्मान, श्रद्धा समपर्ण का भाव व्यक्त करके उनके पूजन का विधान है।

महाभारत के अनुसार : सर्वप्रथम वेदों का ज्ञान समग्र ही था। वेदव्यास जी ने धर्म का ह्रास देखकर वेदों का व्यास (विभक्त) करके – **ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद** इस प्रकार से उनका नामकरण किया। वेदों का व्यास करने के कारण ही ये वेद व्यास कहलाये। कृष्णवर्ण होने के कारण ये कृष्ण द्वैपायन के रूप में भी प्रसिद्ध हुए।

यो व्यस्य वेदांचतुरस्तपसा भगवानऋषि ।
लोके व्यास त्वमापेदे कार्षणयात कृष्णत्वमेवा ।। (महाभारत आदिपर्व)

सर्वप्रथम वेदव्यास जी के शिष्यों ने वेद व्यास के जन्मदिन पर उनका पूजन किया तभी से समस्त गुरुओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने की परंपरा प्रचलित हुई?

समय बदलता है, परिस्थितियां बदलती है, मान्यताएं भी बदल जाती है। परंतु कुछ परम्पराए ऐसी होती है जो समाज के क्रोड में पलती है वे दिन प्रतिदिन समाज का असीम प्यार पाकर संवर्धित होती है। गुरु पूर्णिमा भी कुछ इसी प्रकार की सदियों से चली आ रही समृद्ध गुरु शिष्य परम्परा का उत्तम उदाहरण है। गुरु पूर्णिमा अपने समस्त गुरुओं नमन करने का पावन पर्व है जो हमारे जीवन में से अज्ञान का अंधकार दूर करके हमारे जीवन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करते है। गुरु अपनी ज्ञान शलाका से अपने शिष्य की अज्ञान से आवृत आंखों में ऐसा ज्ञान का अंजन लगाता है कि शिष्य को अपने जीवन का उद्देश्य व अपने भावी जीवन की भूमिका स्पष्ट नजर आने लगती है।

ज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानजिंन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येनतस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

भारतीय संस्कृति में गुरु को सर्वोपरि बताया है क्योंकि गुरु सच्चे अर्थो में हमारे पथप्रदर्शक है जो सांसारिक व आध्यात्मिक ज्ञान देकर हमे व्यक्तित्व की असीम संभावनाओं से परिचित कराता है। एक मात्र गुरु ही है जो कुसंस्कारों का परिमार्जन, सद्गुणों का संवर्धन, दुर्भावनाओं को नष्ट करके एक साधारण से व्यक्ति को महान व्यक्तित्व में **तराशने** की अदभुत क्षमता रखता है। उदाहरणार्थ – रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु को पाकर स्वामी विवेकानंद का विवेक जाग्रत हुआ। चंद्रगुप्त के गुरु चाणक्य ने एक साधारण से बालक को चक्रवर्ती सम्राट बना दिया। समर्थ गुरु रामदास के मार्गदर्शन के कारण छत्रपति शिवाजी ने हिन्दू इतिहास की दिशा ही बदल दी।

बाल्यकाल में हमारे माता पिता ही प्रथम गुरु होते है खाना पीना बोलना उठना, बैठना यानी लोक व्यवहार सिखाने वाले माता पिता भी नमन के योग्य है। पर जीवन को सार्थक व सफल बनाने के लिए जिस शिक्षा व ज्ञान की आवश्यकता होती है वह केवल और केवल सद गुरु से ही प्राप्त हो सकती है।। गुरु 'शब्द' में ही इसका अर्थ व गुरु का उद्देश्य निहित है

गुकरस्तवन्धकारस्तु.रुकार स्तेज उच्यते।
अंधकार निरोधत्वात गुरुरित्यभिधी यते ।।

'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है प्रकाश। अतः गुरु का शाब्दिक अर्थ है–जो अंधकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाये वही गुरु कहलाने का अधिकारी है।

प्राचीन काल की भांति शिक्षा आज कल भी प्राप्त की जाती है। परंतु प्राचीन शिक्षा प्रणाली व आधुनिक शिक्षा पद्धति में एक बहुत बड़ा अंतर हैआज की शिक्षा पद्धति घोर व्यावसायिक हो गई है जबकि प्राचीन गुरुकुलों में शिक्षा के साथ बालक को सामाजिक आध्यात्मिक,आर्थिक भावनात्मक दृष्टि, से भी सुदृढ़ बनाया जाता था। गुरु मानवी चेतना का मर्मज्ञ होने के कारण अपने हर आघात द्वारा शिष्य के अहंकार पर चोट करके उसके अवगुणों को दूर करके बड़े प्यार व जतन से उसके चरित्र को निर्मल बनाता था जैसे एक कुम्भकार एक मिट्टी के बर्तन को बनाते समय अंदर से हाथ का सहारा देकर बाहर से चोट दे दे कर बर्तन को सुंदर आकार देता है।

गुरु कुम्हार सीस कुम्भ है गढ़ गढ़ काढ़े खोट ।
अंतर हाथ सहार दे बाहर देवे चोट ।।

वैदिक ज्ञान निधि को एक सूत्र में पिरोने वाले वेदव्यास जी की पावन जयंती पर्व वर्तमान पीढ़ी को अपने जीवन मूल्यों से संस्कृति से जुड़े रहने का, अपने गुरुओं के प्रति सम्मान व सेवा, समर्पण, निष्ठा रखने का संदेश देता है। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्री विष्णु जी के अंशावतार माने जाने वाले वेदव्यास जी को कोटि कोटि नमन–

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यास रूपाय विष्णवे ।
नमो ब्रह्म निधये वशिष्ठाय नमो नमः

करता करे ना कर सके, गुरु करे सब होय
सात द्वीप नौ खंड में गुरु से बड़ा न कोय

मैं तो सात समुद्र की मसीह करु, लेखनी सब बदराय
सब धरती कागज करु पर, गुरु गुण लिखा ना जाय

03 जुलाई पर विशेष

अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस

जागरूकता

डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)
संरक्षक शाकाहार परिषद्
भोपाल

प्लास्टिक एक आत्मा जैसा अजर–– अमर वस्तु हैं। जो अविनाशी हैं जो एक विनाशक पदार्थ हैं .इसका वर्तमान में अंधाधुंध उपयोग के कारण हमारा जीवन अंधकारमय हो गया हैं, इसके उपयोग पर प्रतिबन्ध किया जाना बहुत आवश्यक हैं। इसके प्रतिकूल प्रभाव से सभी परिचित हैं पर इसका उपयोग एक प्रकार से प्रज्ञापराध हैं। जिससे हमारा आगामी जीवन बहुत वीभस्त होगा, इससे सुरक्षित होना ही एक मात्र विकल्प हैं।

3 जुलाई को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस, एक वैश्विक पहल है जिसका उद्देश्य प्लास्टिक बैग के उपयोग को खत्म करना है। प्लास्टिक बैग किराने की खरीदारी की सुविधा की तरह लग सकते हैं, लेकिन वे पर्यावरण पर भी भारी दबाव डालते हैं।

संगठन का उद्देश्य हमारे दैनिक उपयोग से एकल–उपयोग वाले प्लास्टिक को खत्म करना है। जीरो वेस्ट यूरोप के अनुसार, यह पाया गया कि 2010 में कुल 95.5 बिलियन कैरियर बैग में से 92 प्रतिशत यूरोपीय संघ में एकल–उपयोग थे।

जीरो वेस्ट यूरोप द्वारा शुरू किया गया, अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस 3 जुलाई को विश्व स्तर पर मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य इस गैर–बायोडिग्रेडेबल सामग्री के उपयोग के खिलाफ जागरूकता बढ़ाना है जो हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है। संगठन का उद्देश्य हमारे दैनिक उपयोग से एकल–उपयोग वाले प्लास्टिक को खत्म करना है। जीरो वेस्ट यूरोप के अनुसार , यह पाया गया कि 2010 में कुल 95.5 बिलियन कैरियर बैग में से 92 प्रतिशत यूरोपीय संघ में एकल–उपयोग थे।

इसकी स्थापना के पहले वर्ष में, दिन केवल कैटेलोनिया में चिह्नित किया गया था। एक साल बाद, जीरो वेस्ट यूरोप ने यूरोपीय संघ में अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस की शुरुआत की। उनका अभियान वर्षों में विकसित हुआ और संगठन कई देशों को एकल–उपयोग वाले प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के उपाय करने के लिए प्रेरित करने में सक्षम था।

संगठन द्वारा किए गए उपायों ने उन्हें महत्वपूर्ण परिणाम दिए हैं। प्लास्टिक बैग निर्देश यूरोपीय संघ द्वारा 2015 में अधिनियमित किया गया था। इस निर्देश का उद्देश्य ऐसे उपाय

करना था जो 2018 तक प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत को 90 बैग तक कम कर सके। यह 2025 के लिए प्रति व्यक्ति 40 प्लास्टिक बैग की खपत को और कम करने की योजना बना रहा है।

प्लास्टिक की पानी की बोतलों के उपयोग में कटौती करने के लिए हैदराबाद के सुनीत तातिनेनी और चैतन्य अयनापुडी द्वारा पानी के बक्से बनाए गए हैं। इन पानी के बक्सों की मदद से उनका लक्ष्य प्लास्टिक की पानी की बोतलों के उपयोग को 85 प्रतिशत तक खत्म करना है। उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले पानी के बक्से और बैग पर्यावरण के अनुकूल हैं और इन्हें पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है।

औसतन, प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग सिर्फ 25 मिनट के लिए किया जाता है और दुर्भाग्यवश एक प्लास्टिक को गलने में कम से कम 1000 साल लगते हैं, साथ ही, दुनिया के महासागरों और पृथ्वी को प्रदूषित करने में सिर्फ चंद मिनट लगते हैं। अधिकांश लोग इस तथ्य से अनजान हैं कि हर मिनट 10 लाख प्लास्टिक बैग का उपयोग किया जाता है। आज अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस है। जागरूकता फैलाने के लिए ये दिवस तो घोषित कर दिया गया लेकिन आप बढ़ते प्रदुषण और आने वाली पीढ़ी के लिए लगातार बढ़ते खतरे को लेकर कितना सजग हुए हैं?

बड़े-बड़े बाजारों से लेकर सब्जी मंडी में आज भी प्लास्टिक में खुले आम सामान बेचा जा रहा है। आए दिन समुद्र में बढ़ते प्लास्टिक प्रदुषण के कारण समुद्री जीवों की जान पर भी खतरा मंडरा रहा है। इंडोनेशिया एक द्वीपसमूह है जहां की जनसंख्या 260 मिलियन है। यह देश चीन के बाद सबसे ज्यादा प्लास्टिक प्रदूषण फैलाने वाला दुनिया का दूसरा देश है। जनवरी में जरनल साइंस में प्रकाशित अध्ययन में ये बात कही गई है। यहां हर साल 3.2 मिलियन टन प्लास्टिक का कचरा उत्पन्न होता है। जिसका निपटारा नहीं किया जाता। अध्ययन के मुताबिक इसमें से 1.29 मिलियन टन कचरा समुद्र में पहुंचता है।

1950 से 1970 तक प्लास्टिक का काफी कम उत्पादन किया जाता था इसलिए प्लास्टिक प्रदुषण का नियंत्रण करना आसान था। 1990 तक दो दशकों में प्लास्टिक के उत्पादन में तीन गुना बढ़ोतरी हुई। पिछले 40 वर्षों के मुकाबले वर्ष 2000 के दौरान प्लास्टिक का उत्पादन काफी ज्यादा हो गया। फलस्वरूप आज 30 करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन रोजाना होता है जो करीब पूरी आबादी के वजन के बराबर है।

प्लास्टिक के कम इस्तेमाल के लिए सरकार प्रयास कर रही है। यहां तक कि दुकानदारों से भी कहा जा रहा है कि लोगों को प्लाटिक के थैलों में सामान न दें और देशभर के स्कूलों में बच्चों को बताया जा रहा है कि इससे क्या समस्याएं हो सकती हैं। सरकार की ओर से सभी तरह के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि वह 2025 तक प्लास्टिक के 70 फीसदी कम इस्तेमाल करने संबंधी अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सके। यह बड़ा उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब लोग ये समझें कि प्लास्टिक हमारा दुश्मन है। ■

प्रभु मंदिर में आजाओ

शीलेन्द्र कुमार वशिष्ठ
स्वतंत्र लेखन
आगरा (उत्तर प्रदेश)

प्रभु मंदिर में आ जाओ।
ये भावों के भोग धरे हैं आकर भोग लगाओ।।
मैं शबरी-सी साध लिए हूँ
तन गगरी अपराध पिए हूँ
पात्र नहीं जो तुमको छू लूँ
पर विश्वास अगाध किए हूँ।
औगुन मेरे माफ करो प्रभु सिर पर हाथ फिराओ।।
प्रभु मंदिर में आ जाओ।

रूप तुम्हारा सुखकारी है
साथ तुम्हारा हितकारी है
तुम पर मेरे प्राण निछावर
तन पुलकित, मन आभारी है।
नींद चुरा लो इन नैनों में प्रभु आवास बनाओ।।
प्रभु मंदिर में आ जाओ।

इच्छाओं का अंतरूपुर हूँ
बारी-बारी देवासुर हूँ
मैं द्वन्द्वों के चक्रव्यूह में
शंख बजाने को आतुर हूँ।
मैं ही अपना युद्ध लड़ूँगा, पहले तुम मुसकाओ।।
प्रभु मंदिर में आ जाओ।

भोग लिए सुख के गलियारे
देख लिए दिन में भी तारे
साँस न टूटी, आस न छूटी
इकतारा दिन-रात पुकारे।
साथ नहीं छोड़ूँगा चाहे जग से बैर कराओ।।
प्रभु मंदिर में आ जाओ।

चलते-चलते जब रुक जाऊँ
गाते-गाते जब चुक जाऊँ
ले जाना प्रभु हाथ पकड़कर
काल बली से जब झुक जाऊँ।
स्वर्ग-नरक में बाँध न देना बेड़ा पार लगाओ।।
प्रभु मंदिर में आ जाओ।

राष्ट्र के विकास को पंख देती तकनीकी शिक्षा

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

हमारा देश प्राचीन काल से ही गणित, विज्ञान, चिकित्सा, ललित कला, खगोल विज्ञान एवं ज्योतिष विज्ञान आदि के क्षेत्रों में सदैव अग्रणी एवं उन्नत रहा था। उस समय भी भारत तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भर होकर विश्व गुरु के रूप में विश्व का नेतृत्व करता था ।भारत विश्व को गिनती सिखाने से लेकर दुनिया का सर्वोत्तम स्टील बनाकर सदियों पूर्व से विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में अपना सक्रिय योगदान देता रहा था।

ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के वर्तमान युग में देश के सामाजिक, आर्थिक, एवं औद्योगिक विकास हेतु तकनीकी शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह शिक्षा सामान्य रूप से देश के 'मानव संसाधन विकास' के लिए विभिन्न प्रकार की जनशक्ति उपलब्ध कराती है। विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में होने वाले नये नये अविष्कारों ने सामान्य जन के दैनिक जीवन को आधुनिक, सुगम और सरल बना दिया है। तकनीकी शिक्षा एक विशिष्ट प्रकार का शैक्षिक स्वरुप है जिसका व्यक्ति एवं समाज के साथ अभिन्न समन्वय होता है। तकनीकी शिक्षा व्यवहारिक ज्ञान एवं कौशल प्रदान करती है यह किसी भी शिक्षार्थी की विशेष वृति के समन्वय में ज्ञान एवं कुशलता अर्जित करने में सहायक होती है साथ ही पूर्व संग्रहित एवं नव अर्जित दक्षता का प्रयोग कर उस वृति को सुंदर ढंग से सम्पन्न करने में सक्षम होती है। किसी भी व्यवस्था के सफल संचालन हेतु ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्तियों की शिक्षा देना ही तकनीक शिक्षा कहलाती है। यह शिक्षा परंपरागत शिक्षा से नितान्त अलग है, यह शिक्षा छात्रों को ऋषि, कंप्यूटर, इंजीनियरिंग, चिकित्सा एवं ड्राइविंग आदि के क्षेत्र में कुशल बनाती है जिसके परिणाम स्वरूप योग्य ऋषक, दक्ष इन्जीनियर, कुशल डाक्टर एवं प्रशिक्षित पायलट देश को मिलते हैं।

आज हमारा भारत विकास की ओर अग्रसर है। वर्तमान में आमजन भी विद्युत, आवास, एवं अन्य सुविधाओं का उपभोग कर रहा है। ऊंचे ऊंचे भवन, चमचमाती सड़कें, जगह– जगह फ्लाईओवर एवं नदियों पर बने बड़े बड़े पुल , जो जीवन को सुगम और सरल बनाते हैं तकनीकी शिक्षा की ही देन है। सच तो यह है कि देश के विकास का मार्ग तकनीकी शिक्षा से होकर ही जाता है, जिस देश की तकनीकी शिक्षा जितनी ही उन्नत होगी वह देश उतना ही उन्नति कर सकेगा ।तकनीकी शिक्षा के माध्यम से देश के युवाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें हुनरमंद बनाया जा रहा है और देश के इंजीनियरिंग कश्वलेज अपनी इस जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहे हैं इन तकनीकी संस्थानों से निकले हुए प्रशिक्षित इंजीनियर देश के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहें हैं।

तकनीकी शिक्षा की विशेषता यह है कि इसका आधार मनोवैज्ञानिक है यह शिक्षार्थी की प्रवृत्तियों, रुचियों एवं व्यक्तित्व का ध्यान रखती है। यह शिक्षा जीवन में शिक्षा, परिवार,श्रम एवं कार्य के महत्व को उजागर करती है । इस शिक्षा का पाठ्यक्रम समय के साथ एवं सभ्यता के विकास के अनुरूप परिवर्तित होता रहता है।

तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने में कुछ समस्याएं भी आती हैं जिनका समाधान बहुत जरूरी है तभी इस शिक्षा का उद्देश्य पूरा हो पायेगा।आज के भौतिकवादी समय में समाज में केवल धन की महत्ता सर्वोपरि है, उसके मुकाबले में शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखा जाता है अतः आवश्यक है कि हम सब शारीरिक एवं मानसिक दोनों श्रम को सम्मान से देखें क्योंकि श्रम से ही धन मिलता है साथ ही अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए। भारत हिंदी भाषी देश होने के कारण यहां पर हिंदी बोलने वाले बाहुल्य में हैं परन्तु तकनीकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण विद्यार्थियों को विषय ज्ञान प्राप्त करने में अति कठिनाई का सामना करना पड़ता है इसके लिए आवश्यक है कि तकनीकी शिक्षा का माध्यम राष्ट्रीय भाषा एवं मातृभाषा भी होना चाहिए जिससे विषय पर उनकी पकड़ और भी मजबूत बन सके। ऐसा माना जाता है कि तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने वाले शिक्षार्थियों का दृष्टिकोण भौतिकवादी हो जाता है वे समाज की विभिन्न रुचियों,प्रवृत्तियों तथा आवश्यकताओं को नहीं समझ पाते हैं इस समस्या के निवारण हेतु आवश्यक है कि ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया जाए जिससे कि अपने ज्ञान को समाज के साथ एवं उनकी आवश्यकताओं के साथ समन्वित कर सके। स्वतंत्र भारत में अनगिनत तकनीक शिक्षा संस्थान है परन्तु व्यापक मांग को देखते हुए उनकी संख्या आज भी बहुत कम है अतः बहुत से इच्छुक छात्र विद्यालय की कमी के कारण प्रवेश नहीं पाते हैं । इसके लिए सरकार को और अधिक तकनीकी संस्थानों की स्थापना का प्रयास करने की आवश्यकता है। तकनीकी संस्थानों के लिए प्रशिक्षित अध्यापक भी नहीं मिल पाते हैं इससे शिक्षा के विस्तार कार्य को धक्का पहुंचता है क्योंकि अच्छे प्रशिक्षु या तो किसी उच्च संस्थान में काम करने लगते हैं या विदेश चले जाते हैं, शिक्षा को औसत विद्यार्थी अपना जीवन यापन का माध्यम बनाते हैं। इसके लिए आवश्यक है तकनीकी शिक्षा के शिक्षक को आकर्षक वेतन और अन्य सुविधाएं प्रदान की जाए जिससे एक दक्ष शिक्षक अपना ज्ञान अपने छात्रों में बांट सके संस्थान से अच्छे और योग्य छात्र निकलकर देश की सेवा में अपना योगदान दें सके। तकनीकी शिक्षा में सबसे बड़ी समस्या आती है कि प्रयोगात्मक कार्य का न होना। किताबी ज्ञान तो बच्चों को कक्षा में प्राप्त हो जाता है मगर व्यवहारिक ज्ञान नहीं प्राप्त हो पाता क्योंकि अधिकतर संस्थानों में प्रयोगशालाओं का अभाव है और यदि हैं भी तो उनमें उपकरण का अभाव है अतः हर तकनीकी संस्थान की जिम्मेदारी बनती है कि वह बच्चों को आवश्यक उपकरणों के साथ सुसज्जित प्रयोगशाला उपलब्ध कराएं। जिससे छात्रों के साथ न्याय हो सके। तकनीकी शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है कि इसको अपनाकर बेरोजगारी समस्या से निपटा जा सकता है क्योंकि यह हमारे देश में वर्तमान की ज्वलंत समस्या है। निर्माण के हर क्षेत्र में कुशल तकनीक की आवश्यकता होती है, तकनीकी शिक्षा निश्चित रूप से राष्ट्र के विकास को बढ़ावा देती है। यदि कोई देश क्षेत्र में उन्नति करता है तो इसका लाभ उसके देशवासियों को तो प्राप्त ही होता है साथ ही अन्य देशों को भी वह उपलब्ध कराकर विदेशी मुद्रा अर्जित कर अपनी आर्थिक स्थिति को और भी मजबूत बना सकता है साथ ही देश के सभी नागरिक सुखी, संपन्न, स्वाबलंबी एवं आत्मनिर्भर बन सकता है तकनीकी शिक्षा संपन्न व्यक्ति स्वयं तो उन्नति करता ही है साथ साथ अपने समाज और राष्ट्र की उन्नति कर राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बंधुत्व का साधन भी बन जाता है। कला कौशल, वाणिज्य ,व्यवसाय तथा तकनीकी इंजीनियरिंग की दृष्टि से विकसित राष्ट्र सहज ही आधुनिक विश्व के मंच पर महत्व पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। यही कारण है कि तकनीकी शिक्षा किसी भी राष्ट्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है

तकनीकी शिक्षा ज्ञान और अनुभवों से परिपूर्ण प्रशिक्षित प्रतिभा का सृजन करने का स्थिर एवं अपरंपरागत माध्यम है। अत्यंत हर्ष का विषय है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत सरकार द्वारा हजारों तकनीकी संस्थाओं को स्थापित किया जा चुका है और भविष्य में और भी संस्थान खुलने की आशा है क्योंकि इस क्षेत्र में सरकार के साथ–साथ गैरसरकारी संस्थाएं भी अपना योगदान दे रहे हैं। देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी, युवाओं में पनपती कुप्रवृत्तियों एवं असामाजिक तत्वों से निजात पाने के लिए तकनीकी शिक्षा का बहुत योगदान है। जब हर हाथ काम होगा तो कोई न बेरोजगार होगा और देश के विकास का रथ समृद्धि के मार्ग पर तीव्र गति से दौड़ेगा और हमारा देश पुनः सोने की चिड़िया बन सकेगा। ■

> **एक नया दिन, नयी ताकत और नए विचार के साथ आता है।**

16 जुलाई पर विशेष

1942 की रानी झाँसी : अरूणा आसफ अली

स्वतंत्रता संग्राम की ग्रैंड ओल्ड लेडी : अरुणा आसफ अली

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास नदेसर,
कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी

देश की आजादी में महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। कईयों ने तो अपनी जान भी गँवा दी, फिर भी महिलाओं के हौसले कम नहीं हुए। रानी चेनम्मा और रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं का उदाहरण हमारे सामने है, पर जब आजादी का ज्वार तेजी से फैला तो तमाम महिलाएं भी इसमें शामिल होती गईं। इन्हीं में से एक हैं– अरुणा आसफ अली। उनका जन्म 16 जुलाई 1909 को तत्कालीन पंजाब (अब हरियाणा) के कालका में हुआ था। लाहौर और नैनीताल से पढ़ाई पूरी करने के बाद वह शिक्षिका बन गईं और कोलकाता के गोखले मेमोरियल कॉलेज में अध्यापन कार्य करने लगीं। अध्यापन के साथ–साथ वे स्वाधीनता सम्बन्धी गतिविधियों पर भी निगाह रखती थीं और प्रेरित होती थीं। 1928 में कांग्रेसी नेता और स्वतंत्रता सेनानी आसफ अली से शादी करने के बाद अरुणा गांगुली भी पार्टी सम्बन्धी गतिविधियों और स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं। शादी के बाद उनका नाम अरुणा आसफ अली हो गया। अरुणा आरंभ से ही तेज–तर्रार थीं, अतः उनसे अंग्रेजी हुकूमत को शीघ्र ही खतरा महसूस होने लगा। अरुणा आसफ अली 'नमक कानून तोड़ो आन्दोलन' के दौरान जेल भी गयीं। 1931 में जब गाँधी–इरविन समझौते के तहत सभी राजनीतिक बंदियों को छोड़ दिया गया, लेकिन अरुणा आसफ अली को नहीं छोड़ा गया। इस पर महिला कैदियों ने उनकी रिहाई न होने तक जेल परिसर छोड़ने से इंकार कर दिया। अंततः अरुणा की लोकप्रियता को देखते हुए ज्यादा माहौल न बिगड़े, अंग्रेजों ने अरुणा को भी रिहा कर दिया। अपने तीखे तेवरों के लिए मशहूर अरुणा ने अंग्रेजों के विरुद्ध कोई भी मौका हाथ से न जाने दिया। 1932 में उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और तिहाड़ जेल, दिल्ली में रखा गया। पर अरुणा आसफ अली कहाँ शांति से बैठने वाली थीं, वहाँ उन्होंने राजनीतिक कैदियों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार के खिलाफ भूख हड़ताल आरंभ कर दी, जिसके चलते अंग्रेजी हुकूमत को जेल के हालात सुधारने को मजबूर होना पड़ा। रिहाई के बाद भी अरुणा आजादी के आन्दोलन में सक्रिय बनी रहीं।

8 अगस्त 1942 को जब बम्बई अधिवेशन में गाँधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन की उद्घोषणा करते हुए करो या मरो का नारा दिया तो अरुणा आसफ अली ने भी इसे उसी अंदाज में ग्रहण किया। अंग्रेजी हुकूमत ने इस आन्दोलन से डर कर सभी प्रमुख नेताओं को तुरंत गिरफ्तार कर लिया। पर अरुणा आसफ अली तो गजब की दिलेर निकलीं, वे अंग्रेजों के हाथ तक नहीं आईं। अगले दिन नौ अगस्त 1942 को उन्होंने अंग्रेजों के सभी इंतजामों को धता बताते हुए शेष अधिवेशन की अध्यक्षता की और मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में तिरंगा झंडा फहरा कर भारत छोड़ो आन्दोलन का शंखनाद कर अंग्रेजी हुकूमत को बड़ी चुनौती दी। अंग्रेजी हुकूमत ने अधिवेशन में शामिल लोगों पर गोलियां तक बरसाईं पर अरुणा तो मानो जान हथेली पर लेकर निकली थीं। इस घटना से वे 1942 के आन्दोलन में एक नायिका के रूप में उभर कर सामने आईं। अरुणा आसफ अली की इस दिलेरी और 1942 में उनकी सक्रिय भूमिका के कारण 'दैनिक ट्रिब्यून' ने उन्हें '1942 की रानी झाँसी' नाम दिया। गौरतलब है कि इस आन्दोलन के दौरान जब सभी शीर्ष नेता गिरफ्तार या नजरबन्द हो चुके थे, अरुणा आसफ अली व सुचेता कृपलानी ने अन्य आन्दोलनकारियों के साथ भूमिगत होकर आन्दोलन को आगे बढ़ाया तो ऊषा मेहता ने इस दौर में भूमिगत रहकर कांग्रेस-रेडियो से प्रसारण किया। अंग्रेजी हुकूमत अरुणा आसफ अली से इतनी भयग्रस्त चुकी थी कि उन्हें पकड़वाने वाले को पाँच हजार रुपए का इनाम देने की घोषणा की। उनकी सम्पति को जब्त कर नीलाम तक कर दिया गया। इसके बावजूद अरुणा ने हिम्मत नहीं हारी। इस दौरान उन्होंने राम मनोहर लोहिया के साथ मिलकर कांग्रेस पार्टी की मासिक पत्रिका 'इन्कलाब' का संपादन भी किया। 1944 के संस्करण में उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे हिंसा और अहिंसा के वाद-विवाद में न पड़कर क्रांति में शामिल हों और देश को आजाद कराएँ। इस बीच उनका स्वास्थ्य भी खराब हो गया तो गाँधी जी ने उन्हें एक पत्र लिखा कि वह समर्पण कर दें ताकि इनाम की राशि को हरिजनों के कल्याण के लिए इस्तेमाल किया जा सके। अरुणा को गाँधी जी का यह प्रस्ताव तात्कालिक रूप से ठीक नहीं लगा और उन्होंने समर्पण करने से मना कर दिया। अंततः अंग्रेजी हुकूमत द्वारा 1946 में गिरफ्तारी वारंट वापस लिए जाने के बाद ही वह लोगों के सामने आईं।

आजादी के बाद भी अरुणा आसफ अली राजनीति और समाज-सेवा में सक्रिय रहीं। 1948 में वे कांग्रेस छोड़कर नए दल सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हुईं तो बाद में भाकपा में शामिल हो गईं। 1956 में वे भाकपा से भी अलग हो गईं। अपनी लोकप्रियता की बदौलत 1958 में वे दिल्ली की प्रथम महापौर निर्वाचित हुईं। 1964 में वे पुनः कांग्रेस में शामिल हुईं, पर सक्रिय राजनीति से किनारा करना आरंभ कर दिया। 1964 में ही उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन शांति पुरस्कार भी मिला। राष्ट्र निर्माण में जीवनपर्यन्त योगदान के लिए उन्हें 1992 में भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया। अरुणा आसफ अली की जीवनशैली काफी अलग थी। वे जनता से जुड़े मुद्दों पर काफी संवेदनशील थीं। यहाँ तक कि अपनी उम्र के आठवें दशक में भी उन्होंने सार्वजनिक परिवहन से सफर जारी रखा। इस सम्बन्ध में एक घटना को उद्धरित करना उचित होगा। एक बार अरुणा आसफ अली दिल्ली में यात्रियों से ठसाठस भरी बस में सवार थीं। बस में कोई सीट खाली नहीं थी। उसी बस में आधुनिक जीवनशैली की एक युवा महिला भी सवार थी। एक आदमी ने युवा महिला की नजरों में चढ़ने के लिए अपनी सीट उसे दे दी लेकिन उस महिला ने अपनी सीट अरुणा को दे दी। ऐसे में वह व्यक्ति भड़क गया गया और युवा महिला से कहा यह सीट मैंने आपके लिए खाली की थी बहन। इसके जवाब में अरुणा आसफ अली तुरंत बोलीं– "माँ को कभी न भूलो क्योंकि माँ का हक बहन से पहले होता है।" इस बात को सुनकर वह व्यक्ति काफी शर्मसार हो गया। जीवन को अपने ही अंदाज में भरपूर जीने वालीं अरुणा आसफ अली नारी-सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक मील का पत्थर हैं, जिनके योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि 29 जुलाई 1996 को उनके निधन पश्चात् अगले वर्ष ही 1997 में उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया और उसके अगले वर्ष 1998 में उनकी स्मृति में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया। आज अरुणा आसफ अली भले ही हमारे बीच नहीं हैं, पर उनके कार्य और उनका अंदाज आने वाली पीढ़ियों को सदैव रास्ता दिखाते रहेंगें। उन्हें यूँ ही स्वतंत्रता संग्राम की "ग्रैंड ओल्ड लेडी" नहीं कहा जाता है। ■

जब सारी दुनिया कहती है हार मान लो, तब दिल धीरे से कहता है कि एक बार और कोशिश कर लो क्योंकि आप ही इस काम को कर सकते हो।

.....गतांक से आगे

वैदिक विमान विज्ञान ऋषि भरद्वाज के विशेष संदर्भ में

डॉ. विदुषी शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अकादमिक काउंसलर, IGNOU
शोध निर्देशक, JJTU
विशेषज्ञ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार
OSD , (Officer on Special Duty) NIOS
दिल्ली

आकाश मार्ग तथा उनके आवर्तो का वर्णन निम्नानुसार है –

10 km (1) रेखा पथ – शक्त्यावृत्त -whirlpool of energy

50 km (2) – वातावृत्त – wind

60 km (3) कक्ष पथ – किरणावृत्त – solar rays

80 km (4) शक्तिपथ – सत्यावृत्त – cold current

वैमानिक का खाद्य : इसमें किस ऋतु में किस प्रकार का अन्न हो इसका वर्णन है। उस समय के विमान आज से कुछ भिन्न थे। आज के विमान की उतरने की जगह निश्चित है पर उस समय विमान कहीं भी उतर सकते थे। अतः युद्ध के दौरान जंगल में उतरना पड़ा तो जीवन निर्वाह कैसे करना, इसीलिए १00 वनस्पतियों का वर्णन दिया है जिनके सहारे दो तीन माह जीवन चलाया जा सकता है।

एक और महत्वपूर्ण बात वैमानिक शास्त्र में कही गयी है कि वैमानिक को दिन में ५ बार भोजन करना चाहिए। उसे कभी विमान खाली पेट नहीं उड़ाना चाहिए। 1990 में अमेरिकी वायुसेना ने 10 वर्ष के निरीक्षण के बाद ऐसा ही निष्कर्ष निकाला है।

विमान के यन्त्र : विमान शास्त्र में 31 प्रकार के यंत्र तथा उनका विमान में निश्चित स्थान का वर्णन मिलता है। इन यंत्रों का कार्य क्या है इसका भी वर्णन किया गया है। कुछ यंत्रों की जानकारी निम्नानुसार है–

(१) **विश्व क्रिया दर्पण** – इस यंत्र के द्वारा विमान के आसपास चलने वाली गति–विधियों का दर्शन वैमानिक को विमान के अंदर होता था, इसे बनाने में अभ्रक तथा पारा आदि का प्रयोग होता था ।

(२) **परिवेष क्रिया यंत्र** – इसमें स्वाचालित यंत्र वैमानिक यंत्र वैमानिक का वर्णन है ।

(३) **शब्दाकर्षण मंत्र** – इस यंत्र के द्वारा २६ किमी. क्षेत्र की आवाज सुनी जा सकती थी तथा पक्षियों की आवाज आदि सुनने से विमान को दुर्घटना से बचाया जा सकता था ।

(४) **गुह गर्भ यंत्र** – इस यंत्र के द्वारा जमीन के अन्दर विस्फोटक खोजने में सफलता मिलती है ।

(५) **शक्त्याकर्षण यंत्र** – विषैली किरणों को आकर्षित कर उन्हें उष्णता में परिवर्तित करना और उष्णता के वातावरण में छोड़ना।

(६) **दिशा दर्शी यंत्र** – दिशा दिखाने वाला यंत्र

(७) **वक्र प्रसारण यंत्र** – इस यंत्र के द्वारा शत्रु विमान अचानक सामने आ गया, तो उसी समय पीछे मुड़ना संभव होता था।

(८) **अपस्मार यंत्र** – युद्ध के समय इस यंत्र से विषैली गैस छोड़ी जाती थी।

(९) **तमोगर्भ यंत्र** – इस यंत्र के द्वारा शत्रु युद्ध के समय विमान को छिपाना संभव था। तथा इसके निर्माण में तमोगर्भ लौह प्रमुख घटक रहता था।

ऊर्जा स्रोत– विमान को चलाने के लिए चार प्रकार के ऊर्जा स्रोतों का महर्षि भरद्वाज उल्लेख करते हैं।

(१) वनस्पति तेल जो पेट्रोल की भाँति काम करता था।

(२) **पारे की भाप** – प्राचीन शास्त्रों में इसका शक्ति के रूप में उपयोग किए जाने का वर्णन है।

इस के द्वारा अमेरिका में विमान उड़ाने का प्रयोग हुआ, पर वह ऊपर गया, तब विस्फोट हो गया। परन्तु यह तो सिद्ध हुआ कि पारे की भाप का ऊर्जा की तरह प्रयोग हो सकता है। आवश्यकता अधिक निर्दोष प्रयोग करने की है।

(३) **सौर ऊर्जा** – इसके द्वारा भी विमान चलता था। ग्रहण कर विमान उड़ना जैसे समुद्र में पाल खोलने पर नाव हवा के सहारे तैरता है इसी प्रकार अंतरिक्ष में विमान वातावरण से शक्ति ग्रहण कर चलता रहेगा। अमेरिका में इस दिशा में प्रयत्न चल रहे हैं। यह वर्णन बताता है कि ऊर्जा स्रोत के रूप में प्राचीन भारत में कितना व्यापक प्रचार हुआ था।

विमान के प्रकार : विमान विद्या के पूर्व आचार्य युग के अनुसार विमानों का वर्णन करते हैं । मंत्रिका प्रकार के विमान जिसमें भौतिक एवं मानसिक शक्तियों के सम्मिश्रण की प्रक्रिया रहती थी वह सतयुग और त्रेता युग में सम्भव था ।

इनके ५६ प्रकार बताए गए हैं तथा कलियुग में कृतिका प्रकार के यंत्र चालित विमान थे इनके २५ प्रकार बताए हैं। इनमें शकुन, रुक्म, हंस, पुष्कर, त्रिपुर आदि प्रमुख थे।

उपर्युक्त वर्णन पढ़ने पर कुछ समस्याएँ व प्रश्न हमारे सामने आकर खड़े होते हैं। समस्या यह है आज के विज्ञान की शब्दावली व नियमावली से हम परिचित हैं, परन्तु प्राचीन विज्ञान, जो संस्कृत में अभिव्यक्त हुआ है, उसकी शब्दावली, उनका अर्थ तथा नियमावली हम नहीं जानते। अतः उनमें निहित रहस्य को अनावृत्त करना पड़ेगा। दूसरा, प्राचीन काल में गलत व्यक्ति के हाथ में विद्या न जाए , इस हेतु बात को अप्रत्यक्ष ढंग से, गूढ़ रूप में, अलंकारिक रूप में कहने की पद्धति थी। अतः उसको भी समझने के लिए ऐसे लोगों के इस विषय में आगे प्रयत्न करने की आवश्यकता है, जो संस्कृत भी जानते हों तथा विज्ञान भी जानते हों ।

विमान शास्त्र में वर्णित धातुएं : दूसरा प्रश्न उठता है कि क्या विमान शास्त्र ग्रंथ का कोई ऐसा भाग है जिसे प्रारंभिक तौर पर प्रयोग द्वज्ञरा सिद्ध किया जा सके। यदि कोई ऐसा भाग है, तो क्या इस दिशा में कुछ प्रयोग हुए हैं। क्या उनमें कुछ सफलता मिली है?

सौभाग्य से इन प्रश्नों के उत्तर हाँ में दिए जा सकते हैं। हैदराबाद के डॉ. श्रीराम प्रभु ने वैमानिक शास्त्र ग्रंथ के यंत्राधिकरण को देखा, तो उसमें वर्णित ३१ यंत्रों में कुछ यंत्रों की उन्होंने पहचान की तथा इन यंत्रों को बनाने वाली मिश्र धातुओं का निर्माण सम्भव है या नहीं, इस हेतु प्रयोग करने का विचार उनके मन में आया। प्रयोग हेतु डॉ. प्रभु तथा उनके साथियों ने हैदराबाद स्थित बी. एम. बिरला साइंस सेन्टर के सहयोग से प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित धातुएं, दर्पण आदि का निर्माण प्रयोगशाला में करने का प्रकल्प किया और उसके परिणाम आशास्पद हैं।

अपने प्रयोगों के आधार पर प्राचीन ग्रंथ में वर्णित वर्णन के आधार पर दुनिया में अनुपलब्ध कुछ धातुएं बनाने में सफलता उन्हें मिली है।

प्रथम धातु है तमोगर्भ लौह।

विमान शास्त्र में वर्णन है कि यह विमान अदृश्य करने के काम आता है। इस पर प्रकाश छोड़ने से ७५ से ८० प्रतिशत प्रकाश को सोख लेता है। यह धातु रंग में काली तथा शीशे से कठोर तथा कान्सन्ट्रेटेड सल्फ्यूरिक एसिड में भी नहीं गलती।

दूसरी धातु जो बनाई है, उसका नाम है पंच लौह।

यह रंग में स्वर्ण जैसा है तथा कठोर व भारी है। ताँबा आधारित इस मिश्र धातु की विशेषता यह है कि इसमें सीसे का प्रमाण ७.९५ प्रतिशत है, जबकि अमेरिकन सोसायटी ऑफ मेटल्स ने कॉपर बेस्ड मिश्र धातु में सीसे का अधिकतम प्रमाण ०.३५ से ३ प्रतिशत संभव है यह माना है । इस प्रकार ७.९५ सीसे के मिश्रण वाली यह धातु अनोखी है।

तीसरी धातु है आरर : यह ताँबा आधारित मिश्र धातु है, जो रंग में पीली और कठोर तथा हल्की है। इस धातु में तमेपेजंदबम जव उवपेजनतम का गुण है। बी. एम. बिरला साइंस सेन्टर के डायरेक्टर डॉ. बी. जी. सिद्धार्थ ने उन धातुओं को बनाने में सफलता की जानकारी एक पत्रकार परिषद में देते हुए बताया कि इन धातुओं को बनाने में खनिजों के साथ विभिन्न औषधियाँ, पत्ते, गोंद , पेड़ की छाल, आदि का भी उपयोग होता है। इस कारण जहाँ इनकी लागत कम आती है, वहीं कुछ विशेष गुण भी उत्पन्न होते हैं। उन्होनें कहा कि ग्रंथ में वर्णित अन्य धातुओं का निर्माण और उस हेतु आवश्यक साधनों की दिशा में देश के नीति निर्धारक सोचेंगे, तो यह देश के भविष्य की दृष्टि से अच्छा होगा।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

.....गतांक से आगे

सुंदरकाण्ड में निहित प्रतीकार्थ की सुंदरता

डॉ. शकुंतला कालरा
एसोसियेट प्रोफेसर
मैत्रेयीकॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

माँ सीता का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। उन्हें बताते हैं कि लक्ष्मण सहित राम कुशल हैं किंतु आपके दुःख से अत्यंत दुःखी हैं। वे आपको आपसे भी अधिक स्नेह करते हैं –

जनि जननि मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेम राम के दूना।।

5/14/5

तुलसीदास यहाँ कहना चाहते हैं कि केवल भक्त ही भगवान को प्रेम नहीं करता भगवान भी भक्त को उतना ही प्रेम करते हैं। गीता में भगवान ने स्पष्ट घोषणा की है कि जो मुझे जिस भाव से भजते हैं मैं भी उन्हें उसी प्रकार भजता हूँ –

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथेव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। *(गीता 4/11 श्लोक)*

कृष्ण सखा उद्धव कृष्ण को गोपियों के प्रेम में विह्वल देखते हैं। माता यशोदा और नंदबाबा की याद में आँसू बहाता देखकर उद्धव को आश्चर्य होता है। उसका आश्चर्य देखकर कृष्ण उन्हें ब्रज में भेजते हैं जहाँ उद्धव को कृष्ण के प्रेम स्वरूप के दर्शन होते हैं। उन्हें विश्वास हो जाता है केवल गोपियाँ ही नहीं, कालिंदी ही नहीं, गाएँ और बछड़े ही नहीं, कृष्ण भी उनके वियोग में उतने ही दुःखी हैं।

इस तरह हनुमान जी प्रभु राम के पास सीता का संदेश लेकर आते हैं। हनुमान उन्हें बताते हैं कि सीता जी कैसे अशोकवाटिका में रो रही थीं। इसे सुनते ही प्रभु की आँखों में आँसू आ गए –

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना।
भरि आए जल राजिव नयना।। *5/32/1*

हनुमान प्रभु का आँखों में आँसू देखकर कहते हैं अब आप शीघ्र सीता की रक्षा के लिए उपाय कीजिए। हनुमान जी के वचन सुनकर राम गद्‌गद् हो जाते हैं और कहते हैं कि हे हनुमान मैं तुम्हारे ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता और न होना चाहता हूँ क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम पर कोई संकट आए और मैं तुम्हारी सहायता करके उस ऋण से मुक्त होऊँ। इस प्रसंग को कहते–कहते भगवान शंकर रस में डूब जाते हैं और कहते हैं –

सह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोई पावा।।

5/34/2

तुलसीदास ने इस कांड की कथा–श्रवण की यही फलश्रुति कही है। हनुमान जी को माता सीता से इसी भक्ति का आशीर्वाद मिलता है –

अजर अमर गुननिधि सुन होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।

5/17/2

समग्रतः कहा जा सकता है कि सुंदरकाण्ड में निष्काम हनुमान जी को भक्ति का वरदान मिलता है और विभीषण को धर्म और अर्थ की प्राप्ति होती है। सकामी और निष्कामी सबके जीवन में सब 'सुन्दर' घटित होता है। सीता को राम का संदेश मिलता है। राम को सीता का संदेश मिलता है। इस तरह 'सुन्दरकांड' सबकी सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाला है। हनुमान इस कांड में सबकी कामना पूर्ति में सहायक के रूप में निरूपित हुए हैं। इसके अतिरिक्त इस कांड की प्रधान लीला 'सुन्दर' शिखर से प्रारंभ हुई । अतः इस का कारण भी इस नामकरण 'सुंदरकांड' पड़ा।

स्थायी स्तम्भ

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
भू–वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार, पटना

पर्यावरण चिन्तन 6

प्रकृति–प्रेमी और पर्यावरण–हितैषी आवाम के समक्ष मेरा एक प्रश्न है कि पानी को लेकर हाय तौबा क्यों?

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है, जिसपर जीवन–तत्त्व पानी,पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। पूरी पृथ्वी का तीन भाग,सर्वविदित है। हाँ,पेयजल का कुछ किल्लतध्संकट इन दिनों विराजमान हो गया है। वह भी मानवजनित, खासकर गर्मी के मौसम में इसे मानने को मजबूर होना पड़ा है।

पेयजल का मुख्य स्रोत – *भूगर्भीय जल,वर्षा जल और हिमनद (ग्लेशियर) है। इनके संकट का मुख्य कारण– जनसंख्या में अनायास वृद्धि, खेती–सिंचाई और औद्योगिकी में अप्रबन्धित उपयोग एवं इसका व्यापारीकरण हैं। साथ ही इन दिनों भूगर्भीय जल का अतिदोहन, वर्षा जल का असंचयन और हिमनद जल जो नदी, झील, झरना में निस्सृत होता, को प्रदूषित करना संकट को आमंत्रण देना जैसा है।*

सम्प्रति खेती–सिंचाई और औद्योगिकी उपयोग को छोड़कर गहराई से अवलोकन किया जाय तो पता चलेगा कि हम स्वयं पानी, खासकर भूगर्भीय जल कितना बर्बाद कर रहे हैं और कितना हायतौबा मचा रहे हैं। एक कहावत है कि 'प्रकृति–प्रदत्त मुफ्त का धन दुरुपयोग का सबब बनता है।' कैसे? आइये हम एक– एक कर गिनती करें–

(1). प्रत्येक शहर में, खासकर महानगरों और राज्य के राजधानियों में एक नहीं सैकड़ों मोटरगैरेज हैं, जहाँ बेहिचक– बेहिसाब भूगर्भीय जल का औसतन कम से कम हजारों लीटर एक वाहन की धुलाई में प्रतिदिन खर्च होता है। वैज्ञानिक युग है,सूखी धुलाई (ड्राइ क्लीनिक) की अनिवार्यता होनी चाहिये। अरबों लीटर भूगर्भीय जल की बचत होगी जिसका सही उपयोग पेयजल की आपूर्ति में कर सकते हैं।

(2). भारतीय रेल के लाखों कोच/डिब्बों की रोज धुलाई की जाती है जिसमें अधिकांश:भूजल का उपयोग होता है। यहाँ भी 'सूखी–धुलाई' की व्यवस्था की जा सकती है, जिससे अरबों लीटर पानी की बचत प्रतिदिन हो सकती है।

(3). मिनरल वाटर–सुरसाकाय एवं फैशनपरस्त उद्योग है। लागत कम, लाभ बहुत ज्यादा। एक लीटर तैयार करने में लगभग छह रु. व्यय होता है और वह बीस रुपये में बिकता है। लेकिन इसमें लगभग तीन से चार लीटर पानी बर्बाद होता है।कमी का यह अविवेकी कारण संकट उत्पन्न करता है। साथ ही पानी का नैसर्गिक तत्वों का ह्रास हो जाता है, यानी पानी कमजोर हो जाता है। अनहद मुनाफे के व्यापार में जितना भूगर्भीय जल बर्बाद करो उतना मुनाफा। इसमें प्रतिदिन पूरे देश में लगभग अरबों लीटर पानी बर्बाद होता है। इस व्यापार में पारदर्शिता मुश्किल है।

(4). एक व्यक्ति को कम से 135 लीटर चाहिये। लेकिन शहर में एक व्यक्ति लगभग 250 से 350 लीटर अपने उपयोग में लाता है। यानी लगभग दुगुना पानी की प्रतिदिन बर्बादी।

(5). शहरीकरण/महानगरीकरण के कारण वर्षा का पानी जमीन के अन्दर नहीं जा पाता, जिससे भूगर्भीय पुनर्भरण नहीं हो पाता। पेयजल–संकट का यह एक सबसे बड़ा मानवजनित कारण है। प्रस्तावना में इतना काफी है यह समझना कि पानी को लेकर हम कहाँ हैं, किस परिस्थिति में हैं? प्रश्न आसान नहीं है। इसे कलयुगी 'यक्षप्रश्न' मानिये। पानी जीवन–तत्त्व है। पेयजल संकट निजी संकट है।

प्रत्येक को युधिष्ठिर बनना होगा। पानी का भी अपना पानी है। रहिमन ने भी कहा है– 'पानी बिन सब सून', और मैं भी गजल के मतला में कहने मजबूर हूँ–

पानी का पानी बना रहे सोचिये कैसे

दरिया में पानी सदा रहे सोचिये कैसे

यहाँ 'दरिया' का एक आशय आपका अपना विवेक अधिकार,नियंत्रण और संयम से है।

क्रमशः

रहस्यमयी जगन्नथ मंदिर की रथयात्रा

मधुबाला शांडिल्य
गोंड्डा, झारखंड

1, यूं तो भारत उत्सवों और संस्कृति का देश है। यहां हर पर्व त्यौहार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। उसी में एक है पुरी की जगन्नाथ रथयात्रा। अपने आप में कई रहस्यों को समेटे चार धामों में से एक है पुरी का जगन्नाथ मंदिर। यह मंदिर वैष्णव संप्रदाय का मंदिर है जो भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है।

2, जगन्नाथ शब्द का अर्थ 'जगत के स्वामी' से होता है। इनकी नगरी ही 'जगन्नाथपुरी' या 'पुरी' कहलाती है। यह भगवान जगन्नाथ की मुख्य लीला की भूमि उड़िसा में स्थित है। इसे 'पुरूषोत्तम पुरी' के नाम से भी जाना जाता है। जगन्नाथ जी का एक और प्रतीक राधा और कृष्ण की युगल जोड़ी के रूप में भी जाना जाता है। उड़ीसा में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और बहन सुभद्रा के काष्ठ की अर्धनिर्मित मूर्तियां स्थापित है। जिसका निर्माण राजा इन्द्र/दुम्न ने किया था।

3,, भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को आरंभ हो कर दशमी तिथि को समाप्त होती है। रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ साल में एक बार जनमानस के बीच जाते हैं। रथयात्रा के दौरान भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और बहन सुभद्रा अपने मौसी मां अथवा गुंडिचा देवी के पास सात दिनों के लिए रुकते हैं और वहां विश्राम करते हैं । इसलिए इसका महत्व बहुत बढ़ जाता है। रथयात्रा में सबसे आगे ताल ध्वज पर श्री बलराम, उसके पीछे पद्म ध्वज रथ पर बहन सुभद्रा व सुदर्शन चक्र और अंत में गरुण ध्वज पर श्री जगन्नाथ जी सबसे पीछे चलते हैं।

4, भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा बेहद खास होती है। रथयात्रा की तैयारी हर साल बसंत पंचमी से शुरू हो जाती है। खास बात यह है कि इसको बनाने में किसी भी प्रकार के धातु का प्रयोग नहीं किया जाता है। रथ की लकड़ी प्राप्त करने के लिए स्वस्थ और शुभ पेड़ की पहचान की जाती है। जगन्नाथ जी का रथ 16 पहियों का बना होता है और इसमें लकड़ी के 332 टुकड़ों का प्रयोग किया जाता है। इसकी ऊंचाई 45 फीट होती है। भगवान जगन्नाथ जी के रथ का रंग लाल और पीला होता है। रथ का निर्माण कार्य अक्षय तृतीया के दिन से आरंभ हो जाता है। इनका रथ बाकी दो रथों से आकार में बड़ा होता है। इनके रथ पर हनुमान जी और नृसिंह भगवान का प्रतीक अंकित रहता है। बहन सुभद्रा के रथ की ऊंचाई 43 फीट होती है। इनके रथ को सजाने में मुख्य रूप से काले रंग का प्रयोग होता है। भगवान बलराम जी के रथ की ऊंचाई 44 फीट की होती है। इनके रथ में नीले रंग का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।

5, पुराणों के अनुसार मूर्तियों का निर्माण राजा नरेश इन्द्र/दुम्न द्वारा करवाया जाता है। मान्यता है कि राजा के सपने में आकर भगवान ने उन्हें मूर्तियां बनाने का आदेश दिया। जब अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण का अंतिम संस्कार किया तो उनकी आत्मा नहीं जल सकी। उनकी आत्मा जीवित मिली तब अर्जुन ने उनकी आत्मा को जल में विसर्जित कर दिया। यही आत्मा जब नदी के मार्ग से बहकर पुरी पहूंची तो श्रीकृष्ण ने वहां के राजा को स्वप्न में अपनी मुर्ति निर्माण का आदेश दिया। राजा भगवान विष्णु के परम भक्त थे। मंदिर का निर्माण करीब 1000 बर्ष पूर्व करवाया गया था।

6, पुराणों के अनुसार, जगन्नाथपुरी को धरती का वैकुंठ धाम माना जाता है क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण यहां सदेह उपस्थित माने जाते हैं। पुरी को जगन्नाथ के प्रतीकात्मक निधन और पुर्नजन्म का प्रतीक माना जाता है। भगवान जगन्नाथ 'सबर' जाती के अराध्य देव माने जाते हैं।

मान्यता के अनुसार, जगन्नाथ मंदिर के गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां स्थापित हैं। हर 12 साल में मूर्तियों को बदल दिया जाता है। पुराने मूर्तियों से ब्रह्म पदार्थ को निकाल कर नई मूर्तियों में डाल दिया जाता है। इस ब्रह्म पदार्थ को श्रीकृष्ण का हृदय माना जाता है। जब भी इन मूर्तियों को निकाला जाता है उस समय पूरे शहर की बिजली बंद कर दी जाती है। इस वक्त मंदिर की सुरक्षा सीआरपीएफ के हवाले कर दी जाती है। इस वक्त मंदिर में किसी का भी प्रवेश वर्जित होता है। मूर्ति बदलने के दौरान सिर्फ एक पुजारी को ही मंदिर में जाने की अनुमति होती है। इसके लिए पुजारी के हाथों पर दस्ताने पहनाए जाते हैं और अंधेरा होने के बावजूद आंखों पर पट्टी बांधी जाती हैं ताकि पुजारी भी इस ब्रह्म पदार्थ को ना देख सके। ब्रह्म पदार्थ को लेकर मान्यता है कि जो भी इसे देखेगा उसकी मौत तुरंत हो जाएगी। पुजारी बताते हैं कि ब्रह्म पदार्थ को छुने पर कुछ उछलता हुआ सा प्रतीत होता है।

7, जगन्नाथ रथयात्रा को देखने के लिए लोग देश से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी आते हैं। जगन्नाथ भगवान की महिमा ऐसी है कि इनके रथ मात्र को देख लेने से जीवन के सारे पाप धुल जाते हैं। कहा जाता है कि भगवान विष्णु को खिचड़ी का भोग बड़ा ही प्रिय है। इसके पीछे भी एक कहानी बताई गई है।

कर्मा बाई भगवान जगन्नाथ की एक परम उपासक भक्त थीं। उनकी कोई भी संतान नहीं थी। वह हर रोज भगवान जगन्नाथ को भोग लगाती थी। एक दिन उन्होंने फल मिठाई भोग लगाने की सोची लेकिन उनके मन में शंका थी कि क्या यह भोग उनको पसंद आएगा भी या नहीं। भगवान अपने भक्त के मन को भांप गये और खुद उनके सामने प्रकट हो कर भूख लगने की बात कही। कर्मा बाई ने झटपट खिचड़ी बनाई दी। भगवान खिचड़ी खा कर बहुत प्रसन्न हुए। भगवान ने रोज आ कर खिचड़ी खाने की इच्छा जताई। एक दिन एक महात्मा ने कर्मा बाई को बिना स्नान किए भोग बनाने और लगाने से मना किया। दुसरे दिन कर्मा बाई स्नान कर भोग बनाने की वजह से देरी हो गई। तभी भगवान वहां प्रकट हो कर बोले–– 'जल्दी करो मां मंदिर के कपाट खुल जाएंगे'। जगन्नाथ जी जल्दी–जल्दी खिचड़ी खा कर बिना मूंह पोछे मंदिर की तरफ दौड़ पड़े। जिसकी वजह से उनके मूंह पर जूठन लगी रह गई। पुजारी जी के पट खोलने पर भगवान के मुख पर खिचड़ी देख सभी आश्चर्यचकित हो गये। तब जगन्नाथ जी ने सभी बातें बता दी।

8, पुरी का जगन्नाथ मंदिर अपने आप में कई रहस्यों को समेटे हुए है:––

' सिंहद्वार के अंदर समुद्र के लहरों की आवाज सुनाई नहीं देती जबकि सिंहद्वार से बाहर निकलने पर लहरों की आवाज साफ सुनी जा सकती है। चिताओं के जलने का गंध भी सिंहद्वार के बाहर महसूस किया जा सकता है जबकि अंदर ये गंध आना बंद हो जाता है।

' इस मंदिर के उपर से कोई भी पंक्षी उड़ते नजर नहीं आते और ना ही मंदिर के गुंबद पर बैठता कोई पंक्षी नजर आता है।

' जगन्नाथ मंदिर की ऊंचाई लगभग 1000 फीट है। मंदिर के उपर से कोई भी हवाई जहाज नहीं उड़ते। क्योंकि पुरी किसी भी उड़ान मार्ग के अंतर्गत नहीं आते और ऐसा नीलचक्र की उपस्थिति के कारण होता है। नीलचक्र एक अष्ठ धातु चक्र हैं जिसे जगन्नाथ मंदिर के उपर रखा गया है। माना जाता है कि यह धातु वायरलेस संचार को अवरूद्ध करती है।

' माना जाता है कि भगवान जगन्नाथ जी को सुभद्रा और बलभद्र जी के साथ मंदिर से बाहर लाकर स्नान वेदी पर पूरे पारंपरिक तरीके से शुद्ध जल से भरे 108 घड़ों से स्नान कराया जाता है। इसके बाद ही इसे श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए सजाया जाता है।

' जगन्नाथ मंदिर भारत का एकलौता ऐसा मंदिर है जिसके गुंबद का ध्वज प्रतिदिन बदला जाता है। मान्यता है कि अगर एक भी दिन ध्वज नहीं बदला गया तो मंदिर 18 बर्षो के लिए बंद हो जाएगा।

यहां का प्रसाद भी अनोखे तरीकों से बनाया जाता है। लकड़ी के चुल्हे पर 7 बर्तन एक साथ एक दूसरे के उपर रखें जाते हैं। इस प्रक्रिया में सबसे उपर रखी सामाग्री सबसे पहले पकती है फिर

धीरे धीरे नीचे के रखें बर्तनों में सामाग्री पकती है। इस महाप्रसाद को बनाने में तकरीबन 800 लोगों की जरूरत होती है। यह प्रसाद भक्तों के बीच गोपाल भोग के रुप में बांटा जाता है। मान्यता है कि यहां का प्रसाद कभी नहीं घटता। साल भर के लिए यहां का भंडार भरा रहता है।

' इस मंदिर के गुंबद का ध्वज सदैव हवा के विपरित दिशा में लहराता है।

' मंदिर पर लगे सुदर्शन चक्र मंदिर परिसर में कहीं से भी खड़े हो कर देखने पर सुदर्शन चक्र आपको अपने सामने से ही लगा हुआ दिखेगा।

' मूर्ति में उपस्थित ब्रह्म पदार्थ का हर बारह साल के बाद नई मूर्ति में डाल देना।

' भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और बलभद्र जी, तीनों के मूर्तियों में से किसी के भी हाथ,पैर और पंजे नहीं होते। इनकी मूर्तियों को नीम की लकड़ियों से बनाया जाता है।

'यूं तो एकादशी व्रत को लेकर कई सारी कथाएं वर्णित हैं। लेकिन एकादशी से भी कहीं ज्यादा कीमती है एकादशी का महाप्रसाद। भगवान विष्णु ने स्वंय कहा है कि--'मेरा प्रसाद मुझसे भी बड़ा है' जो व्यक्ति एकादशी व्रत करेगा उनके लिए महाप्रसाद ग्रहण करना आवश्यक है।

जगन्नाथ मंदिर में मुख्य सुबह पूजा और संध्या में विधिपूर्वक आरती की जाती है। यहां दिन में चार बार भोग लगाने की प्रथा है। जगन्नाथ भगवान का सच्चे दिल से पूजा अर्चना करने वाले श्रद्धालुओं का सदैव सर्वमंगल व कल्याण होता है। ■

सोच अच्छी होनी चाहिए क्यूंकि नजर का इलाज तो मुमकिन है पर नजरिये का नहीं।

शोभत राम अँगन बिच कैसे ?

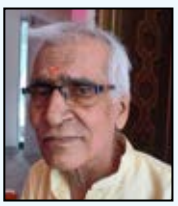

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

शोभत राम अँगन बिच कैसे ?
शोभत चन्द्र गगन बिच जैसे ।
श्याम बदन प्रभु शोभत कैसे ?
हरित जमुन जल शोभत जैसे ।
शोभत चन्द्र.....
घुँघराले लट काले शोभत कैसे ?
शोभत गुच्छ भँवर के जैसे ।
शोभत चन्द्र.....
पीत वस्त्र प्रभु शोभत कैसे ?
दामिनि दमकत दम दम जैसे ।
शोभत चन्द्र.....
मणि की माल गले शोभत कैसे ?
शिव के गले में उरग शोभे जैसे ।
शोभत चन्द्र.....
कर्ण कुंडल प्रभु शोभत कैसे ?
कुसुम कली डारन्ह पर जैसे ।
शोभत चन्द्र.....
मैया सब देखि मगन भई कैसे ?
गायन्ह देखि बछन्ह को जैसे ।
शोभत चन्द्र.....

उरग = साँप

19 जुलाई पर विशेष

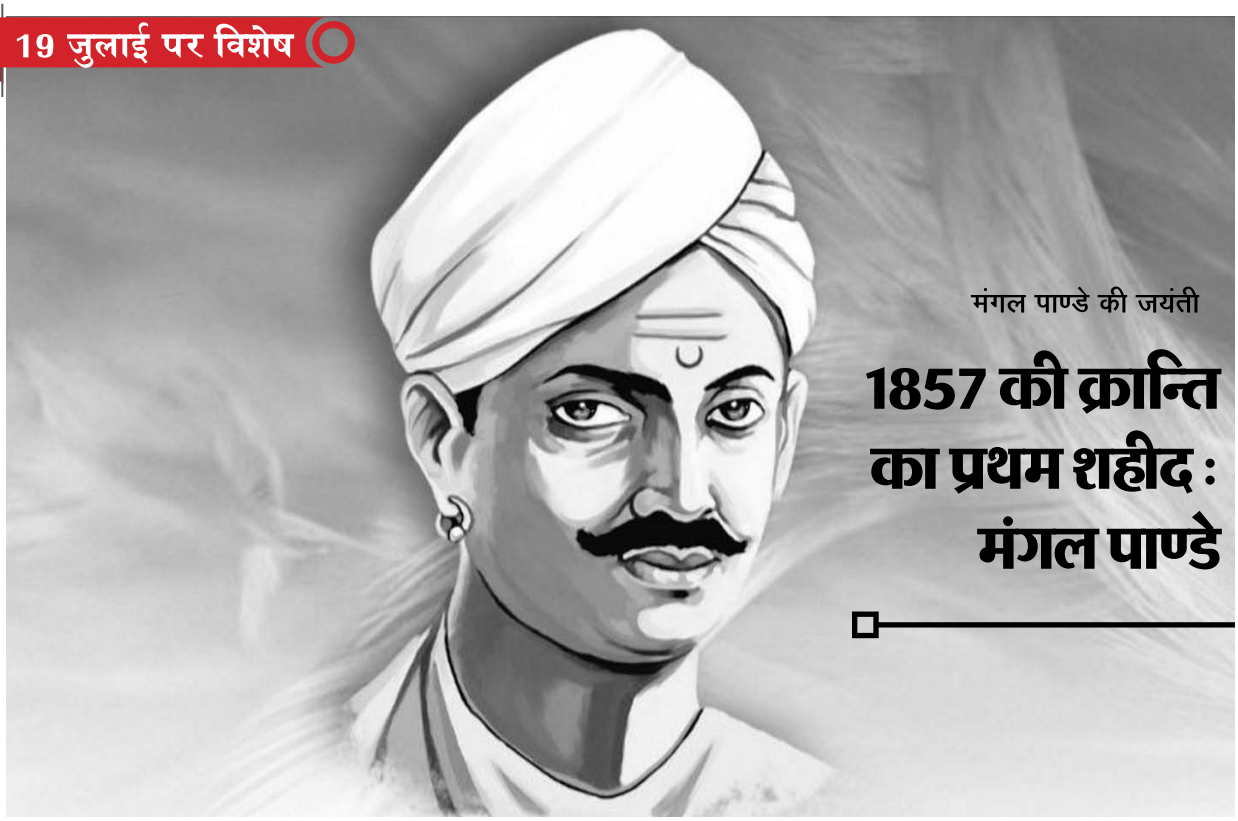

मंगल पाण्डे की जयंती

1857 की क्रान्ति का प्रथम शहीद : मंगल पाण्डे

राम शिव मूर्ति यादव
स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
आजमगढ़ (उ.प्र.)

1857 की क्रांति भारतीय इतिहास में अहम स्थान रखती है। यह क्रांति तात्कालिक रूप से विफल भले ही रही हो, पर इसने ही आजादी के लिए चलने वाली लम्बी और सुनियोजित लड़ाई की संगठित नींव रखी। इस क्रांति में तमाम क्रांतिकारियों ने अपनी आहुति दी, उन्हीं में से एक मंगल पांडे भी थे, जिन्हें 1857 की क्रान्ति का प्रथम शहीद माना जाता है। उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगवा नामक गांव में 19 जुलाई 1827 को जन्मे मंगल पाण्डे ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल इंफेन्ट्री के सिपाही थे। मात्र 22 साल की उम्र में सन् 1849 में वे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हो गए।

कहा जाता है कि पूरे देश में एक ही दिन 31 मई 1857 को क्रान्ति आरम्भ करने का निश्चय किया गया था, पर 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी के सिपाही मंगल पाण्डे (19 जुलाई 1827–8 अप्रैल 1857) की विद्रोह से उठी ज्वाला वक्त का इन्तजार नहीं कर सकी और प्रथम स्वाधीनता संग्राम का आगाज हो गया। मंगल पाण्डे को 1857 की क्रान्ति का पहला शहीद सिपाही माना जाता है। इस विद्रोह का प्रारम्भ एक बंदूक की वजह से हुआ। सिपाहियों को दी गई इस नई एनफील्ड बंदूक भरने के लिये कारतूस को दाँतों से काटकर खोलना पड़ता था और उसमें भरे हुए बारुद को बंदूक की नली में भर कर कारतूस को डालना पड़ता था। कारतूस के बाहरी आवरण में चर्बी होती थी जो कि उसे पानी की सीलन से बचाती थी। सिपाहियों के बीच अफवाह फैल चुकी थी कि कारतूस में लगी हुई चर्बी सुअर और गाय के माँस से बनायी जाती है।

29 मार्च 1857, दिन रविवार–उस दिन जनरल जान हियर्से अपने बँगले में आराम कर रहा था कि एक लेफ्टिनेन्ट बद्हवास सा दौड़ता हुआ आया और बोला कि देसी लाइन में दंगा हो गया। खून से रंगे अपने घायल लेफ्टिनेन्ट की हालत देखकर जनरल जान हियर्से अपने दोनों बेटों को लेकर 34वीं देसी पैदल सेना की रेजीमेन्ट के परेड ग्राउण्ड की ओर दौड़ा। उधर धोती–जैकेट पहने 34वीं देसी पैदल सेना का जवान मंगल पाण्डे नंगे पाँव ही एक भरी बन्दूक

लेकर क्वाटर गार्ड के सामने बड़े ताव मे चहलकदमी कर रहा था और रह–रह कर अपने साथियों को ललकार रहा था–''अरे! अब कब निकलोगे? तुम लोग अभी तक तैयार क्यों नहीं हो रहे हो? ये अंग्रेज हमारा धर्म भ्रष्ट कर देंगे। आओ, सब मेरे पीछे आओ। हम इन्हें अभी खत्म कर देते हैं।'' लेकिन अफसोस किसी ने उसका साथ नहीं दिया। पर मंगल पाण्डे ने हार नहीं मानी और अकेले ही अंग्रेजी हुकूमत को ललकारता रहा। तभी अंग्रेज सार्जेंट मेजर जेम्स थार्नटन ह्रासन ने मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। यह सुन मंगल पाण्डे का खून खौल उठा और उसकी बन्दूक गरज उठी। सार्जेंट मेजर ह्रासन वहीं लुढ़क गया। अपने साथी की यह स्थिति देख घोडे– पर सवार लेफ्टिनेंट एडजुटेंट बेम्पडे हेनरी वश्वग मंगल पाण्डे की तरफ बढ़ता है, पर इससे पहले कि वह उसे काबू कर पाता, मंगल पाण्डे ने उस पर गोली चला दी। दुर्भाग्य से गोली घोड़े को लगी और वश्वग नीचे गिरते हुये फुर्ती से उठ खड़ा हुआ। अब दोनों आमने–सामने थे। इस बीच मंगल पाण्डे ने अपनी तलवार निकाल ली और पलक झपकते ही वॉग के सीने और कन्धे को चीरते हुये निकल गई। तब तक जनरल जान हियर्से घोड़े पर सवार परेड ग्राउण्ड में पहुँचा और यह दृश्य देखकर भौंचक्का रह गया। जनरल हियर्से ने जमादार ईश्वरी प्रसाद को हुक्म दिया कि मंगल पाण्डे को तुरन्त गिरफ्तार कर लो पर उसने ऐसा करने से मना कर दिया। तब जनरल हियर्से ने शेख पल्टू को मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया। शेख पल्टू ने मंगल पाण्डे को पीछे से पकड़ लिया। स्थिति भयावह हो चली थी। मंगल पाण्डे ने गिरफ्तार होने से बेहतर मौत को गले लगाना उचित समझा और बन्दूक की नाली अपने सीने पर रख पैर के अंगूठे से फायर कर दिया। लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था, सो मंगल पाण्डे सिर्फ घायल होकर ही रह गए । तुरन्त अंग्रेजी सेना ने उन्हें चारों तरफ से घेर कर बन्दी बना लिया और मंगल पाण्डे के कोर्ट मार्शल का आदेश हुआ। अंग्रेजी हुकूमत ने 6 अप्रैल को फैसला सुनाया कि मंगल पाण्डे को 18 अप्रैल को फांसी पर चढ़ा दिया जाये। पर बाद में यह तारीख 8 अप्रैल कर दी गयी, ताकि विद्रोह की आग अन्य रेजिमेण्टो में भी न फैल जाये। मंगल पाण्डे के प्रति लोगों में इतना सम्मान पैदा हो गया था कि बैरकपुर का कोई जल्लाद फाँसी देने को तैयार नहीं हुआ। नतीजन कलकत्ता से चार जल्लाद बुलाकर मंगल पाण्डे को 8 अप्रैल, 1857 को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। मंगल पाण्डे को फाँसी पर चढ़ाकर अंग्रेजी हुकूमत ने जिस विद्रोह की चिंगारी को खत्म करना चाहा, वह तो फैल ही चुकी थी और देखते ही देखते इसने पूरे देश को अपने आगोश में ले लिया।

14 मई 1857 को गर्वनर जनरल लार्ड वारेन हेस्टिंगस ने मंगल पाण्डे का फांसीनामा अपने आधिपत्य में ले लिया। 8 अप्रैल 1857 को बैरकपुर, बंगाल में मंगल पाण्डे को प्राण दण्ड दिये जाने के ठीक सवा महीने बाद, जहाँ से उसे कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज में स्थानान्तरित कर दिया गया था। सन् 1905 के बाद जब लार्ड कर्जन ने उड़ीसा, बंगाल, बिहार और मध्य प्रदेश की थल सेनाओं का मुख्यालय बनाया गया तो मंगल पाण्डे का फांसीनामा जबलपुर स्थानान्तरित कर दिया गया। जबलपुर के सेना आयुध कोर के संग्राहलय में मंगल पाण्डे का फांसीनामा आज भी सुरक्षित रखा है। इसका हिन्दी अनुवाद निम्नवत है–

जनरल आर्डर्स

बाय हिज एक्सीलेन्सी

द कमान्डर इन चीफ, हेड क्वार्टर्स, शिमला

18 अप्रैल 1857

गत 18 मार्च 1857, बुधवार को फोर्ट विलियम्स में सम्पन्न कोर्ट मार्शल के बाद कोर्ट मार्शल समिति 6 अप्रैल 1857, सोमवार के दिन बैरकपुर में पुनः इकट्ठा हुई तथा पाँचवी कंपनी की 34वीं रेजीमेंट नेटिव इनफेन्ट्री के 1446 नं. के सिपाही मंगल पाण्डे के खिलाफ लगाये गये निम्न आरोपों पर विचार किया।

आरोप (1) बगावतः– 29 मार्च 1857 के बैरकपुर में परेड मैदान पर अपनी रेजीमेन्ट की क्वार्टर गार्ड के समक्ष तलवार और राइफल से लैस होकर अपने साथियों को ऐसे शब्दों में ललकारा, जिससे वे उत्तेजित होकर उसका साथ दें तथा कानूनों का उल्लंघन करें।

आरोप (2) इसी अवसर पर पहला वार किया गया तथा हिंसा का सहारा लेते हुए अपने वरिष्ठ अधिकारियों, सार्जेन्ट–मेजर जेम्स थार्नटन ह्यूसन और लेफ्टिनेंट–एडजुटेंट बेम्पडे हेनरी वश्वग जो 34वीं रेजेमेन्ट नेटिव इनफेन्ट्री के ही थे, पर अपनी राइफल से कई गोलियाँ दागीं तथा बाद में उल्लिखित लेफ्टिलेन्ट वॉग और सार्जेंट मेजर ह्यूसन पर तलवार के कई वार किये।

निष्कर्षः– अदालत पाँचवी कंपनी की 34वीं रेजीमेन्ट नेटिव इनफेन्ट्री के सिपाही नं0 1446, मंगल पाण्डे को उक्त आरोपों का दोषी पाती है।

सजाः– अदालत पाँचवी कंपनी की 34वीं रेजीमेन्ट नेटिव इनफेन्ट्री के सिपाही नं0 1446, मंगल पाण्डे को मृत्युपर्यन्त फाँसी पर लटकाये रखने की सजा सुनाती है।

अनुमोदित एवं पुष्टिकृत

(हस्ताक्षरित) जे.बी.हरसे, मेजर जनरल कमाण्डिग,

प्रेसीडेन्सी डिवीजन

बैरकपुर, 7 अप्रैल 1857

टिप्पणीः– पाँचवी कंपनी की 34वीं रेजीमेन्ट नेटिव इनफेन्ट्री के सिपाही नं0 1446, मंगल पाण्डे को कल 8 अप्रैल को प्रातः साढ़े पाँच बजे ब्रिगेड परेड पर समूची फौजी टुकड़ी के समक्ष फाँसी पर लटकाया जायेगा।

(हस्ताक्षरित) जे.बी.हरसे, मेजर जनरल, कमांडिंग प्रेसीडेन्सी डिवीजन

इस आदेश को प्रत्येक फौजी टुकड़ी की परेड के दौरान और खास तौर से बंगाल आर्मी के हर हिन्दुस्तानी सिपाही को पढ़कर सुनाया जाये।

बाय ऑर्डर ऑफ हिज एक्सीलेन्सी ■

धर्म

रमेश चन्द्र
वरिष्ठ साहित्यकार
गुरुग्राम

धम्म अर्थात् धर्म भारतीय संस्कृति की प्रमुख संकल्पना है। सामान्य अर्थों में धर्म से तात्पर्य religion माना जाता है, परंतु धर्म का एक व्यापक अर्थ भी है और जीवन में इसका प्रयोग भी व्यापक रूप में होता है। प्रस्तुत आलेख धर्म को मानव मन में नैतिकता के सूत्र की अविच्छिन्नता मानकर लिखा गया है। जीवन में भी इसका सामान्यतः इसी रूप में व्यवहार होता है।

धर्म कोई भौतिक वस्तु या अवस्था नहीं है, यह मस्तिष्क की उन अवधारणाओं का समाहार है जो आत्मा और समाज की उन्नति करने वाली होती हैं। सामाजिक रूप में धर्म को सबसे बड़े, सर्वश्रेष्ठ और ग्राह्य गुण के रूप में माना जाता है। भारतीय समाज में इसे इतना पवित्र और निर्मल माना जाता रहा है कि कुछ ही वर्षों पहले तक व्यक्ति यदि धर्म अर्थात् अपनी सदाचारशीलता, सत्यता, ईश्वर में विश्वास की शपथ लेकर बात कहे तो उसे निर्विवाद रूप से सत्य मान लिया जाता था। यह इसलिए कि धर्म सबसे बड़ी नैतिकता मानी जाती रही है और कोई व्यक्ति धर्म की शपथ झूठे लेने की हिम्मत नहीं रख सकता अन्यथा धर्म उसे स्वयं दंडित करेगा। यह धर्म की सर्वोच्चता और उसमें लोगों के विश्वास की पराकाष्ठा है।

भारत में सारा समाज धर्म पर टिका हुआ है और धर्म की पवित्रता लोगों के दिलों में बसी हुई है। इन अर्थों में धर्म को भगवान से भी बड़ा माना जाता है। धर्म संसार में नैतिक जीवन जीने के लिए है, परंतु इसके पालन से मोक्ष–प्राप्ति का मार्ग भी खुलता है। कर्मयोग मोक्ष–प्राप्ति का एक माध्यम माना जाता है और कर्मयोग के पूर्ण निर्वहन के लिए धर्म–पालन उसके आधार का काम करता है। इस तरह धर्म ऐहिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के प्रयोजन सिद्ध करता है, फिर भी इसके लिए धर्म यात्राएँ करना और धार्मिक स्थलों पर बैठना आवश्यक नहीं है। यह केवल व्यवहार की बात है। इसके लिए व्यक्ति को अपने नियम पर टिके रहना होता है तथा हर परिस्थिति में उस नियम का पालन करना होता है। नियम ये हैं कि व्यक्ति झूठ

न बोले, हिंसा न करे, चोरी न करे, परस्त्रीगमन न करे, संग्रह की भावना न पाले अथवा अनैतिकता का कोई अन्य काम न करे। वह उच्च विचार रखते हुए सादा जीवन व्यतीत करे और मन मे सदा मानव मात्र का कल्याण रखे। वह समदृष्टि और समचित हो तथा समाज को सामासिक रूप में लेता हो। धर्म उसके लिए मर्म की बात हो। उस मर्म की निर्मलता को वह कभी मलिन नहीं करता। धर्म उसके मन में कोई विचलन की चीज नहीं, बल्कि एक अटल और सुस्पष्ट अवधारणा होती है, जिसके प्रति उसमें भारी श्रद्धा होती है। धर्म–परायणता उसके जीवन का लक्ष्य होता है और यदि कभी अनजाने में भी उससे कोई धर्म–विरुद्ध बात हो जाए तो उसे बड़ी ग्लानि होती है तथा उसका पश्चाताप करने तक वह उस ग्लानि से मुक्त नहीं हो पाता। इस प्रकार धर्म से च्युति उसे टिकने नहीं देती।

प्राचीन काल में गुरुओं के आश्रम धर्म–शिक्षण के तथा समाज उनके उत्तम व्यवहार के केंद्र होते थे। आजकल के भौतिक विश्व में जिन उत्तम रीतियों के व्यवहार पर बल दिया जाता है, वे धर्म की प्राचीन अवधारणा से ही प्रस्फुटित हुई हैं। इस प्रकार धर्म का कोई पालन करे या न करे, परंतु आज भी यह अवधारणा किसी न किसी रूप में हमारे बीच मौजूद है और हमशा रहेगी। भारत में तो ऐसा भी माना जाता रहा है कि धर्म का नाश होने पर उसकी पुनः स्थापना करने के लिए भगवान का अवतरण होता है। श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है – **''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे''** अर्थात् जब जब भी भारत में धर्म की ग्लानि होती है, तब धर्म के उत्थान के लिए मैं स्वयं जन्म लेता हूँ। इस धर्म की स्थापना के लिए ही विष्णु ने राम के रूप में रावण का और श्रीकृष्ण के रूप में कंस, हरिण्यकश्यपु आदि का वध किया तथा भीष्म पितामह, जरासंध, दुर्योधन, दुशासन आदि का वध कराया। धर्म की स्थापना के लिए हिंदू धर्म में भगवान के अवतार लेने के दस दृष्टांत लोगों के दिलो–दिमाग में बसे हुए हुए हैं। ईश्वर के अवतार रूप ग्रहण करने से धर्म की हानि होने पर लोगों के दिलों में हुई निराशा दूर होती है तथा वह उनके लिए आशा की एक किरण बनती है।

सामाजिक व्यवहार में धर्म का संबंध मोक्ष से न होकर केवल आत्मा से होता है, वह आत्मा जो केवल निर्मल काम करने और पापों से बचने की प्रेरणा देती है। आत्मा अति निर्मल होने के कारण स्वयं में एक धर्म होती है तथा अनुकरण की चीज होती है। इसके शुद्धिकरण की आवश्यकता नहीं होती। आत्मिक धर्म लोगों को केवल जुड़ना सिखाता है तथा परस्पर भेद–भाव से दूर रखता है, जबकि आध्यात्मिक धर्म उन्हें बिछुड़ना सिखाता है। आत्मिक धर्म मन की एक अवस्था होती है, जबकि आध्यात्मिक धर्म आस्था की चीज होती है। आत्मिक धर्म मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है, परंतु आध्यात्मिक धर्म उससे दूर ले जाता है। धर्म का त्याग करने से मोक्ष नहीं है, क्योंकि कर्मयोग के अनुसार मोक्ष केवल सद्मार्ग पर चलने से ही मिलता है तथा धर्म लोगों के मन में ईर्ष्या, राग, द्वेष आदि उत्पन्न नहीं होने देता और उन्हें केवल सद्मार्ग पर रखता है। इस प्रकार लौकिक और पारलौकिक दोनों तरह की उपलब्धियों के लिए धर्म जैसी सकारात्मक चीज इस संसार में नहीं है।

भारत के अशिक्षित समाज में कुछ स्वार्थी लोगों ने आत्मिक धर्म और आध्यात्मिक धर्म को मिलाकर रख दिया है, जिससे लोगों के लिए दोनों में भेद करना दुस्तर हो गया है। परिणाम यह हुआ कि धर्म की च्युति होने लगी और समाज में अराजकता आने लगी। अंततः आज लोग आत्मिक धर्म को लगभग भूल गए हैं तथा आध्यात्मिक धर्म पर चलकर पथभ्रष्ट हो रहे हैं और आत्मिक धर्म के सामाजिक जुड़ाव के प्रयोजन के विपरीत समाज बिखराव के कगार पर है। ईश्वर, मोक्ष, शांति, आनंद प्राप्त कराने के नाम पर संसार में व्यापार होने लगा है तथा आज के साधु–संत लोगों को केवल अपनी ओर आकर्षित करके उन्हें बढ़–चढ़कर भरमाने में लगे हैं। इससे समाज में भय और भ्रम उत्पन्न हो गया है तथा पथ–भ्रमित समाज में लोगों को पता नहीं लग पा रहा कि जाना किधर है। हर साधु–संत अपने आपको मोक्ष का द्वार मानता है तथा इस तथाकथित पारलौकिक अवस्था की प्राप्ति या अप्राप्ति के लिए उन्हें कोई दोश भी नहीं दे सकता। उनका प्रयोजन सिद्ध हो जाता है और अंधविश्वासी लोग हैं कि इस बात को जान नहीं पाते। भ्रमित को वे तांत्रिकों की तरह और अधिक भरमाने में लगे रहते हैं अन्यथा उनके सहारे वे स्वयं भौतिकता का अथाह और अगोचर साम्राज्य खड़ा करके जीवन निर्वहन क्यों कर रहे होते? सच्चे अर्थों में वे धर्माधिकारी होते तो धन का संग्रह न करते। कबीर ने कहा है साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहि। जो धन का भूखा फिरे सो तो साधु नाहि। इसलिए आज जब शिक्षा और विज्ञान का विस्तार हो रहा है, लोगों को ढकोसलेपंथियों का आश्रय नहीं लेना चाहिए तथा ढोंगी लोगों को अपनी समस्याओं, परिस्थितियों, आवश्यकताओं, सांसारिक इच्छाओं, विवशताओं का सहारा देकर ऊपर नहीं बैठा लेना चाहिए। यह सोचना चाहिए कि क्या धर्म है और क्या अधर्म।

आत्मिक धर्म हर समाज में एक जैसा होता है, परंतु आध्यात्मिक धर्म हर समाज का भिन्न होता है। यहाँ तक कि उसका ईष्ट और उस ईष्ट–प्राप्ति का मार्ग और साधन भी भिन्न हैं। इस तरह यह जुड़ाव का काम कर ही नहीं सकता। सीधे तौर पर इसका यह अर्थ हुआ कि स्वार्थी लोगों ने अपनी सुविधा के लिए अलग–अलग धर्म के नाम पर समाज को बांट दिया तथा स्वयं धर्माधिकारी बन उनके दिलों पर राज कर रहे हैं। उन्होंने आध्यात्मिक धर्म की उन अनैतिक और स्वार्थभरी बातों को लोगों के आत्मिक धर्म से जोड़ दिया, जिनका कोई आधार या तर्क नहीं है। आम जनमानस अधिक धर्मभीरू होने के कारण भय खाकर तथाकथित अनजाने पाप से बचे रहना चाहता हैं और उनका पालन करने लगता है। यहाँ तक कि वे उन्हें मृत्यु के बाद के भी तरह–तरह के दंडों के भय दिखाते हैं और अपनी ओर सम्मोहित कर लेते हैं। मृत्यु के बाद जब मस्तिष्क नहीं रहा, शरीर नहीं रहा तो भय कैसा? रही बात आत्मा की, तो उसे न कोई जन्मता है, न मारता है, न अग्नि, जल, वायु आदि कोई प्राकृतिक शक्ति उसे समाप्त कर सकती है। फिर कैसा दंड और कैसा डर? लोगों की आँखों से यह पर्दा कब हटेगा? विडंबना तो यह है कि शिक्षित लोग अशिक्षित तथा ढोंगी लोगों के शासन में रहते हैं।

चूँकि धर्म का अर्थ होता ही धारण करना है, यह सार्वभौमिक और सार्वकलिक होता है अर्थात् हर जगह और हर समय एक – सा होता है। देश, काल, वातावरण, जाति, समय आदि बदलने पर यह बदलता नहीं है। यह तो कर्म–प्रधान होता है, फिर इसे ढोंगों के चंगुल में क्यों पड़ने देना चाहिए? धर्म तो केवल शिक्षा, विद्वता, चरित्र, नैतिकता, अहिंसा, सत्यभाव, शांति, दान, क्षमाभाव, मानवीयता, ईमानदारी, संतोष, सहिष्णुता, प्रेम, स्नेह, श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास, सौहार्द, सामाजिक न्याय, समानता, स्वतंत्रता, देशभक्ति, परिश्रम, लगन, धैर्य, सदाचार आदि गुणों का प्रदर्शन होता है तथा इच्छा, काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार, मोह, धोखा, कपट, निंदा, चुगली, चापलूसी, व्यंग्य, मद्यपान, प्रतिशोध आदि विकारों का निरोध होता है। फिर इसमें नकारात्मक शक्तियों का प्रवेश कैसे?

चार्वाक् लोग ईश्वर को नहीं मानते। इसलिए वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से केवल अर्थ और काम को ही पुरुशार्थ के विषय मानते हैं। वे हर अनैतिक काम करके केवल अपना हित साधने के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं। इसके विपरीत भारतीय वाङ्मय में कहा गया है – **अग्निना सिच्यमानोऽपि वृक्षो वृद्धिं न चाप्नुयात्। तथा सत्यं बिना धर्मः पुष्टिं नायाति कर्हिचित्।।** अर्थात् आग से सींचे गए पेड़ कभी बड़े नहीं होते और सत्य के बिना धर्म की स्थापना नहीं होती। मृतक का सबसे बड़ा मित्र भी उसका धर्म ही माना जाता है।

जैन धर्म में अहिंसा को परम धर्म माना जाता है। जिन कार्यों में हिंसा न हो, वही धर्म है। धर्म का उपदश इसीलिए दिया जाता है ताकि प्राणियों में हिंसा न हो। हिंसा से कभी जीविका नहीं चलती, परंतु धर्म के पालन से चल सकती है। सभी धर्मों के अंदर भी अहिंसा अर्थात् धर्म समाया हुआ है, क्योंकि जो स्वयं जीवित रहना चाहता है वह दूसरों को नहीं मारेगा। कोई कहता है त्याग ही धर्म है, कोई कहता है दान, संयम और क्षमा–भाव ही धर्म हैं, परंतु गोस्वामी तुलसीदास ने सत्य तथा परोपकार को भी परम धर्म माना है – **धरमु न दूसर सत्य समाना, आगम निगम पुरान बखाना। परहित सरसि धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।** प्राचीन काल में ''सत्यं वद धर्म चर'' अर्थात् 'सत्य बोलो, धर्म पर चलो' का उपदेश दिया जाता था। महर्षि दयानंद ने ''पक्षपातरहित न्याय, सत्य के ग्रहण, असत्य के सर्वथा परित्याग रूप आचरण'' को धर्म कहा है। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि जो धारणीय सद्गुण हैं, वही धर्म हैं। फिर भी सत्य धर्म का आचरण बहुत कठिन होता है। इसके मार्ग में पग–पग पर कठिनाइयाँ होती हैं। प्राचीन साहित्य में कहा गया है कि ''धर्म को जानने वाला दुर्लभ होता है, उसे श्रेष्ठ तरीके से बताने वाला उससे भी दुर्लभ, उसे श्रद्धा से सुनने वाला उससे कहीं अधिक दुर्लभ और उसका आचरण करने वाला सबसे दुर्लभ होता है।''

जैन मत में धर्म को दस लक्षणों वाला बताया गया है। उसमें धर्म को जीव का स्वभाव बताया गया है अर्थात् प्रकृति ने मनुष्य को स्वभाव से जैसा बनाया है और जैसा उसका आचरण दिया है, वही धर्म है। उसमें कोई कलुशित भावना शामिल नहीं है। इस धर्म में गृहस्थों के लिए सागार धर्म और मुनियों के लिए अनगार धर्म बतलाया गया है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शील और अपरिग्रह का आंशिक त्याग गृहस्थों के लिए संभव है। धर्म में इन्हें पंच अणुव्रत कहा गया है। इनका संपूर्ण त्याग मुनियों के लिए संभव है। उस स्थिति में इन्हें पाँच महाव्रत नाम दिया गया है।

मानव के लिए जो कर्म विहित हैं, उन्हीं से धर्म उत्पन्न होता है। मोटे शब्दों में जो कार्य व्यक्ति अपने अनुकूल नहीं समझता, वैसा व्यवहार वह दूसरों के साथ न करे। वही धर्म है। गौतम ऋषि के अनुसार जिस काम से अभ्युदय और बिना श्रेय के सिद्धि हो, वही धर्म है। मनु ने मानव धर्म के दस लक्षण बताए : धैर्य, क्षमा, दम (वासनाओं पर नियंत्रण), अस्तेय (चोरी न करना), शौच, इंद्रिय–निग्रह, धी (बुद्धिमता), विद्या, सत्य का पालन और अक्रोध। वात्स्यायन का मानना है कि ''धर्म मनसा–वाचा–कर्मणा होता है। यह केवल क्रिया और कर्मों से संबंधित नहीं, बल्कि चिंतन और वाणी से भी संबंधित है।'' महाभारत में कहा गया है – ''अपने कर्म में लगे रहना निश्चय ही धर्म है।'' मनीषी जन उदारता को ही धर्म कहते हैं और सभी प्राणियों के हित में लगे रहने वाले पुरुषों ने दान को धर्म बताया है।

पुराणों के अनुसार धर्म ब्रह्मा के दाहिने वक्ष से पैदा हुए मानस पुत्र है, जिनका विवाह दक्ष की 13 पुत्रियों श्रद्धा, मैत्री, दया, शांति, तुष्टि, पुष्टि, क्रिया, उन्नति, बुद्धि, मेधा, तितिक्षा, ह्री और मूर्ति से हुआ। स्पष्टतः यहाँ धर्म के 13 अंग मानवी रूप में बताए गए हैं। विष्णुपुराण में धर्म की पत्नी को अहिंसा और अधर्म की पत्नी को हिंसा नाम दिया गया है। इन नामों से धर्म के लक्षण प्रकट होते हैं। महात्मा गांधी के शब्दों में धर्म कोई पंथ न होकर मानव मूल्य होते हैं।

ईसाई धर्म के अनुसार धर्म विभिन्न वस्तुओं को सहानुभूति, प्रेम तथा पारस्परिक बंधन में रखता है। हिंदू धर्म के अनुसार लोक और परलोक के सुखों को सिद्ध करने हेतु पवित्र गुणों और कर्मों का धारण करना ही धर्म है। धर्म जगत में रहकर पर– कल्याण का और जगत् से बाहर आत्म–कल्याण का मार्ग है। यह कोई अवधारणा मात्र नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक शैली है। सत्य धर्म हमेशा सनातन होता है। उसका कभी अंत नहीं होता। लोग यह भी मानते हैं कि सेवा ही परम धर्म है। सनातन धर्म में सेवा को धर्म का सार बताया गया है। इसमें सेवा और धर्म को पृथक नहीं माना जाता, क्योंकि धर्मपरायणजनों के कार्यों में सेवा का भाव होता है। ईसाई धर्म में भी सेवा को परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग बताया गया है। यह मानव को मानव होने का बोध कराता है, आत्मा की तरह सही और गलत में अंतर कराता है और उसे पाश्विकता से दूर रखता है व मानव में दान, सेवादि गुण भरता है। यह श्रद्धा से परिपूर्ण होता है और किसी तर्क या वितर्क को स्वीकार नहीं करता। धर्मपरायण व्यक्ति परमात्मा में विश्वास रखता है। धर्म उसके मन को शांति देता है और उसे परमात्मा के करीब होने का एहसास कराता है। धर्म केवल गुण ही गुण है, इसमें नकारात्मकता जैसी कोई चीज नहीं है। धर्मपरायण व्यक्ति में कभी अपवित्र भाव नहीं उपजते। उसका हृदय पवित्र होता है, वह उत्तम नैतिकता वाला होता है और उसका मन आध्यात्मिकता से पूरित होता है।

क्रमशः

क्रान्तिवीर शिरोमणि चन्द्र शेखर आजाद

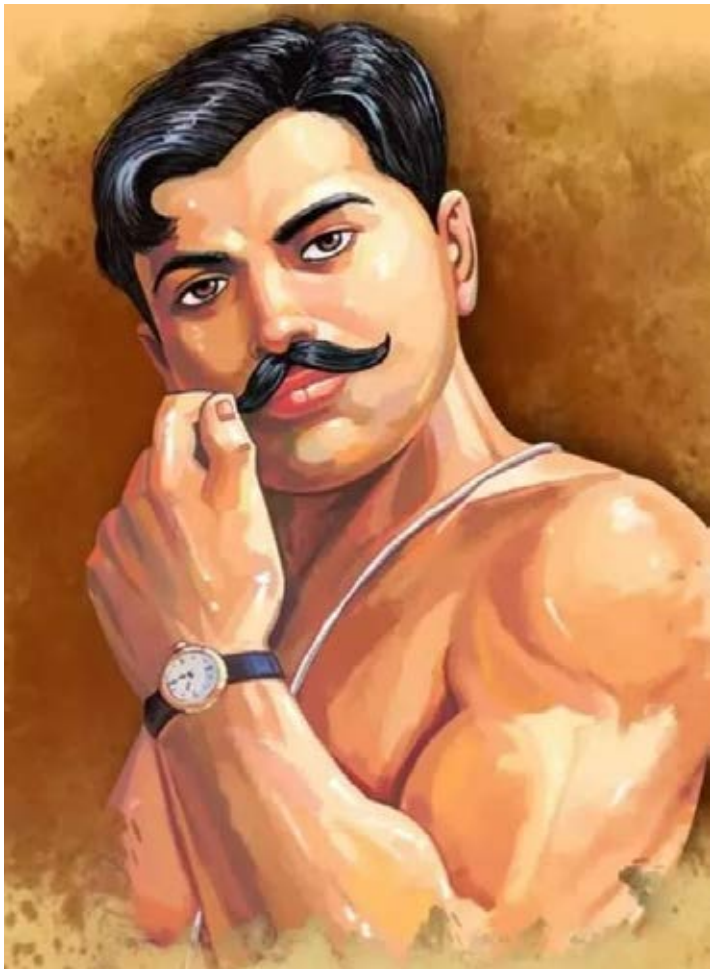

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा?

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद का नाम सुनते ही हर भारतवासी का मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। बालकपन में ही अंग्रेजों के शासन को उखाड़ फेंकने की प्रतिज्ञा लेने वाले इस सिंह शावक का जन्म 23 जुलाई, 1906 को ग्राम बदरका, उन्नाव (उत्तर प्रदेश) के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री सीताराम तिवारी तथा माता का नाम श्रीमती जगरानी देवी था।

सन् 1921 की घटना है यह 14 वर्ष का वीर बालक अपने सहयोगियों के साथ हाथ में तिरंगा लहराते हुए अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध नारे लगाता काशी की गलियों में घूम रहा था। चन्द्रशेखर की नजर एक ऐसे पुलिस इंस्पेक्टर पर पड़ी जो एक निर्दोष व्यक्ति को सफेद टोपी लगाने के अपराध में पीट रहा था। वीर बालक से रहा न गया। उसने एक पत्थर उठाकर पुलिस वाले को निशाना बना ही दिया। इस वीर बालक को गिरफ्तार करके एक पारसी न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत किया गया। न्यायाधीश ने बालक से पूछा तुम्हारा नाम क्या है? पूछने पर बालक ने उत्तर दिया स्वतंत्र, तुम्हारा घर कहां है उत्तर मिला, भारत। नौकरशाही अदालत कांप उठी। उसने उन्हें 15 बेंत का दंड दिया गया। बेंतों की आवाज के साथ–साथ

बालक के मुंह से भारत माता की जय निकलती रही। इसके बाद ही चन्द्रशेखर आजाद बन गए एवं यहां से उनका क्रांतिकारी जीवन प्रारंभ हुआ।

23 जुलाई 1927 से लखनऊ में क्रांतिकारी दल को मजबूत बनाने हेतु चंदा अभियान प्रारंभ किया गया था। एक सप्ताह के भीतर धन संग्रह कर दल के प्रमुख क्रांतिकारियों को दिल्ली जाना था कि अचानक आजाद को एक लाल टीकाधारी पुरुष को देखकर अपने जन्मदिवस की याद आ गई और वह रात्रि को रेल से चलकर उन्नाव क्रांतिकारियों के साथ ही आ गए। उन्नाव में रात्रि व्यतीत कर वे दूसरे प्रातःकाल ही बदरका पहुंचकर घर की कुंडी खट-खटाने लगे। ज्यों ही दरवाजा खटका, त्यों ही आजाद की मां ने अपने एक मात्र पुत्र को गले लगा लिया। अन्य साथी धन्य हो गए, जगत जननी जगरानी देवी से आशीर्वाद प्रथम बार उन्हें मिला था। उन्होंने मानों आशीर्वाद नहीं दिया, वरन् भविष्यवाणी की थी ''गांव बाबा'' की गर्जना ने तुम बालकों को अनगिनत मां का लाल बना दिया है। मैं टीका करती हूं, देश को स्वतंत्र कराकर ही दम लेना, चाहे जो भी परेशानियां सहन करनी पड़े। इस साहस के साथ उनकी मां ने एक लोटे में पड़े काले तिल तथा मीठा दूध पिलाकर उनका पूजन कर डाला। भारत मां के इस वीर लाडले को अपने जन्मदिन 23 जुलाई पर गर्व था, इस पुण्य तिथि पर आजाद अपनी जन्मभूमि बदरका जाते थे, वहां के निवासी भी गौरवान्वित हो उठते थे। चारों ओर ग्राम में नजर रखी जाती कि कहीं अंग्रेज पुलिस तो नहीं आ रही है। आजाद की मां ने जब तक गुलगुले अपने हाथों से नहीं खिलाए तब तक रोके रखा। फिर तो प्रत्येक 23 जुलाई को उनकी मां तैयारी कर लेती थीं। आजाद चुपचाप किसी न किसी वेष में आ जाते थे और टीका लगवाकर दूध का गुलगुला खाकर चले जाते थे। दूध बड़ियां भी आजाद खूब खाते थे।

अप्रैल, 1929 में जब सरदार भगत सिंह ने असेम्बली में बम फेंकने का निश्चय किया और खुद मौत के मुंह में कूदने का फैसला किया, तो दुःख और हर्ष मिश्रित उल्लास ने क्रांतिकारियों को अभिभूत कर लिया था। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त की विदाई देते समय लोगों को मालूम था कि वे बलि वेदी पर जा रहे हैं। असेम्बली बम कांड का मुकादमा जब दिल्ली में चल रहा था उसी समय पुलिस को सांडर्स वध और लाहौर के क्रांतिकारी कार्यों की सूचना मिल गई। देश भर में गिरफ्तारियां की गई। चन्द्र शेखर आजाद, भगवती चरण बोहरा, डॉ. भगवानदास माहौर गिरफ्तारियों से बच गए और इन लोगों ने फिर से क्रांतिकारी पार्टी को संगठित किया।

इलाहाबाद की एक घटना है। यहां पर 1930 में अंग्रेजों ने जनता पर भारी अत्याचार किए। पर यहां के लोगों ने कोई विशेष प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। इससे कुछ साहसी युवा महिलाएं स्वयं अपने को देश रक्षा के हित में न्योछावर कर राह चलते पुरुषों को चूड़ियां पहनाने लगीं कि तुम घर में बैठो हम देश को गुलामी से मुक्त कराने का कार्य करें दैवयोग से आजाद उसी मार्ग से निकले और महिलाओं द्वारा रोकर यही बात दोहरायी गई तथा चूड़ियां पहनने हेतु ''आजाद'' का हाथ खींचा गया। जब कलाई में किसी बहन की कोई चूड़ी नहीं चढ़ी व महिलाएं विवश हो गईं, तो आजाद ने कहा-बहन मैं वह पुरुष नहीं हूं आओ हम तुम्हारे साथ चलकर देश स्वतंत्रता का कार्य करते हें। इस पर महिलाएं बड़ी प्रसन्न हुई और आजाद से अपना पता बताने की बात करने लगीं। उन्होंने जब अपना नाम उन्हें चन्द्रशेखर आजाद बताया, तो वह सभी आवाक रह गईं और सभी श्रद्धानत होकर आजाद से क्षमा मांगने लगीं। पर आजाद को यह अच्छा लगा और जब इलाहाबाद से यह झुण्ड क्रांतिकारियों के गुप्त अड्डे पर पहुंचा, तो क्रांतिकारी भाइयों को महिलाओं की अदम्य साहस व शौर्य का उदाहरण देकर सभी को प्रायश्चित कराया तभी से इलाहाबाद में भी क्रांतिकारी आंदोलन की आंधी ने जोर पकड़ा और इसकी आग धीरे-धीरे पूरे सूबे एवं संपूर्ण हिन्दुस्तान में छा गई ओर देश का बच्चा-बच्चा भारत से अंग्रेज हुकूमत को समाप्त करने के लिए प्राण न्योछावर हेतु आतुर हो उठा।

एक बार आजाद अपने दल के साथ एक धनाढ्य विधवा के घर पार्टी के लिए धन संग्रह हेतु रात्रि में पहुंचे। घर में पहुंचकर विधवा माता से कहा-तुम्हारे पास जो धन है वह हमें दे दो। इस पर माता ने सारा धन दे दिया। जब आजाद जाने लगे, तो उस विधवा बुढ़िया ने अपनी इकलौती बेटी को आगे करके कहा-भइया, तुम्हारी इस बहन का विवाह करना है। इसके लिए हमें कुछ धन चाहिए। आजाद ने सारा धन माता के आंचल में डाल दिया और कहा जितना चाहो उतना ले लो। यह देखकर इस माता के अश्रु बह चले और उसने कहा कि तुम इतना महान होकर ऐसा क्यों करते हो? आजाद ने उत्तर दिया कि हम लोग भारत माता के पुजारी हैं और यह धन भारत माता की पराधीनता मुक्त करने के कार्य में लगाते हैं। विधवा ने थोड़ा -सा लेकर बाकी आजाद को दे दिया और छलछलाते नेत्रों से कहा-जाओ बेटा विजयी हो।

इस प्रकार एक के बाद एक अनेक घटनाएं होती रहीं। आजाद जी का पुराना जीवन काल घटनाओं ओर शूरता का प्रतीक है। 27 फरवरी, 1931 को आजाद के एलफ्रेड पार्क इलाहाबाद में होने की सूचना पुलिस को दे दी गई। पुलिस ने पार्क को घेर लिया। एक अंग्रेज अधिकारी आजाद के सामने आकर बोला हैंड्सअप। आजाद ने गोली चलाई जिससे अंग्रेज नाटबाबर जख्मी हो गया। एक ओर पुलिस दूसरी ओर आजाद, 40 मिनट तक दोनों ओर से गोलियां चलती रहीं। गोली समाप्त हो चुकी थीं। इसलिए विवश होकर अंत में आजाद ने पिस्तौल घुमा ली एवं अपनी जीवन लीला समाप्त कर डाली फिर भी किसी की हिम्मत लाश के पास जाने की न पड़ी। गोलियां चलाते हुए ही अफसर आगे बढ़े। जिस समय यह खबर पहुंची कि चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गोलियों के शिकार बन गए, सारा नगर एलफ्रेड पार्क की ओर चल पड़ा। प्रयाग की इस पुण्यभूमि में त्रिवेणी के तट पर नगर की असंख्य जनता ने इस सच्चे सपूत को श्रद्धांजलि दी। जिस स्थान पर उस वीर का रक्त गिराथा, उस पवित्र मिट्टी को जनता ने अपने अश्रुओं से भिगो दिया। जिस पेड़ की आड़ से वे लड़ते रहे वह तीर्थ बन गया परंतु गोराशाही ने उस वृक्ष को भी उखड़वा दिया। ■

लोक व्यवहार के श्रेष्ठ कवि कबीरदास

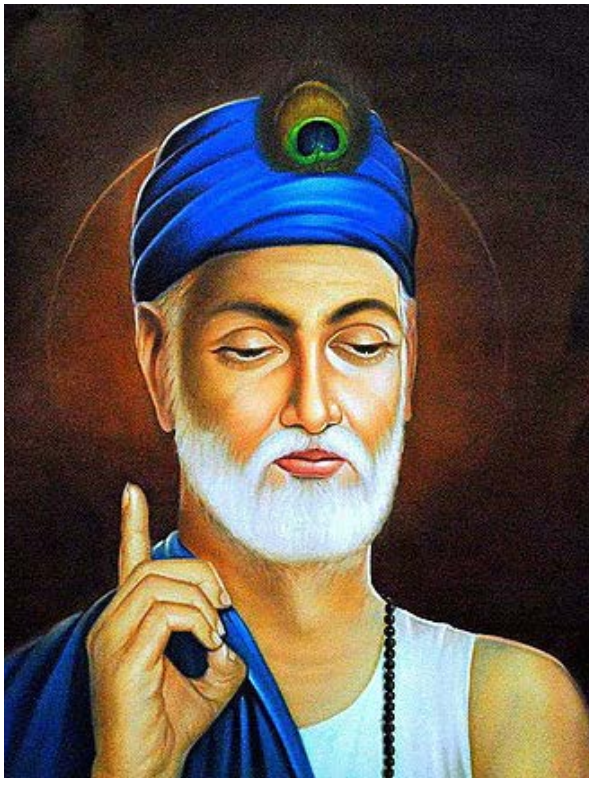

भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

हमारे देश का भक्ति साहित्य गौरवशाली साहित्य है। साहित्य समाज का प्रतिबिंब माना जाता है। साहित्य समाज को नई दिशा देता है। उत्कृष्ट साहित्य समाज में नवजीवन का संचार करता है। भारत के संतो की भक्ति धारा ने समाज में जागृति लाने का प्रयास किया। इन कवियों की भक्ति काव्य धारा परम पावनी गंगा धारा के समान है। यह संत कवियों की लोक धर्मिता और मानवीय सरोकार से परिपूरित है। भक्ति को केंद्र में रखकर की गई काव्य रचना में भी तत्कालीन समाज की दशा का वर्णन किया गया है। कवियों ने अपने काव्य के द्वारा समाज सुधार का कार्य भी किया। इस काल में कालजई रचनाओं का निर्माण हुआ है। इस काल की रचना है सार्वदेशिक, सार्वकालिक, सार्वभौमिक तथा बहुजन सुखाय और बहुजन हिताय है।

ऐसे ही एक महान कवि थे कबीर दास जी। इनका जन्म बनारस में माना जाता है। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने इन्हें बनारस के लहरतारा तालाब के किनारे पाया था। इनकी ममता की छांव में ही कबीर का पालन–पोषण हुआ। कबीर दास प्रसिद्ध संत रामानंद के शिष्य माने जाते हैं। कबीर की पत्नी का नाम लोई और पुत्र का नाम कमाल था। कबीर सत्संग तथा पर्यटन प्रिय थे इसलिए उनका अनुभव संसार समृद्ध था। इनके व्यक्तित्व निर्माण में उनकी जीवनगत परिस्थितियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इनकी मृत्यु मगहर नामक स्थान पर मानी जाती है।

कबीर भक्ति कालीन निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि माने जाते हैं। इनकी प्रामाणिक कृति बीजक है। इसके तीन भाग साखी, सबद और रमैनी है। कबीर दास जी को समाज सुधारक के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनकी कविता में समाज के प्रति चिंतन का स्वर प्रमुख है। समाज में व्याप्त विषमता अंधविश्वास और उसकी प्रवृत्तियों पर गहरा व्यंग किया है। वह ईश्वर की प्राप्ति के लिए ज्ञान को प्रमुख साधन मानते हैं। वे योग साधना के गूढ़

रहस्य को अपनी कविता में प्रस्तुत करते हैं। वह निराकार ईश्वर की प्राप्ति हेतु ज्ञान मार्ग इंद्रिय नियमन तथा योग साधना को प्रमुख मानते हैं। प्रेम की उदात्त अनुभूति भी उनके काव्य में दृष्टिगोचर होती है। नाम की महिमा, गुरु का महत्व, सदाचार आदि विषयों पर केंद्रित रचनाएं कबीर के काव्य को संत काव्य की व्यापक पृष्ठभूमि प्रदान करती है। समाज में उच्च आचरण के निर्माण हेतु जिन मानवीय गुणों की आवश्यकता होती है उन गुणों के चर्चा कबीर ने अपनी साखियों में बहुत ही अच्छी तरह से की है।

'शब्द सम्हारे बोलिए, शब्द के हाथ न पांव।
एक शब्द औषधि करें, एक शब्द करे घाव।'

कबीर दास जी के अनुसार व्यक्ति को शब्दों को सोच समझकर बोलना चाहिए। क्योंकि शब्द के हाथ पैर नहीं होते हैं किंतु फिर भी उनका बड़ा ही महत्व है। मधुर वाणी में कहा गया शब्द औषधि के समान कार्य करता है तो कटु वाणी में कहा गया शब्द आघात पहुंचाता है।

'कबीर कुसंग न कीजिए, पाथर जल न तिराय।
कदली सीप भुजंग मुख एक बूंद तिर जाय।।'

कबीर कहते हैं कि हमें किसी भी स्थिति में बुरे लोगों की संगति नहीं करनी चाहिए। क्योंकि पत्थर पानी पर तैर नहीं सकता है। उसी तरह बुरे लोगों के साथ रहने से कल्याण नहीं हो सकता है। स्वाति नक्षत्र की एक बूंद केले सीप और सांप के मुंह में गिरकर 3 भावों वाली हो जाती है, यह सब संगति का ही प्रभाव है।

'जो जल बाढे नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।।'

कबीर कहते हैं कि यदि नाव में पानी भर रहा हो और घर में रुपया बढ़ रहा हो तो बुद्धिमान व्यक्ति का कर्तव्य है कि उसे दोनों हाथों से उलीचना चाहिए अर्थात नाव से पानी को बाहर फेंकना चाहिए नहीं तो नाव डूब जाएगी तथा घर में बढ़ने वाले रुपए को उदार भाव से गरीबों को दान करना चाहिए।

महान कवि कबीर दास जी के काव्य में सामाजिक समरसता का स्वर भी मुखरित हुआ है। वे सामाजिक समरसता का आधार व्यक्ति के आचरण में खोजते हैं। अच्छे आचरण वाला व्यक्ति ही सामाजिक समरसता का आधार बन सकता है। कवि कहते हैं –

'साई इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधू न भूखा जाय।।'

कबीरदास जी कहते हैं कि की है ईश्वर इस संसार में आप मुझे इतनी धन–संपत्ति दीजिए कि जिसमें मैं अपने परिवार का भरण पोषण कर सकूं। मुझे भी भरपेट भोजन मिल सके और मेरे घर में आने वाला कोई भी अतिथि अथवा साधु बिना मान सम्मान के न जाए मैं अन्नदान कर सकूं।

"जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।।'

कबीरदास जी कहते हैं कि कभी भी संतों से उनकी जाति के विषय में नहीं पूछना चाहिए। उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं को ग्रहण करना चाहिए। साधु के ज्ञान को पूछना चाहिए। तलवार खरीदते समय उसके चमचमाते म्यान को नहीं देखना चाहिए स तेजधार को देखकर ही उसे लेना चाहिए। महत्व तलवार का होता है म्यान का नहीं।।

'निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।'

कबीरदास जी के अनुसार निंदा करने वाले को अपने पास ही रखना चाहिए क्योंकि वह अपने स्वभाव को बिना साबुन और पानी के स्वच्छ बनाता है हमको हमारी बुराई बताता है और सुधारने का प्रयास करता है।

'अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।।'

किसी भी कार्य की अति अच्छी नही होती है स जिस प्रकार प्रकृति की अत्याधिक वर्षा तथा अत्याधिक धूप अच्छी नही होती है, उसी प्रकार व्यक्ति का अधिक बोलना और अधिक चुप रहना भी ठीक नही होता है।

वर्तमान सन्दर्भ में सारा संत साहित्य नई प्रेरणा देने की क्षमता रखता है। यह स्वांतः सुखाय न होकर बहुजन हिताय तथा प्रेरणादायक है। संत साहित्य आज भी सजीव है स समाज में नवजीवन का संचार करता रहता है। समाज को नवीन चेतना प्रदान कर सामाजिक एकता के आदर्श को स्थापित करता है।

जीत निश्चित हो तो कायर भी जंग लग लड़ जाते है, बहादुर तो वो लोग होते हैं जो हार का पता होने के बाद भी लड़ना नहीं छोड़ते।

31 जुलाई पर विशेष

जयंती

आज भी समाज को आइना दिखाता है मुंशी प्रेमचंद का साहित्य

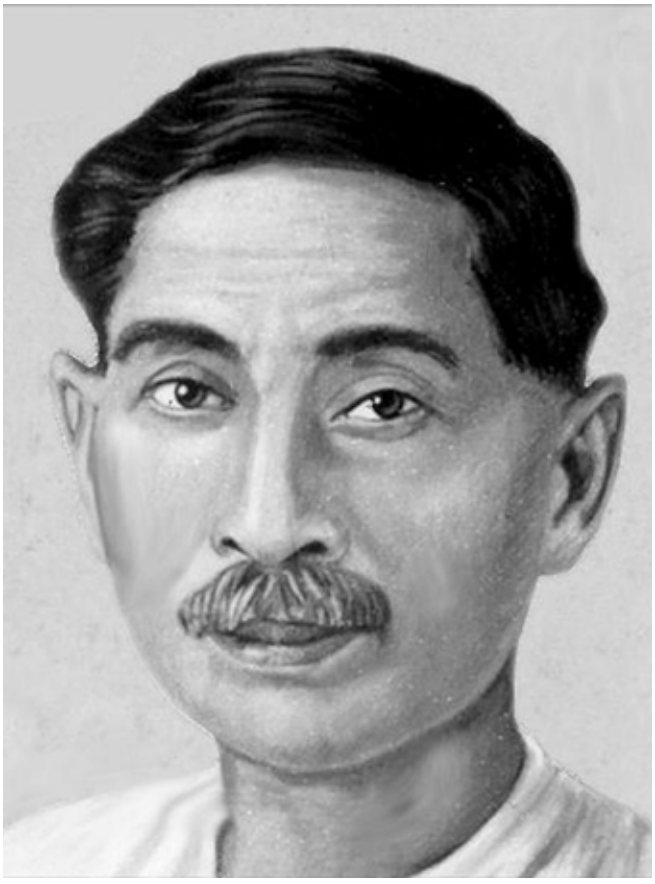

कृष्ण कुमार यादव
भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

साहित्य समाज के आगे चलने वाली मशाल है। कालजयी साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि, चरित्र और परिवेश के साथ बदलते युग में भी यह नया आख्यान रचता है। मुंशी प्रेमचंद का साहित्य इसी परम्परा को समृद्ध करता है। कोरोना महामारी का प्रकोप और उसके बाद जारी लॉकडाउन में विस्थापन, बेचारगी, सड़कों पर मीलों पैदल चलते कामगार और मजदूर, उनके पाँवों में पड़ते छाले और समाज के निचले तबके के लिए पैदा हुई दुश्वारियों ने एक बार फिर से मानो प्रेमचंद की कृतियों के पात्रों को जीवंत कर दिया हो। मुंशी प्रेमचंद की कृतियों के तमाम चरित्र, मसलन– होरी, मैकू, अमीना, माधो, जियावन, हामिद कहीं–न–कहीं वर्तमान समाज के सच के सामने फिर से तनकर खड़े हो गए। यही कारण है कि आज भी मुंशी प्रेमचंद की कृतियाँ विकास के तमाम प्रतिमानों के बीच भी समाज को आइना दिखाती हैं।

प्रेमचन्द ने 19वीं सदी के अन्तिम दशक से लेकर 20वीं सदी के लगभग तीसरे दशक तक, भारत में फैली हुई तमाम सामाजिक समस्याओं पर लेखनी चलायी। चाहे वह किसानों–मजदूरों एवं जमींदारों की समस्या हो, चाहे छुआछूत अथवा नारी–मुक्ति का सवाल हो, चाहे 'नमक का दरोगा' के माध्यम से समाज में फैले इंस्पेक्टर–राज का जिक्र हो, कोई भी अध्याय उनकी निगाहों से बच नहीं सका। प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को एक नया मोड़ दिया। जहाँ पहले साहित्य मायावी भूल–भुलैयों में पड़ा स्वप्नलोक और विलासिता की सैर कर रहा था, वहाँ प्रेमचन्द ने कथा साहित्य में जनमानस की पीड़ा को उभारा। ब्रिटिश सरकार भी मुंशी प्रेमचन्द की रचनाओं से भय खाती थी। जिसकी एक झलक उनकी 'जुलूस' कहानी में देखने को मिलती है। उनकी कृति 'रंगभूमि', 'गोदान' अथवा कहानी संग्रह 'मानसरोवर'

आज भी घर परिवार के बच्चों को संस्कारित करते हैं। इसी तरह लोभ, लालच और पाखंड पर आधारित लाटरी, अय्याश जमींदारों पर हमला करती 'शतरंज के खिलाड़ी' और नैतिक मूल्यों की रक्षा करती 'पंच परमेश्वर' आदि सभी कृतियां अतुलनीय हैं।

प्रेमचन्द के राष्ट्र–राज्य में दलित, स्त्रियाँ और किसान समान भाव से मौजूद हैं, जिनके विकास के बिना भारत के विकास के कल्पना भी बेमानी है। प्रेमचन्द ने 'होरी', 'घीसू', 'माधव' और 'धनिया' सरीखे पात्रों का चयन करके वाकई दिलों को छूने का काम किया। प्रेमचन्द ने कृषक समुदाय को भारत की प्राणवायु बताया। कर्ज में डूबे किसान, उन पर ढाये जाते जुल्म, उनकी बद से बद्तर होती गरीबी, व्यवस्थागत विक्षोभ और किसानों की समस्याओं को किसी भी साहित्यकार ने उस रूप में नहीं उठाया, जिस प्रकार प्रेमचन्द ने उठाया। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. विपिन चन्द्र की टिप्पणी गौरतलब है, ''यदि कभी बीसवीं शताब्दी में आजादी के पूर्व किसानों की हालत के बारे में इतिहास लिखा जाएगा तो इतिहासकार का प्राथमिक स्त्रोत होगा प्रेमचंद का 'गोदान', क्योंकि इतिहास कभी भी अपने समय के साहित्य को ओझल नहीं करता।'' 'गोदान' मात्र किसान की संघर्ष गाथा नहीं है वरन् इसमें स्त्री की बहुरूपात्मक स्थिति को दर्शाते हुए उसकी संघर्ष गाथा को भी चित्रित किया गया है। स्त्रियों के साथ समाज में हो रहे दोयम व्यवहार का प्रेमचन्द ने कड़ा विरोध किया और अपनी रचनाओं में उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व का दर्जा देते हुये, विकास की धुरी बनाया। 'गोदान' में अभिव्यक्त गोबर व झुनिया के बीच अवैध प्रेम और विवाह, सिलिया चमाइन और मातादीन पण्डित का प्रेम–प्रसंग जहाँ परम्परा में सेंध लगाते हैं और स्त्री को मुक्त करते हैं वहीं मेहता से प्रेम करते वाली मालती मलिन बस्तियों में मुफ्त दवा बाँट कर सामाजिक कार्यकत्री के रूप में नजर आती है तो क्लब–संस्कृति के बहाने वह जीवन का द्वैत भी जीती है। मेहता और मालती का प्रेम एक प्रकार से 'लिव–इन–रिलेशनशिप' का उदाहरण है।

'गोदान' ने प्रेमचन्द को हिन्दी साहित्य में वही स्थान दिया जो रूसी साहित्य में 'मदर' लिखकर मैक्सिम गोर्की को मिला। 'सेवा सदन' में एक वेश्या के बहाने प्रेमचन्द्र ने धर्म के नाम पर चलने वाले अनाथालयों एवं पाखण्डों का भण्डाफोड़ किया है। 'कर्मभूमि' में मुन्नी द्वारा बलात्कारी सिपाही की हत्या स्त्री–मुक्ति के संघर्ष का अनूठा साक्ष्य है। प्रेमचन्द का पूरा साहित्य ही दलित, स्त्री और किसान की लड़ाई का साहित्य है जिसमें समता, न्याय और सामाजिक परिवर्तन की घोषणा है। यहाँ धर्म, संस्कृति, रीति–रिवाज, जाति, वर्ण, ऊँच–नीच के लिये कोई जगह नहीं है, जगह है तो सिर्फ मानवता की– जिसके बिना जीवित रहना ही अकारथ है।

प्रेमचन्द ने छुआछूत की समस्या को दूर करना, सामाजिक समता के लिए महत्वपूर्ण बताया। परम्परागत वर्णाश्रम व्यवस्था के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा, "भारतीय राष्ट्र का आदर्श मानव शरीर है जिसके मुख, हाथ, पेट और पाँव– ये चार अंग हैं। इनमें से किसी भी अंग के अभाव या विच्छेदन से देह का अस्तित्व निर्जीव हो जाएगा।" वे प्रश्न उठाते हैं कि यदि वर्णाश्रम व्यवस्था के पाँव माने जाने वाले शूद्रों का सामाजिक व्यवस्था से विच्छेदन कर दिया जाय तो इसकी क्या गति होगी ? इसी आधार पर वे समाज में किसी भी प्रकार के छुआछूत का सख्त विरोध करते हैं। अपने एक लेख में वे लिखते हैं, ''क्या अब भी हम अपने बड़प्पन का, अपनी कुलीनता का ढिंढोरा पीटते फिरेंगे? यह ऊँच–नीच, छोटे–बड़े का भेद हिन्दू जीवन के रोम–रोम में व्याप्त हो गया है। हम यह किसी तरह नहीं भूल सकते कि हम शर्मा हैं या वर्मा, सिन्हा हैं या चौधरी, दूबे हैं या तिवारी, चौबे हैं या पाण्डे, दीक्षित हैं या उपाध्याय? हम आदमी पीछे हैं, चौबे या तिवारी पहले और यह प्रथा कुछ इतनी भ्रष्ट हो गई है कि आज जो निरक्षर भट्टाचार्य है, वह भी अपने को चतुर्वेदी या त्रिवेदी लिखने में जरा भी संकोच नहीं करता।'' प्रेमचन्द ने 1932 में महात्मा गाँधी द्वारा मैकडोनाल्ड अवार्ड द्वारा प्रस्तावित पृथक निर्वाचन के विरोध में किये गए आमरण अनशन का समर्थन किया और गाँधी जी के इन विचारों का भी समर्थन किया कि शेष हिन्दू समाज के लिये निर्वाचन की चाहे जितनी कड़ी शर्तें लगा दी जायें पर दलितां के लिये शिक्षा और जायदाद की कोई शर्त न रखी जाये और हरेक दलित को निर्वाचन का अधिकार हो। वस्तुतः प्रेमचन्द दलितां को समाज का एक अभिन्न हिस्सा मानते थे, इसलिये वे उनकी पृथक पहचान के लिए सहमत नहीं थे। यही कारण था कि उन्होंने नागपुर में हरिजनों के लिये स्थापित पृथक छात्रावास व्यवस्था की भी आलोचना की।

दलितों के सम्बन्ध में प्रेमचन्द द्वारा दिये गये उद्गारों से उन्हें ब्राह्मण विरोधी भी कहा गया पर प्रेमचन्द इसकी परवाह किये बिना हिन्दू समाज में व्याप्त विषमता की लगातार आलोचना करते रहे। उन्होंने दलितों के लिये काशी विश्वनाथ मंदिर के पट नहीं खोलने पर कहा, ''विश्वनाथ किसी एक जाति या सम्प्रदाय के देवता नहीं हैं, वह तो प्राणी मात्र के नाथ हैं। उनपर सबका हक बराबर–बराबर का है।'' शास्त्रों की आड़ में दलितों के मंदिर प्रवेश को पाप ठहराने वालों को जवाब देते हुए प्रेमचन्द ने ऐसे लोगों की विद्या–बुद्धि व विवेक पर सवाल उठाया और कहा, ''विद्या अगर व्यक्ति को उदार बनाती है, सत्य व न्याय के ज्ञान को जगाती है और इंसानियत पैदा करती है तो वह विद्या है और यदि वह स्वार्थपरता व अभिमान को बढ़ावा देती है, तो वह अविद्या से भी बदतर है।'' वर्णाश्रम व्यवस्था के समर्थकों द्वारा हिन्दू मंदिरों की दलितों से रक्षा करने के सन्दर्भ में वायसराय को सम्बोधित ज्ञापन की तीखी आलोचना करते हुए प्रेमचन्द ने वर्णाश्रम व्यवस्था समर्थकों पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए लिखा, ''राष्ट्र की वर्तमान अधोगति हेतु ऐसे ही लोग जिम्मेदार हैं। दक्षिणा में अछूतों द्वारा दिए गये पैसे लेने में इन्हें कोई पाप नहीं दिखता पर किसी अछूत के मंदिर में प्रवेश मात्र से ही इनके देवता अपवित्र हो जाते हैं। यदि इनके देवता ऐसे निर्बल हैं कि दूसरों के स्पर्श से ही अपवित्र हो जाते हैं, तो उन्हें देवता कहना ही मिथ्या है। देवता तो वह है, जिसके सम्मुख जाते ही चांडाल भी पवित्र हो जाए।'' प्रेमचन्द धर्म का उद्देश्य मानव मात्र की समता मानते थे एवं किसी भी प्रकार के विभेद को राष्ट्र के लिये अहितकर मानते थे। प्रेमचन्द का स्पष्ट मानना था, ''हरिजनों की समस्यायें मंदिर प्रवेश मात्र से नहीं हल होने वाली। उनके विकास में धार्मिक बाधाओं से कहीं कठोर आर्थिक बाधाएँ हैं।''

प्रेमचन्द ने सांप्रदायिकता पर भी कलम चलायी। प्रेमचन्द ने स्पष्ट रूप से कहा कि हिन्दू–मुसलमान की आपसी शिकायतें मसलन– "मुसलमानों को यह शिकायत है कि हिन्दू उनसे परहेज करते हैं, अछूत समझते हैं, उनके हाथ का पानी नहीं पीना चाहते तो हिन्दुओं को शिकायत है कि मुसलमानों ने उनके मंदिर तोडें, उनके तीर्थ स्थलों को लूटा, हिन्दू राजाओं की लड़कियाँ अपने महल में डालीं'', जायज हो सकतीं हैं पर इस आधार पर सांप्रदायिकता को उचित नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने हिन्दू–मुसलिम एकता को ही स्वराज का दर्जा दिया पर दोनों संप्रदायों की विशिष्टताओं के साथ। उन्होने एक दूसरे के धर्म का परस्पर आदर करने पर जोर दिया और कहा, ''हिन्दू और मुसलमान न कभी दूध और चीनी थे, न हांगे और न होने चाहिये। दोनों की पृथक–पृथक सूरतें बनी रहनी चाहिए और बनी रहेंगी।'' 1931 में मैकडोनाल्ड अवार्ड द्वारा दलितों के लिये पृथक निर्वाचन की व्यवस्था किये जाने पर मुसलमानों में भी पृथक और संयुक्त निर्वाचन पर बहस छिड़ी पर 19 अक्टूबर 1932 को लखनऊ में संपन्न हुए मुस्लिम सर्वधर्म सम्मेलन में पृथक निर्वाचन की अवधारणा को अस्वीकार कर दिया गया। इस पर टिप्पणी करते हुए प्रेमचन्द ने कहा कि राष्ट्रीयता ने पूना में प्रथम विजय पाई मगर लखनऊ में उसने जो विजय प्राप्त की है,उसने तो साम्प्रदायिकता को जैसे सुरंग में बारूद लगाकर उड़ा दिया हो।

प्रेमचन्द एक ऐसे राष्ट्र–राज्य का सपना देखते थे जो समतावादी समाज पर आधारित हो। यहाँ तक कि जब काशी में उन्होंने सरस्वती प्रेस खोला तो कर्मचारियों को रोज कुछ–न–कुछ देना ही पड़ता पर उतनी आय नहीं होने से सबकी माँग रोज पूरी नहीं हो पाती थी। ऐसे में प्रेमचन्द सबके सामने रोज शाम को आमदनी का हिसाब रख देते और कहते–''इतने पैसों में तुम्हीं लोग अपने और मेरे लिये ब्योंत कर दो, मुझे पान–तम्बाकू और इक्का–भाड़ा–भर देकर बाकी आपस में बाँट लो।'' वस्तुतः प्रेमचन्द के चिंतन और व्यवहार में समरसता और साहचर्य महत्वपूर्ण है, केंद्र–बिंदु बनना नहीं। यही कारण है कि ऐसे लोग जो आंदोलनों का केंद्र– बिंदु बनकर स्वयं के लिये कुर्सी हथियाना चाहते हैं, प्रेमचन्द उन्हें बाधा नजर आते हैं। उनके उपन्यास 'रंगभूमि' की प्रतियाँ जलाने वाले वर्गीय संरचनाओं की जटिलता और यंत्रणादायी व्यवस्था के स्तर को नहीं समझना चाहते, सिर्फ निश्चित फॉर्मूलों में निबद्ध दलित आत्मकथाओं व घृणित प्रतिक्रियाओं पर आधारित रचनाओं को ही दलित लेखन समझते हैं तो इसमें प्रेमचन्द का क्या दोष? प्रेमचन्द ने राष्ट्रीयता को पारिभाषित करते हुए लिखा, ''हम जिस राष्ट्रीयता की परिकल्पना कर रहे हैं, उसमें जन्मगत वर्ण व्यवस्था की गंध तक नहीं होगी। वह हमारे श्रमिकों और किसानों का साम्राज्य होगा, जिसमें न कोई ब्राह्मण होगा, न हरिजन, न क्षत्रिय, न कायस्थ। उसमें सभी भारतवासी हांगे, सभी ब्राह्मण होंगे या सभी हरिजन होंगे।''

महाजनी व्यवस्था पर भी प्रेमचंद ने कलम चलाई। इस पर उनका एक लेख 'हंस', सितम्बर 1936 में छपा था। उन्होंने उसी दौर में ही पूंजीवाद की आहट को समझ लिया था। यदि आज वे हमारे बीच में होते तो भी उनकी कलम में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी व्यवस्था के माध्यम से महाजनी का वर्तमान स्वरूप झलकता। अमेरिकन साम्राज्यवाद ने जिस तरह से विश्व भर के देशों को अपने कर्ज के जाल में जकड़ रखा है, उसकी वास्तविक तस्वीर प्रेमचन्द की लेखनी में नजर आती। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के पात्रों के बारे में एक बार कहा था, ''हमारी कहानियों में आपको पदाधिकारी, महाजन, वकील और पुजारी गरीबों का खून चूसते हुए दिखेंगे और गरीब किसान, मजदूर, अछूत और दरिद्र उनके आघात सहकर भी अपने धर्म और मनुष्यता को हाथ से न जाने देंगे, क्योंकि हमने उन्हीं में सबसे ज्यादा सच्चाई और सेवा भाव पाया है।''

समग्र लेखन की सबसे बड़ी विशेषता समाज के सभी पक्षों को उसमें समाहित करना है। प्रेमचंद के लगभग सभी पात्र कहानियों से निकल कर उपन्यासों से बाहर आकर एक अलग संसार रचते हैं और इन चरित्रों की छाप इतने गहरे उतरती है कि यह हमारे अवचेतन का हिस्सा हो जाते हैं। 'पंच परमेश्वर' के अलगू चौधरी और जुम्मन शेख न्याय की निष्पक्षता को एक रुहानी ऊँचाई देते हैं और हामिद के चिमटे में छिपी भावना पूरी 'ईदगाह' में बड़े मियाँ के सजदे में झुकने से भी बड़ी इबादत हो जाती है। काल्पनिक पात्र सजीव हो जाते हैं, किस्से–किवदंतियों में तब्दील हो जाते हैं और कथानकों के मामूली चरित्र रोजमर्रे में लोगों की जुबान पर नायक और महानायक की तरह चढ़ जाते हैं। यही कारण है कि प्रेमचन्द के लेखों में दक्षिणपंथी–मध्यमार्गी–वामपंथी, सभी धाराएँ फूटकर सामने आती हैं। चूँकि समाज विभाजित है, अतः उनके लेखन की भी पृथक–पृथक व्याख्या करता है। असहयोग आंदोलन के कारण गाँधी जी से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी से इस्तीफा देने के कारण किसी ने उन्हें गाँधीवादी कहा तो अपनी रचनाओं में वर्ग–संघर्ष को प्रमुखता से उभारने के कारण उन्हें साम्यवादी अथवा वामपंथी कहा गया। समाज में छुआछूत व दलितों की स्थिति पर लेखनी चलाने के कारण उन्हें दलित समर्थक कहा गया और नारी–मुक्ति को प्रश्रय देने के कारण उन्हें नारी–समर्थक कहा गया। आधुनिक दौर में उनके उपन्यास 'रंगभूमि' में सूरदास का जातिसूचक शब्द लिखे जाने पर इसकी प्रतियाँ जलाकर और 'कफन' जैसी रचना को आरोपित कर उन्हें मनुवादी तथा दलित–विरोधी भी कहा गया।

प्रेमचन्द का साहित्य और सामाजिक विमर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं और उनकी रचनाओं के पात्र आज भी समाज में कहीं–न–कहीं जिंदा हैं। आधुनिक साहित्य के स्थापित मठाधीशों के नारी–विमर्श एवं दलित–विमर्श जैसे तकिया–कलामों के बाद भी अंततः लोग इनके सूत्र किसी न किसी रूप में प्रेमचन्द की रचनाओं में ढूंढते नजर आते हैं। प्रेमचन्द जब अपनी रचनाओं में समाज के उपेक्षित व शोषित वर्ग को प्रतिनिधित्व देते हैं तो निश्चिततः इस माध्यम से वे एक युद्ध लड़ते हैं और गहरी नींद सोये इस वर्ग को जगाने का उपक्रम करते हैं। राष्ट्र आज भी उन्हीं समस्याओं से जूझ रहा है जिन्हें प्रेमचन्द ने काफी पहले रेखांकित कर दिया था। चाहे वह जातिवाद या सांप्रदायिकता का जहर हो, चाहे कर्ज की गिरफ्त में आकर आत्महत्या करता किसान हो, चाहे नारी की पीड़ा हो, चाहे

शोषण और समाजिक भेद–भाव हो। इन बुराईयों के आज भी मौजूद होने का एक कारण यह है कि राजनैतिक सत्तालोलुपता के समांतर हर तरह के सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक आन्दोलन की दिशा नेतृत्वकर्ताओं को केंद्र–बिंदु बनाकर लड़ी गयी जिससे मूल भावनाओं के विपरीत आंदोलन गुटों में तब्दील हो गये एवं व्यापक व सक्रिय सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा कुछ लोगों की सत्तालोलुपता की भेंट चढ़ गयी।

बचपन की यादें

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

बचपन की यादें सुखद, दें मीठे अहसास।
बचपन के दिन थे भले, थे बेहद ही ख़ास।।

दोस्त–यार सब थे भले, जिनकी अब तक याद।
कुछ ऊँचे अफसर बने, वे अब भी आबाद।।

कुछ पढ़ने में तेज थे, कुछ बेहद कमजोर।
शिक्षक सच्चे गुरू, रखा काम पर जोर।।

बचपन प्यारा था बहुत, सुंदर थे सब कक्ष।
मेरी शाला भव्य थी, नालंदा–समकक्ष।।

दिन शाला के स्वर्ण थे, मस्ती अरु आनंद।
नहीं फिक्र, चिंता रही, केवल मौज पसंद।।

पढ़ना सचमुच कष्टमय, मस्ती से पर प्यार।
शाला के दिन यूँ समझ, माया का संसार।।

कुछ शिक्षक बेहद भले, कुछ हिटलर का रूप।
हम सबसे जो ऐंठकर, बने अकड़ के भूप।।

पैदल ही दौड़े बहुत, शाला यद्यपि दूर।
खेल कबड्डी–दौड़ के, रखते व्यापक नूर।।

पिकनिक, मस्ती, खेल की, बहुत निराली शान।
टॉकिज फिल्मों का किया, हर पल ही जयगान।।

उड़ा पतंगें मस्तियाँ, शाला थी रंगीन।
पर पीटें पापा कभी, बन जाता तब दीन।।

सीखा हमने मन लगा, करना सद् आचार।
करना आदर सीखकर, पावन बने विचार।।

शाला की यादें भली, ना भूलूँ ताउम्र।
मीठापन जो दे रहीं, बना रहीं अति नम्र।।

सोचूँ बचपन लौटकर, आ जाता इक बार।
तो कुछ दिन को ही सही, मुस्काता संसार।।

बचपन तो मासूम था, किंचित भी नहिं झूठ।
अब तो देखो सत्य का, खड़ा हुआ बस ठूँठ।।

पावन था बचपन बहुत, पर अब तो बस याद।
सब कुछ तो है अब मगर, हासिल है अवसाद।।

बचपन में तो धर्म की, कोई नहिं दीवार।
ऊँचनीच से दूर रह, करते थे सब प्यार।।

बचपन नित जिन्दा रहे, तो सुखमय संसार।
अँधियारा रोये कहीं, पले मात्र उजियार।।

.....गतांक से आगे

रामचरित मानस एवं राक्षसों के मानवोचित मूल्य

प्रो. विनीत मोहन औदिच्य
विभागाध्यक्ष अंग्रेजी
वरिष्ठ कवि एवं गजलकार
सागर, मध्य प्रदेश

इसी प्रकार लक्ष्मण के हनुमान जी द्वारा लाई गई संजीवनी बूटी से उपचार के बाद ठीक होने पर निराश रावण अपने भाई कुम्भकर्ण को गहन निद्रा से अनेक प्रयत्न कर जगाता है। जब कुम्भकर्ण समस्त घटनाक्रम के बारे में जानता है तो उसकी पहली प्रतिक्रिया यही होती है

सुनि दसकंधर बचन तब कुंभकरन बिलखान।
जगदंबा हरि आन सठ अब चाहत कल्यान।। *(लंकाकाण्ड – दोहा 62/पृ.सं – 832)*

अजहूँ तात त्यागि अभिमाना ।भजहु राम होइहि कल्याना ।।
कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देवक। सिव बिरंचि सुर जाके सेवक।। *पृ.सं – 833*

रणभूमि में अपने अनुज विभीषण से सामना होने पर वह कह उठता है

सुनु सुत भयउ काल बस रावन। सो कि मान अब परम सिखावन।।
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषण। भयउ तात निसिचर कुल भूषन।।
बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर। भजेहु राम सोभा सुख सागर।।

बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउँ कालबस वीर ।।

(लंकाकाण्ड दोहा – 64/पृ.सं – 834)

जब रावण के गुप्तचर के रूप में श्री राम जी और उनके सैन्य बल का भेद लेने भेष बदल कर शुक जाता है तो अत्यंत प्रभावित होकर लंका लौटता है और तथ्यपरक जानकारी देने के पश्चात रावण को अपनी ओर से सलाह देता है ।

कह सुक नाथ सत्य सब बानी। समझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी।।
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा। नाथ राम सन तजहु बिरोधा
जनक सुता रघुनाथहि दीजे। एतना कहा मोर प्रभु कीजे।।

(सुंदरकाण्ड – पृ.सं – 765)

जब विभीषण अपने भाई दशानन से हनुमान जी द्वारा लंका दहन के पश्चात श्री राम जी को सीता माता को सम्मान सहित वापिस लौटा देने का आग्रह करते हैं तब रावण का अनुभवी मंत्री व उसका नाना माल्यवंत, विभीषण के मत का समर्थन करते हुए रावण को परामर्श देते हुए कहता है

तात अनुज तव नीति बिभूषन। सो उर धरहु जो कहत विभीषन।।

पृ.सं – 750

एक अन्य स्थान पर वरिष्ठ मंत्री होने के नाते माल्यवंत पुनः रावण को सलाह देता है

जब ते तुम्ह सीता हरि आनी। असगुन होहिं न जाहिं बखानी।।
हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान।
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान।। 48 क
काल रूप खल बन दहन गुनागार घनबोध।
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन बिरोध ।। 48 ख
परिहरि बयरु देहु बैदेही। भजहु कृपानिधि परम सनेही ।।

लंकाकाण्ड – पृ.सं – 819

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस में अरण्यकाण्ड से लंकाकाण्ड तक अनेक प्रसंग हैं जो तामसी वृत्ति से परिपूर्ण राक्षसों के सकारात्मक, मानवीय व आध्यात्मिक मूल्यों को उजागर करते हैं और यह संदेश देते हैं कि भले ही राक्षसों ने विभिन्न कारणों से यह अधम जन्म पाया हो परंतु उनके अंतःकरण से नैतिक मूल्य पूरी तरह से विलुप्त नहीं हुए हैं। वे अखिल ब्रह्मांड विजेता दशानन के राज में, किसी के भी समक्ष बिना भय के सत्य को कहने का साहस रखते हैं, यही तथ्य आदर्श रामचरित मानस ग्रंथ को आधुनिक काल में भी लोकप्रियता, महानता व शाश्वत प्रासंगिकता प्रदान करता है। ■

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2023

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णतः निः शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेलः **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

प्रेमचंद

मेघना रॉय
शोधार्थी, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश

31 जुलाई 1880 को लमही में जन्मे, 8 अक्टूबर वाराणसी में हुआ अवसान प्रेमचंद तुम सबसे महान, आदर्श यथार्थ के तुम है सर्जक, उपन्यास विधा के तुम प्रवर्तक। कथा कहानी के रचते सजीव पात्र, जीवन गाथा में बहते कहते नित नित।

प्रेमचंद तुम सबसे महान...।
हामिद चिमटा लेता
अपना दिखता,
बूढ़ी काकी
आज भी मिलती,
कहीं धर्म ज्ञान का
गढ़ते झूठा स्वांग,
सिलिया को भरमाता पंडित,
प्रेमचंद तुम सबसे महान..।

डॉ. चड्ढा के गर्म मिज़ाज,
आज भी मरीजों की ले लेते जान,
पर ..तुम्हारा भगत आज भी मंत्र फूक बचाते प्राण,
प्रेमचंद तुम सबसे महान..।

बुधिया जीवन हार गयी,
नहीं मिल सका उसे कफन।
घीसू माधो झूमते
लिए मधुशाला संग,
होरी धनिया
आज भी मरते,
लिए आस गोदान की तकते।
प्रेमचंद तुम सबसे महान..।

निर्मला दे जाती शिक्षा,
बेमेल विवाह जीवन का मरण।
सभी पात्र मानवता से सर्जित,
गढ़ रहे हैं मानव का जीवन...
हे! कलम के जादूगर!
तुम हो सबसे महान...

पाकर तुम्हें साहित्य हुआ गौरवान्वित।।

योग माया पराशक्ति सीता

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, ऊत्तर प्रदेश

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को सीता नवमी कहते हैं, क्योंकि इसी दिन सीता जी का प्राकट्य हुआ था। इस पर्व को जानकी नवमी भी कहते हैं।

शास्त्रों के अनुसार वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को पुष्य नक्षत्र में जब राजा जनक संतान प्राप्ति की कामना से यज्ञ की भूमि तैयार करने के लिए हल से भूमि जोत रहे थे, उसी समय पृथ्वी से एक बालिका का प्राकट्य हुआ। जोती हुई भूमि को तथा हल् की नोक को भी सीता कहा जाता है, इसलिए बालिका का नाम सीता रखा गया।

इस दिन वैष्णो संप्रदाय के भक्त माता सीता के लिए व्रत रखते हैं और पूजन करते हैं। मान्यता है कि जो भी इस दिन राम सहित सीता का विधि विधान से व्रत पूजन करता है उसे पृथ्वी दान का फल, सोलह महान दनों का फल तथा सभी तीर्थो के दर्शन का फल अपने आप मिल जाता है।

उपनिषदों, वैदिक वांगमय में उनकी महिमा व अलौकिकता के उल्लेख में होने शक्ति स्वरुपा कहा गया है। ऋग्वेद में वह असुर संहारिणी व कल्याणकारिणी हैं। सीतोपनिषद् में वे मूल प्रकृति विष्णु सानिध्या हैं। रामतापनियोंपनिषद में वे आनंद दायनी, आदिशक्ति स्थिती, उत्पत्ति कारिणी हैं।

आर्ष ग्रंथों में सीता सर्व वेदमई , देवमई लोकमई तथा इच्छा क्रिया ज्ञान की संगमन है। तुलसीदास जी उन्हें सर्व क्लेश हरिणी उद्भव स्थिति संहारिका व राम बल्लभा कहा है। पदम पुराण उन्हें जगन्माता, अध्यात्म रामायण उन्हें एक मात्र सत्य, योग माया का साक्षात स्वरूप और महा रामायण की समस्त शक्तियों की स्त्रोत तथा मुक्ति दायिनी कह उनकी आराधना करता है।

रामतापनियोपनिषद में सीता को जगत की आनंदानी, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार की अधिष्ठात्री कहा गया है। यद्यपि तुलसीदास जी ने सीता के कन्या तथा पत्नी रूपों को ही दर्शाया है। किंतु आदि कवि वाल्मीकि ने उनमें वात्सल्य व स्नेह को भी दर्शाया है।

निर्णय सिंधु के कल्पतरु ग्रंथानुसार फागुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी में सीता प्राकट्य हुआ था, अतः दोनों ही तिथियां उन्हीं के लिए मान्य है। तुलसीदास ने बालकांड के प्रारंभिक श्लोक में सीता जी की ब्रह्मा की तीन क्रियाओं – उदभव स्थिति व संहार की संचालिका तथा आद्याशक्ति के रूप में उनकी वंदना की है –

उदमवीस्थिति संहारकारिणम,
सर्वश्रेयस्करी सीता नतोअहम रामबललभाम।

(अद्भुत रामायण)

सीता स्वयं को पृथ्वी की पुत्री मानती थी और अनेकों बार अग्नि में प्रवेश करके साक्षात प्रकट हुई। इससे सिद्ध होता है कि वे योगाअग्नि साक्षात थी जिसे स्पर्श करते ही अग्नि शांत हो जाती थी।

सीतोपनिषद अथर्व वेद का ही एक भाग है। इस उपनिषद के अनुसार देवगढ़ तथा प्रजापति के मध्य हुए प्रश्न उत्तर में सीता को शाश्वत शक्ति व प्रकृति का स्वरूप बताया गया है। इसमें सीता शब्द का अर्थ अक्षर ब्रह्म की शक्ति के रूप में हुआ है। यह नाम साक्षात योग माया का है। सीता को प्रभु राम का सानिध्य प्राप्त है। इसलिए वे विश्वकल्याण कारक हैं। सीता क्रिया, इच्छा व ज्ञान तीनों शक्तियों का एकल रूप है। वे परमात्मा की क्रिया शक्ति रूप में भगवान श्री हरि के मुख् से नाद रूप में प्रकट हुई हैं। वे प्रणव यानी ओंकार की वाचक हैं, एवं उनका नाम ही प्रणवनाद ओमकार स्वरूप है। परा प्रकृति व महामाया भी वही है।

उपनिषद के अनुसार सीता शब्द का पहला अक्षर भी परम सत्य से प्रवाहित हुआ है और वाक की अधिष्ठात्री वागदेवी स्वयं है। उन्हीं से समस्त वेद प्रवाहित हुए है। सीतापति राम से समस्त ब्रह्मांड व सृष्टि उत्पन्न हुए हैं। जिन्हें ईश्वर शक्ति 'सीता 'धारण करती है।

सीता जी भूमात्मजा है, प इसलिए सूर्य चंद्र एवं अग्नि का प्रकाश उनका नील स्वरूप हैं। चंद्रमा की किरणें अमृत दायिनी सीता का प्राणदायी व आरोग्यवर्धक प्रसाद है । वहीं हर औषधि की प्राणतत्व हैं। उपनिषद के अनुसार सूर्य की प्रचंड शक्ति द्वारा सीता ही काल निर्माण व ह्रास करती हैं। वे काल धात्री भी हैं। पदनाम महाविष्णु क्षीरसागर के स्वामी श्री मन्नारायण के वृक्षस्थल पर श्री वत्स के रूप में वे ही विद्यमान है।

कामधेनु और स्यंमतक मणि भी जानकी जी है। वेदपाठी अग्निहोत्री द्विजवर्ग के अनंत कर्मकांड, संस्कार पूजन हवन या तंत्र विधियां सभी की शक्ति सीता ही है। उपनिषदों में वर्णन किया गया है कि स्वर्ग की अप्सरायें उर्वशी रंभा मेनका आदि इनके सम्मुख नृत्य करती हैं और नारद वीणा वादन करते हैं। व अनेक ऋषि गण विभिन्न वाद्य बजाते हैं। सीता उपनिषद में लिखा है कि सीता कालातीत व काल से भी परे हैं, वे आदि शक्ति भगवती हैं। यह संसार उन्हीं की करूणा एवं अनुग्रह से चल रहा है।

रामकथा के स्थूल रूप में सीता नामक जिन देवी का उल्लेख आता है उसमें इसी आदिशक्ति के रहस्यों का विवेचन किया गया है। अतएव राम परात्पर ब्रह्म है तो भगवती सीता उनकी अहलदिनी शक्ति है।

देवी भागवत पुराण में भी उनके शक्ति स्वरूप का दर्शन मिलता है, जबकि तत्व संग्रह रामायण में वह महाशक्ति, आद्यशक्ति समन्विता रूप में दिखती हैं। संत एकनाथ कृत भावार्थ रामायण में वे प्रत्यक्ष रूप से दैत्य मूलकासुर का संहार करती हैं। आनंद रामायण में सीता जी के द्वारा अनेक असुरों का वध होता है। जबकि अद्भुत रामायण में वह सहस्त्रस्कंध रावण का वध करने के लिए रौद्र रूप धारण करती हैं तथा तांडव नृत्य आरंभ कर देती है जिससे महाकाल तक कांप उठते हैं।

तब श्री राम को स्वयं उनकी स्तुति जानकी सहस्त्रनाम द्वारा करनी पड़ती है जिससे वह शांत होती हैं। निसंदेह सीता ने अनेकों ऐसे कार्य किए जो स्वयं श्रीराम भी ना कर पाए। अतएव विभिन्न वांगमयों में उनके शक्ति स्वरूप व योगमाया शक्ति के अनजाने पक्ष से लोक मानस सदैव लाभान्वित व चमत्कृत रहेगा।

संदर्भ
1. *दैनिक ट्रिब्यून ऑनलाइन हॉट डॉट कॉम*
2. *अमर उजाला . कॉम*
3. *नईदुनिया एंड वैलनेस डॉट कॉम*
4. *स्वामी मुकुंद आनंद की राम कथा।*

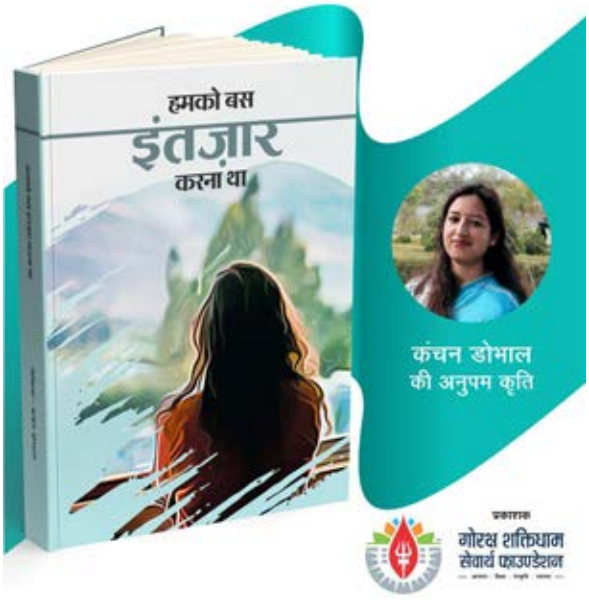

साहित्य के दर्पण में

मुखड़ा देखने की कवायद : परिष्कृत मनोदशा के स्वरूप का यथार्थवादी चिंतनशील परिदृश्य

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च
स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

" समाज में ऐसे कौन से सतोप्रधान स्वरूप में पवित्र कारक हैं जो जीवन के उत्कर्ष एवं उन्नयन के लिए निरंतर रूप से प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं और मानव जाति उनका अनुकरण और अनुसरण करते हुए जाने – अनजाने अति महत्वपूर्ण अपने प्रयासों को प्रभावशाली गति देने में समर्पित भाव एवं विचार के साथ संलग्न हो जाया करती है। ज्ञान के स्रोत और उसका उत्सर्जन किन्हीं एकांगी स्वरूपों में विद्यमान नहीं होता है बल्कि इसकी अनेकानेक विधाएं विभिन्न स्थितियों के माध्यम से अपनी प्रेरणादाई कहानी सदा ही अभिव्यक्त किया करती हैं। ज्ञान को बोध का विषय बनाने का प्रयास और उसे समाज की व्यावहारिक स्थितियों के मध्य उपस्थित कर देने की तमन्नायें जब साहित्य के साध्य का केंद्र बिंदु बन जाएगा, तब ही मानवीय व्यवहार की सकारात्मक एवं सार्थक प्रस्तुतियां, समाज को सतोगुणी रूप से सक्षम बनाने में समर्थ सिद्ध हो सकेंगी ।

जीवन में साधक, साधन और साध्य की पवित्रता जितनी अक्षुण्य है उतना ही अध्ययन और आनंद के पावन – प्रसंगों का अवबोध होना आवश्यक है जो उत्कृष्ट समाज के निर्माण का द्योतक भी है जिसकी जीवित , जीवंतता को श्रीमान सफदर हाशमी साहब ने अपनी रचना में उल्लेखित किया है – " किताबें कुछ कहना चाहती हैं, किताबें करती हैं बातें, बीते जमानों की, दुनिया की, इंसानों की, आज की, कल की, एक – एक पल की, खुशियों की, गमों की, फूलों की, बमों की, जीत की, हार की, प्यार की, मार की, क्या तुम नहीं सुनोगे, इन किताबों की बातें ? किताबें कुछ कहना चाहती हैं , तुम्हारे पास रहना चाहती हैं, किताबों में चिड़ियां चहचहाती हैं, किताबों में खेतियां लहलहाती हैं, किताबों में झरने गुनगुनाते हैं, परियों के किस्से सुनाते हैं , किताबों में रॉकेट का राज है, किताबों में साइंस की आवाज है, किताबों का कितना

बड़ा संसार है, किताबों में ज्ञान की भरमार है, क्या तुम – इस संसार में नहीं जाना चाहोगे? किताबें कुछ कहना चाहती हैं, तुम्हारे पास रहना चाहती हैं। "

सामाजिक परिदृश्य का वास्तविक दर्पण है साहित्य : सृजन के आरंभिक काल का मूल्यांकन आज भले ही अतीत की स्मृतियों को जागृत करने की स्थिति तक ही सीमित दिखाई देता हो लेकिन सच्चाई का मुखरित स्वरूप मानवीय समाज को झंकृत करने के लिए स्वयं में पर्याप्त है। किसी भी व्यवस्था का बाल्यकाल सतोगुणी स्वरूप में रहता है लेकिन विस्तार का समायोजन धीरे – धीरे स्थितियों के परिवर्तित होते स्वरूप को रजोगुणी और अंततः तमोगुणी अवस्था में लाकर खड़ा कर देता है। सामाजिक परिवर्तन के ताने – बाने में स्वयं को खरा सिद्ध करने की होड़, मानव समाज के लिए आज सबसे बड़ा मुद्दा बनकर जरूर उभरा है लेकिन अपने अस्तित्व की रक्षा करने के तरीके दिन पर दिन इतने दूषित होते जा रहे हैं कि – 'इंसान को इंसान समझ पाना ...' मुश्किल प्रतीत हो रहा है। सामाजिक परिदृश्य का वास्तविक दर्पण होता है – 'साहित्य ' इस सच्चाई को जानने के बावजूद भी सामाजिक वर्जनाओं की निरंतर प्रस्तुतियां समाज के सम्मुख विशिष्ट कावायदों के साथ परोसने का प्रचलन – " जो हो रहा है , वही बताने का प्रयास है " यह अभिव्यक्ति, निज धर्म के कर्तव्य की इति श्री! का पर्याय बन जाए तो कुछ कहना और समझना शेष नहीं रह जाता है।

मानव जीवन की अभिलाषा का उच्चतम पैमाना : हम क्या थे ? और क्या होना चाहिए ? के प्रति संवेदनशील साहित्य और उसका सृजनात्मक स्वरुप निश्चित ही समाज को एक नई दिशा दे सकता है जिसमें वर्तमान की बर्बरता और शोषक, शोषण और शोषित को पोषित करने की स्थितियों के उभयपक्षीय परिदृश्य के लिए कोई भी स्थान नहीं होता है । मानव जीवन की अभिलाषा से संबंधित गीत एवं संगीत, उच्चतम पैमाने पर स्थित हो जाए और वह मोक्ष के इर्द – गिर्द स्वयं को स्थापित करने के सकारात्मक प्रयास करता रहे इसकी प्रबल संभावनाएं इस बात का संकेत देती हैं कि – " इंसानियत के पैगाम जेहन में इस कदर समा चुके हैं कि उनकी रचनाधर्मिता से संबद्ध सृजनात्मकता का अक्षुण्य स्वरूप ..." किसी न किसी रूप में संसार में विद्यमान रहता ही है। समाज में ऐसे कौन से सतोप्रधान स्वरूप में पवित्र कारक हैं जो जीवन के उत्कर्ष एवं उन्नयन के लिए निरंतर रूप से प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं और मानव जाति उनका अनुकरण और अनुसरण करते हुए जाने – अनजाने अति महत्वपूर्ण अपने प्रयासों को प्रभावशाली गति देने में समर्पित भाव एवं विचार के साथ संलग्न हो जाया करती है। ज्ञान के स्रोत और उसका उत्सर्जन किन्हीं एकांगी स्वरूपों में विद्यमान नहीं होता है बल्कि इसकी अनेकानेक विधाएं विभिन्न स्थितियों के माध्यम से अपनी प्रेरणादाई कहानी सदा ही अभिव्यक्त किया करती हैं ।

सतोगुणी स्वरूप में सामाजिक सक्षमता का सामर्थ्य : स्वयं के लिए हम कितना और कहां तक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ? इसका अंदाजा केवल अनुभव के माध्यम से ही लगाया जा सकता है क्योंकि इसके मूल्यांकन हेतु संसाधनों का उपयोग और उसकी उपयोगिता के आधारभूत बिंदु की खोज मनुष्य के लिए आदिकाल से ही चिंतन का विषय रहा है। ज्ञान और सूचनाओं के मध्य अंतराल स्थापित करने वाला मानव समाज अपनी समझ के विकसित स्वरूप को जानने के लिए जीवन की अनुभूतियों को आधार तो बनाता है लेकिन इसे– ' सत्य की कसौटी पर खरा उतारने के लिए स्वयं को साहित्य के दर्पण में देखने की कवायद...' नहीं करता है। ज्ञान को बोध का विषय बनाने का प्रयास और उसे समाज की व्यावहारिक स्थितियों के मध्य उपस्थित कर देने की तमन्नायें जब साहित्य के साध्य का केंद्र बिंदु बन जाएगा तब ही मानवीय व्यवहार की सकारात्मक एवं सार्थक प्रस्तुतियां, समाज को सतोगुणी रूप से सक्षम बनाने में समर्थ सिद्ध हो सकेंगी। आज सूचनाओं के दृश्य और श्रव्य माध्यम का मानव मस्तिष्क पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा है जिससे पठन – पाठन की सामान्य प्रक्रिया को गहरा आघात पहुंचा है जिसके परिणाम स्वरूप अध्ययन के संदर्भों को अब जीवन के आश्चर्यजनक प्रसंगों से जोड़कर देखा जाने लगा है।

समृद्ध साहित्य में सृजनात्मकता की सशक्त बानगी : साहित्य केवल जीवन की विडंबनाओं और छद्म लालसाओं का स्वरूप तथा परिस्थितिजन्य, अभिव्यंजनाओं से सराबोर इतिहास की झलक को उकेरने का माध्यम नहीं है बल्कि – ' पुण्यों की पहल को मानव समाज द्वारा आत्मसात कर व्यवहारिक धरातल पर कुछ कर गुजरने हेतु सतत अभिप्रेरणा...' का पर्याय है । साहित्य की समृद्धता और सृजनात्मकता अपनी सशक्त बानगी को जब विहंगम परिदृश्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत – श्रेष्ठ पंथ , पवित्र ग्रंथ और महान संत, परंपरा के सानिध्य में ऋषि – मुनियों द्वारा धर्म ग्रंथों के सृजनात्मक स्वरुप द्वारा – वेदों, पुराणों एवं उपनिषदों के रूप में संपन्न होता है और – रामायण, महाभारत, गीता, बाईबल और कुरान के साथ ही भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा राष्ट्रीयता की पुनर्स्थापना हेतु – ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, प्राकृतिक, ज्योतिषीय, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्र में अनेकानेक महान कृतियों के विविध, विराट स्वरूप में संजोकर समाज के समग्र उत्कर्ष हेतु संपूर्ण समर्पित भाव के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं तब मानव समाज न केवल गौरवान्वित होता है बल्कि धन्यता से भरपूर भी हो जाता है। इस बात में कोई दो मत नहीं है कि कोई भी साहित्य विभिन्न सामाजिक सरोकारों को – ' देश , काल एवं परिस्थितियों अनुसार... ' अत्यंत ही गूढता से युक्त यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं जिसमें परिवर्तन और परिवर्धन की पर्याप्त गुंजाइश सदा ही हुआ करती है ।

सकारात्मक दृष्टि एवं सार्थक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता : मानव समाज जिसके मध्य आदान – प्रदान की क्रियाएं अपनी गतिशीलता से चलती रहती हैं जिनमें मान्यताओं एवं परंपराओं का प्रचलन किन्हीं रूढ़िवादिता का पर्याय नहीं होता है तथा इस बात को अधिक महत्व दिया जाता है कि – " संपूर्ण मानव जाति को व्यक्तिगत रूप से आज अपनी दृष्टि को सकारात्मक एवं दृष्टिकोण को व्यावहारिक स्वरूप में सार्थक ... " बनाने की आवश्यकता है। जिस समाज में यह मान्यता अपने बलवती स्वरूप में स्थापित हो

जाती है और जिसमें यह सत्य समाहित रहता है कि – ' व्यक्तिगत स्तर पर निजी दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम पाप है ... ' तथा समतायुक्त व्यवहार तथा उसका प्रचलित स्वरूप जब यह अभिव्यक्त करने में सक्षम हो जाता है कि– 'मानवीय दृष्टिकोण की सर्व के प्रति समभाव से भरपूर समता ही सच्चे अर्थों में पुण्य है ... ' उस वास्तविक समाज में साहित्य के प्रति एक विशिष्ट प्रकार की आत्मीयता नैसर्गिक रूप से विकसित हो जाती है ।

मूल्यपरक साहित्य की सर्जना का सृजनात्मक समाधान : साहित्य के सरोकार आज मानव को अपने केंद्र में रखने की तमाम कोशिशें करने में संलग्न हैं किंतु प्रयास, अनुभूति और प्रेरणाओं के अंतराल को पूरी तरह से पाट, पाना आज भी साहित्य जगत के लिए चुनौती बना हुआ है। जहां तक मूल्यपरक साहित्य की सर्जना का प्रश्न है? इसकी रचनात्मकता पर सर्वाधिक प्रश्नचिन्ह समाज ने लगाए हैं? क्योंकि " मूल्यों को समाज में स्थापित करने की सबसे बड़ी नैतिकता से ओत – प्रोत दायित्व के सानिध्य में जिम्मेदारी एवं जवाबदेही साहित्य ... " की ही थी। एक प्रश्न और जिसमें सामाजिक विघटन तथा अजीबोगरीब रिश्तों की बुनियाद का फलता – फूलता स्वरूप किन्हीं विश्वमयकारी स्थितियों का द्योतक बन जाता है जो इस प्रश्न को बार – बार उठाता है कि – आखिर किन कारणों से मानव समाज की वृत्ति, प्रवृत्ति एवं मनोवृति? साधारण सोच से व्यर्थ सोच की ओर बढ़ते हुए कुछ समयावधि के पश्चात धीरे – धीरे नकारात्मक प्रवृत्तियों का गुलाम बन जाया करती है ? मानव जाति को इस भयावह पीड़ा से बाहर निकालते हुए – आत्मिक स्वतंत्रता के मार्ग को प्रशस्त करने का महत्वपूर्ण कार्य – " मूल्यपरक साहित्य की निरंतर सर्जना के सृजनात्मक समाधान ... " में पूरी तरह से समाहित है।

संकल्पित आत्मबल से अंत:करण द्वारा जीवन परिवर्तन: मानव समाज में सकारात्मक प्रवृत्तियों के विकसित स्वरूप को स्थापित करने हेतु कितनी गहराई से पड़ताल की आवश्यकता आज प्रतीत हो रही है यह यक्ष प्रश्न इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है? क्योंकि नैतिक होने की मुश्किलें दिन – प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। अंततोगत्वा साहित्य समाज को यह अभिव्यक्त करने में गौरवान्वित महसूस करता है कि – " अनैतिक होने से अधिक उपयुक्त जीवन का पवित्र स्वरूप में नैतिक होना है ... " क्योंकि सामाजिक मनोदशाएं स्वयं को यह बात समझाने में जब सक्षम होंगी तो निश्चित ही साहित्य की उपयोगिता समाज के उत्कर्ष का आधारभूत कारण बन जाएगी। दृढ़ संकल्पों से ओत – प्रोत अंत:करण जब स्व परिवर्तन की बागडोर , आत्मगत स्वरूप में स्वयं को नैतिक जिम्मेदारी के साथ सौंप देता है तब – " साहित्य के दर्पण में मुखड़ा देखने की कवायद कभी भी निष्फल नहीं होती है जिसकी परिणति परिष्कृत मनोदशा के स्वरूप ... " में विहंगम यथार्थवादी चिंतनशील परिदृश्य के माध्यम से सृजनात्मक मानवता को मानवतावादी विचारधारा के द्वारा सहज ही प्राप्त हो जाती है।

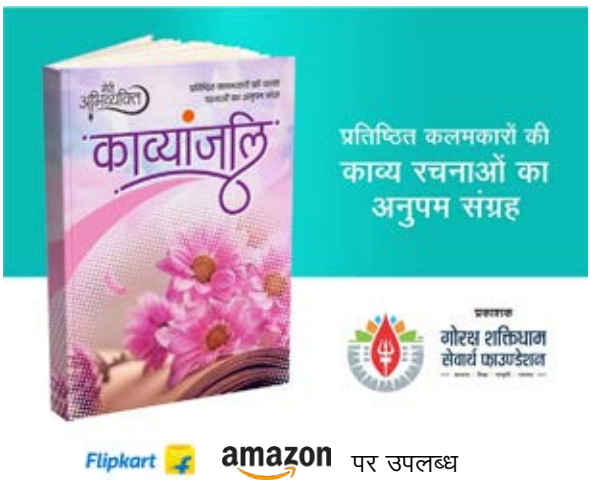

स्थायी स्तम्भ

.....गतांक से आगे

महत चिंतन श्रृंखला

1. **धर्म की ताकत और कमजोरी :** धर्म हथियार क्यों बनते गये और लोगों ने इसका उपयोग अनुयायियों पर ही क्यों किया? क्या धर्म की बुनियाद कमजोर रही या लोगों ने धूर्तता दिखाई? धर्म अत्यन्त व्यक्तिगत, पवित्र, विश्वास के साथ मानने की चीज है। इसमें किसी के हस्तक्षेप की कोई सम्भावना नहीं है। हमारा अन्तःकरण ही जानता, पहचानता है कि हमारी धार्मिकता क्या है। इसकी दशा, दिशा स्वतः तय होती है जो हमारे जन्म–जन्म के संस्कारों से संचालित है।

चन्द लोग हैं जिन्हें पहचानने की जरुरत है। ये आपको जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, दलित और पीड़ित के नाम पर केवल भ्रमित करेंगें, हमें एक–दूसरे से लड़ायेंगे। हम सब मारे जायेंगे और हमारी ही हानि होगी।

सही और गलत लोगों की पहचान करो। ये कहीं भी हो सकते हैं, हमारे–तुम्हारे घरों में भी। ये हमें ही, हमारे खिलाफ खड़ा करते हैं। ये खास विचारधारा के लोग हैं और इनका एकमात्र एजेण्डा है देश को नष्ट करना। ये सब जगह व्याप्त हैं और अपने खेल में लगे हैं। ये इसलिये सफल होते हैं क्योंकि हम–तुम इनकी बातों को सच मान लेते हैं और बहकावे में आ जाते हैं। ये लालच देते हैं और हमें पतित करते हैं।

आजतक किसी ऐसे व्यक्ति को दुख सहते या हानि होते देखा है? वे सदा सुरक्षित रहते हैं। इन्हें पहचानो। अपना भला आप खुद सोचो। उन्हें चुनो जो सचमुच तुम्हारा भला करने वाले हैं। आप देखना चाहोगे तो साफ साफ दिखाई देगा। इतने सालों में आपने बहुतों को देखा है, परखा है। फिर भी धोखा खाओगे तो कोई बचानेवाला नहीं है। इन लोगों के बहकावे में नहीं आना है। जागो और सही की पहचान करो। जागो, अपनी रक्षा करो और देश की रक्षा करो। देश का हर नागरिक सजग हो जायेगा, कोई भी हमारी तरफ देखने की हिम्मत नहीं करेगा।

विजय कुमार तिवारी
(कवि, लेखक, कहानीकार,
उपन्यासकार, समीक्षक)
भुवनेश्वर, उडीसा

व्यग्र पाण्डे
माधोपुर (राजस्थान)

श्रीकृष्णं वन्दे जगद्गुरूम्

कृष्ण मुख से

हिन्दू धर्म का प्राण जो
सब दुखों का त्राण जो
पढ़ लिया धारण किया
भगवद् गीता ज्ञान जो ।१।

कृष्ण मुख से जो निकला
ऐसा अद्भुत विचार जो
योग की शिक्षा समाहित
पहुंचाती उस पार जो ।२।

कर्म ही जीवन मूल है
कहती गीता है हमारी
मोह का बंधन मिटाती
शंका करे निर्मूल सारी ।३।

गीता बताती इंद्रियों संग
चित्त-मन पर हो नियंत्रण
सार जीवन का ये ही है
कर्म से फल का निमंत्रण ।४।

पार्थ को रण क्षेत्र में जब
मोह ने तत्काल घेरा
हो विमुख कर्तव्य पथ से
करने लगा जो व्यर्थ हेरा ।५।

गांडीव रखा धरती पर जब
समझायें समझ नहीं आया
चक्षु अलौकिक दे अर्जुन को
विराट स्वरूप दिखलाया ।६।

तब रथी श्री कृष्ण ने
ज्ञान गीता का उतारा
मोह ग्रसित कौन्तेय को
दे दिया उपदेश प्यारा ।७।

वेद उपनिषद सार इसमें
धर्म का सुविचार इसमें
करने वाला मैं स्वयं हूँ
तू निमित्त का भार इसमें ।८।

इसलिए केवल कर्म कर तू
फल की आश नहीं करनी
कहा कृष्ण ने अर्जुन से यूँ
मोह पाश तुझको हरनी ।९।

धर्म गीता कर्म गीता
सच मर्म गीता ज्ञान है
जिसने ना जाना इसे
वो स्वयं से अंजान है ।१०।

नमन करता रहा जगत
इसके अपूर्व ज्ञान को
भटकने ना दे कभी जो
सुपथ से इंसान को ।११।

साक्षात कृष्ण स्वरूप गीता
जगत अमृत रूप गीता
जिसने पिया धन्य हो गया
देश धर्म प्रारूप गीता ।१२।

जब बने अवस्था जीवन में
क्या सही क्या गलत है अब
फिर बैठके पढ़ लो गीता को
असमंजस मिटे पल में तब ।१३।

गीता शास्त्रों का है सार
गीता सनातन का प्रचार
आत्म-परमात्म मिलन गीत
जीवन में लाती है सुधार ।१४।

पढ करके इसे विचार सखे
जो है सुख की आगार सखे
ये शरीर अधीरता को तज दें
फिर नहीं मृत्यु की मार सखे ।१५।

गीतानुसार आचरण तेरे
कर लेंगे कष्ट हरण तेरे
बन पार्थ और बढ़ जा आगे
रोके मत बढ़ा चरण तेरे ।१६।

श्वांस श्वांस में हो गीता
ये श्री कृष्ण नाम की संहिता
होता सफल जीवन उसका
शिक्षा पर इसकी जो जीता ।१७।

गीता जीवन का आधार सखे
कर इस पर कुछ विचार सखे
लेकर डुबकी हो ले पवित्र
हर हर गीते मन धार सखे ।१८।